मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 55 | अंक : 3 | सितम्बर, 2014 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

शिविरा, सितम्बर, 2014

चित्र समाचार

बांसवाड़ा

बालिका आत्म रक्षा योजनान्तर्गत राज.पुलिस तथा शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित पोस्टर का विमोचन करती माननीया मुख्यमंत्री।

उदयपुर

स्वाधीनता दिवस के राज्यस्तरीय समारोह में महाराणा भूपाल स्टेडियम में आत्म रक्षा का प्रदर्शन करतीं बांसवाड़ा जिले की छात्राएं।

मण्डावा (झुंझुनू)

विश्व जनसंख्या दिवस (11 जुलाई 2014) पर जागरुकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए प्रधानाचार्य।

नीम का थाना (सीकर)

पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत रा.बा.उ.मा.विद्यालय की गाइड एवं ईको क्लब प्रभारी स्टाफ व छात्राओं सहित पौधारोपण हेतु जाते हुए।

सवाई माधोपुर

रा.उ.मा. विद्यालय, सिनोली में 'बेटी पढ़ावो रे' अभियान चला कर बालिका नामांकन की प्रेरणा देता विद्यालय स्टाफ।

चूरू

लोक संस्कृति शोध संस्थान द्वारा 'सृजन से साक्षात्कार' कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री कुलदीप व्यास का अभिनंदन किया गया।

अब्राहम लिंकन का पत्र प्रधानाध्यापक के नाम

आदरणीय गुरुजी,

सभी आदमी न्यायप्रिय नहीं होते
होते नही सब सत्यनिष्ठ!
मेरा बेटा सीखेगा यह
कभी-न-कभी।
मगर उसे यह भी सिखाइए :
दुनिया में हर बदमाश की तरह
होता है एक साधुचरित पुरूषोत्तम भी।
स्वार्थी राजनैतिक होते हैं दुनिया में जैसे,
होते हैं उसी तरह पूरी जिन्दगी निछावर करने
वाले नेता भी।
होते हैं घात में बैठे दुश्मन अगर
तो मेहरबान मित्र भी होते हैं।

मैं जानता हूँ
सभी बातें झटपट नहीं सिखाते बनतीं....
फिर भी, हो सके तो उसके मन में जमाइए
'पसीना बहाकर कमाया हुआ एक पैसा भी
फोकट में मिले खजाने से ज्यादा मूल्यवान है।'
सिखाइए उसे कैसे झेलते हैं हार
और सिखाइए, जीत की खुशी में संयम।
अगर आपमें ताकत हो तो
सिखाइए उसे
ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहना।
सिखाइए उसे
अपना हर्ष भी संयम से दिखाना।

कहना, गुंडो से मत डर जाना,
क्योंकि सबसे आसान होता है
उन्हें झुकाना।

जितना बन पड़े दिखाया कीजिए उसे किताबों
में छिपा अद्भुत खजाना,
पर साथ-ही-साथ
दीजिए उसके जी को जरा फुरसत
कि सृष्टि की सनातन सुन्दरता महसूस कर पाए।
देख पाए वह

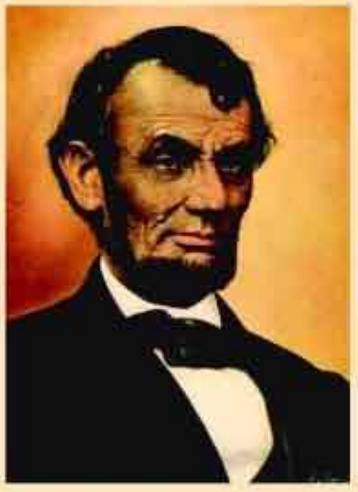

चिड़ियों की ऊँची उड़ान...
सुनहली धूप में मँडराते भौंरे...
और हरीभरी पहाड़ी की ढलान पर
झूमते नन्हें-नन्हें फूल।

पाठशाला में उसे सबक मिले:
'बेईमानी से पाई सफलता से
हजार अच्छी है
असफलता।'

यह सिखाइए कि
अपने विचारों और अपनी सूझ-बूझ पर
पक्का विश्वास रखे,
भले ही सब लोग उसे गलत ठहराएँ।
वह भलों के साथ भलाई बरते और
टेढ़ों को सबक सिखाए।

मेरे बेटे को विश्वास दीजिए कि
विजय के झंडे के नीचे खड़े होने को दौड़ती
भीड़ में
शामिल न होने का साहस जुटाए।
और यह भी समझाइए उसे
कि सुने सबकी, हर एककी....
पर छान ले उसे सत्य की चलनी में,
और छिलका फेंककर
ग्रहण करे विशुद्ध सार।

बन पड़े तो उतारिए उसके मन में:
'हँसते रहो हृदय का दुख दबाकर।'
कहिए कि आँसू बहाते शरमाए नहीं वह...
सिखाइए उसे,
ओछेपन को ओछा मानना
और चाटुकारी से सावधान रहना।

उसे पक्की-पूरी तरह समझाइए कि
खूब कमाई करे ताकत और अक्ल की लागत से,
लेकिन कभी न बेचे अपना हृदय, अपनी आत्मा।
धिक्कारती हुई आती है भीड़ अगर,
तो अनदेखा करना सिखाइए उसे,
और लिखिए उसके हृदय पर
जो सत्य जान पड़े, न्यायोचित लगे
उसकी खातिर धरती में गड़ाकर पाँव लड़ता रहे
अंत तक।

उसे ममता दीजिए मगर
लाड़ करके मत बिगाड़िए।
आग में जल-तपकर निकले बिना
लोहा मजबूत फौलाद नहीं बनता।
उसे आदत डालिए कि
अधीर होने का धीरज सँजोए,
और धीरज से काम ले वह
अगर दिखानी है बहादुरी...
हमें विश्वास चाहिए स्वयं का मजबूत
तभी जमेगी उदात्त श्रद्धा मनुष्य जाति के प्रति।

क्षमा कीजिए गुरुजी,
मैं बहुत बोल रहा हूँ,
बहुत-कुछ माँग रहा हूँ...
फिर भी देखिए... जितना बने, कीजिए जरूर।

-एब्राहम लिंकन

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity408/2014-16 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● सितम्बर, 2014 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2014 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

गौतमेश्वर महादेव

प्रतापगढ़ जिले की अरनोद उपखण्ड मुख्यालय से 3 किमी. दूर कांठल के हरिद्वार की संज्ञा प्राप्त गौतमेश्वर नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ स्थल है। यह स्थान अध्यात्म, प्रकृति और संस्कृति का त्रिवेणी संगम है। इस स्थान के प्रति श्रद्धालुओं की अनन्य आस्था है। यहां निर्मित मंदिर का अपना गौरवशाली अतीत और शिल्पगत सौन्दर्य देखते ही बनता है। गिरिगुहा में स्थित मंदिर की दिव्य आभा दृष्टि को अपलक बांध लेती है तो भीतर की अलौकिक अनुभूति से चित्तानन्द की अविरल सरिता प्रवाहित करने लगता है। यहाँ का नैसर्गिक सौन्दर्य प्रकृति और मानव के बीच अटूट रिश्ते का पाठ पढ़ाता जान पड़ता है। इस स्थान के प्रति मेवाड़, मालवा एवं वागड़ के असंख्य श्रद्धालुओं की सदियों से चली आ रही आस्था आज भी कायम है। श्रावण मास तथा प्रति वर्ष वैशाखी पूर्णिमा पर भरने वाले विशाल वार्षिक मेले में जनमेदिनी उमड़ती है। इसके अलावा वर्षपर्यन्त भी यहां तीर्थ यात्रियों की रेलमपेल बनी रहती है।

पावस काल में इस स्थान की खूबसूरती अपने चरम पर होती है। जलप्रपात से झरने वाली जलराशि से इन्द्र देवता यहां विराजमान भगवान आशुतोश का स्वयं अभिषेक करते अनुभव किये जा सकते हैं। आध्यात्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी गौतमेश्वर तीर्थ अप्रतिम है।

सौजन्य : प्रकाश पंड्या, बांसवाड़ा-327 001 मो. 9414101857

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 55 | अंक : 3 | भाद्रपद–आश्विन २०७१ | सितम्बर, 2014

प्रधान सम्पादक
ओंकार सिंह

❄

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

❄

सहायक
एस. के. सिंह
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- शिक्षा और संस्कार 5
  आलेख
- कीर्ति गुरुदेव की 6
  संग्राम सिंह सोढ़ा
- शिक्षा व शिक्षक 7
  धर्मपाल सरेल
- डॉ. राधाकृष्णन् की ऋषि दृष्टि 8
  रामनरेश सोनी
- शिक्षा राष्ट्र निर्माण की धुरी है 9
  डॉ. अशोक बिश्नोई
- तस्मै श्री गुरवे नमः 10
  सांग सिंह इन्दा
- जीवन जीने की कला है–योग 11
  रामलाल जाखड़
- साधू ऐसा चाहिए... 12
  गोपाल प्रसाद मुद्गल
- योगी अरविन्द का शिक्षा दर्शन 13
  पी.डी. सिंह
- साक्षरता विस्तार समय की सबसे बड़ी आवश्यकता : **उषा टेलर** 14
- अशुद्ध वर्तनी का बढ़ता प्रयोग 16
  उत्तम चन्द्र सागर
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका 17
  गायत्री शर्मा
- जीवन की राह 19
  करुणा श्री
- आवश्यक है जीवन मूल्यों की शिक्षा 20
  अचलचन्द जैन
- शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं है 21
  सत्य नारायण पंवार
- वैदिक ज्ञान बिना अधूरी शिक्षा 22
  विष्णु दयाल शर्मा
- सम्मान की पात्रता और शिक्षक 30
  डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता
- हिन्दी विकास में शिक्षक का योगदान 31
  वृद्धिचन्द गोठवाल
- प्राणवान शिक्षा : शिक्षक एवं समाज 32
  हरीश कुमार वर्मा
- अवचेतन मन की शक्ति का शिक्षा में उपयोग 36
  सुमन सिंह
- पहले जरूरी है संस्कार 38
  शंभूलाल अग्रवाल

हमारी सांस्कृतिक धरोहर
- कंठ प्रदेश के गौरवशाली अतीत का साक्षी : प्रतापगढ़ 34
  प्रकाश पंड्या

स्तम्भ
- शिविरा पंचांग 18
- आदेश–परिपत्र 23–29
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 43
- शाला प्रांगण से 39
- शिविरा विचार मंच 40
- पुस्तक चर्चा : ओमप्रकाश सारस्वत 44
- चतुर्दिक समाचार 48
- हमारे भामाशाह 49

इस माह का गीत
- चिंतन नहीं, चेतना है 9
  बाल स्वरूप राही

पुस्तक समीक्षा 46–47
- मेरा जुनून : मईनुदीन कोहरी
  समीक्षक : पृथ्वी राज रतनू
- मौर्य सम्राट : डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
  समीक्षक : डॉ. मदन केवलिया

प्रतिध्वनि
- शिक्षक और शिक्षक दिवस 50

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

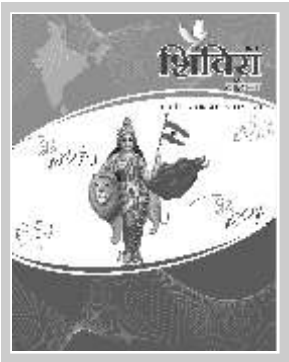

▼ चिन्तन

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।
–श्रीमद्भगवद्गीता 6/17

भावार्थ : दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

Yoga, which rids one of woe, is accomplished only by him who is regulated in diet and recreation, regulated in performing actions, and regulated in sleep and wakefulness.

पाठकों की बात

- अगस्त 14 में रजनी कुलश्रेष्ठ का डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर से शिक्षा सम्बन्धी लिया गया साक्षात्कार बहुत ही सुगठित बरबस पाठक का ध्यान खींच लेने वाला हैं इतने कम शब्दों में लेखक से सब कुछ उगलवा लेना रजनी जी की अद्भुत क्षमता का परिचायक है। सब कोई ऐसा नहीं कर सकता। उन्हें बधाई। बधाई राजेन्द्रजी को भी जिन्होंने शिक्षा प्रणाली की पीड़ा को उकेरा है श्री भवानी शंकर व्यास विनोद की समीक्षा शैली मनभावन है।

  –हरदर्शन सहगल, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार की उच्च कोटि की मासिक पत्रिका है जिसमें विभिन्न ज्ञानविद्‌ों की रचनाओं का प्रकाशन होता है जिससे शिक्षकों के ज्ञान में वृद्धि होती है। शिक्षकों को भी नई रचनाएं लिखने की अभिप्रेरणा देती हैं।

  –धर्मपाल सरेल, पुनाडिया (बाली)

- शिविरा पत्रिका का
  नाम सदा ही अमर रहे।
  जब तक सूरज चांद है जग में
  जब तक शिविरा पत्रिका रहे।
  चाहे शिक्षा हो या शिक्षण
  हर दिशा में उत्कृष्ट रहे।
  इसकी गरिमा मिटने न देंगे
  संकल्प हमारा अटल रहे।
  राष्ट्र प्रेम और मानवता की
  सद्भावना हमेशा जगाते रहे।
  शिक्षा रूपी पूजन में सदा यह
  पत्रिका सृजित रहे।
  शिविरा पत्रिका का
  नाम सदा ही अमर रहे।।

  –गायत्री शर्मा, जयपुर

- शिविरा अगस्त का अंक आद्योपान्त पढ़ा। प्रकाशित सामग्री काफी रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं उपादेय है। निदेशक महोदय द्वारा लिखित दिशाकल्प 'सा विद्या या विमुक्तये' प्रेरणादायी उद्‌बोधन है। 'नया सत्र-नई उम्मीदें-नए संकल्प' डॉ. कल्पना शर्मा, डिजिटल पाठ्यसामग्री का अनूठा खजाना : NROER हरिकृष्ण आर्य, बाल श्रमिक से सहानुभूति-रूपनारायण काबरा, लक्ष्य प्राप्ति हेतु सफलता के सूत्र-अनिल पूनिया आदि के लेख पठनीय एवं मननीय है।

  –गोगराज जोशी, फतेहपुर (सीकर)

- शिविरा पत्रिका अगस्त के मुख पृष्ठ पर सर्वोच्च देशभक्ति आह्वान, चिन्तन में सर्वोपरि गायत्री महामंत्र, प्रथम पूज्य देव श्रीगणेश, वन्दे मातरम्, भ्रूण हत्या ने लील दिया रक्षाबन्धन को व जन्माष्टमी के सरोकार के उत्कृष्ट, हृदयस्पर्शी, मार्मिक प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद।

  –ओमप्रकाश शर्मा, बिजयनगर (अजमेर)

- अगस्त 2014 का शिविरा पत्रिका का आवरण पृष्ठ 'वंदे मातरम्' के नारे के साथ तिरंगा लिये भारत माता का चित्र व शान्ति का प्रतीक उड़ता कबूतर अवसरानुकूल चयन आकर्षक लगा। दिशाकल्प में निदेशक महोदय द्वारा व्यक्तियों के चरित्र से ही राष्ट्र का चरित्र बनता है, का सन्देश व महान हॉकी खिलाड़ी ध्यानचन्द का स्मरण करना बहुत अच्छा लगा। सावरमल ओझा के द्वारा श्रीगणेश के माध्यम से प्रेरणादायी बोधकथा लक्ष्य प्राप्ति के सूत्र अनिल पूनिया व खेल-दिवस पर सुभाषचन्द्र कस्वां का आलेख ज्ञानवर्द्धक व पठनीय लगे।

  –सरदारसिह सॉन्दू, टोकरला (जालोर)

- भगवान श्री कृष्ण के जन्मदिन को शिक्षा और छात्रों के जीवन उपयोगिता के अनुरूप ढालने का बहुत ही सारगर्भित प्रयास किया है। वर्तमान में जहां अवतार व महापुरुषों के जीवन उनकी मर्यादा, उनकी शिक्षा को यदि शिक्षा और शिक्षार्थियों के साथ जोड़ दिया जावे, इसका आपने बहुत सार्थक प्रयास किया है। आप द्वारा इस प्रकार का निरन्तर प्रयास किया जाता रहा तो भारतीय शिक्षा में सूचिता आयेगी।

  –मदनलाल पुरोहित, प्र.अ., फतेहपुर

- शिविरा अगस्त 2014 के मुख पृष्ठ पर भारत माता का चित्र बड़ा ही आकर्षक प्रतीत हुआ। निदेशक महोदय का दिशाकल्प शिक्षामयी प्रेरणा से ओतप्रोत था। महर्षि अरविन्द का संदेश 'स्वाधीन भारत से अपेक्षाएं' सुन्दर प्रस्तुति थी। प्रतिध्वनि 'जन्माष्टमी के सरोकार' शिक्षाप्रद एवं प्रशंसनीय था। हर माह अंतिम पृष्ठ पर राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर से भी हमें नई जानकारी प्राप्त होती है। पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन हेतु संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई तथा उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

  –किरण व्यास, जैसलमेर

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

सत्यमेव जयते

ओंकार सिंह
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षा और संस्कार

इस माह, पाँच सितम्बर 2014 को शिक्षक दिवस है। शिक्षक दिवस महान शिक्षक, उद्भट विद्वान, मनीषि दार्शनिक एवं विख्यात राजनयिक सर्वपल्लि डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिन है। वे भारत गणतंत्र के द्वितीय राष्ट्रपति थे। एक शिक्षक का राष्ट्रपति बनना उन गुणों को मान प्रदान करना है जिनकी शिक्षक से अपेक्षा की जाती है। डॉ. राधाकृष्णन् मौलिक चिन्तक और प्रखर वक्ता थे। उनके ओजस्वी व्यक्तित्व एवं ज्ञान से दुनिया के सभी राष्ट्रों में उनका आत्मीय सम्मान था। राष्ट्र के शीर्ष पद पर आसीन होते हुए भी अपने शिक्षकीय स्वरूप को स्मरण रखना जहां उनकी महानता एवं विनम्रता का प्रतीक है, वहीं शिक्षकों के लिए गौरव का विषय है। शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर राज्य के कोने-कोने में बच्चों को शिक्षा व संस्कार सिखाने वाले शिक्षकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए मेरा अनुरोध है कि वे अपनी महान परम्परा को याद करते हुए डॉ. राधाकृष्णन् के जीवन एवं कर्म से शिक्षा ग्रहण करें।

शिक्षा का काम व्यक्ति निर्माण का है। शिक्षा संस्कार प्रदायनी होती है। इसीलिए व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि होता है। शिक्षा को प्रभावी बनाने में शिक्षकों की निर्णायक भूमिका होती है। शिक्षा विभाग को कदाचित इसीलिए मातृ विभाग कहा जाता है।

बालक के सर्वतोमुखी विकास में शिक्षक एवं विद्यालय के साथ अभिभावक एवं परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षकों एवं अभिभावकों के समन्वित प्रयासों से बालक में उत्तम संस्कारों की स्थापना कर उन्हें आदर्श व्यक्ति एवं आदर्श नागरिक बनाया जा सकता है। अभिभावकों एवं शिक्षकों की इसी भूमिका को प्रभावी बनाने के लिए विद्यालयों में अध्यापक-अभिभावक परिषदों का संचालन किया जाता है।

ग्रीष्मावकाश के पश्चात विद्यालय खुले दो माह का समय व्यतीत हो चुका है। विद्या के मन्दिर विद्यालयों में पढ़ाई के साथ खेलकूद एवं अन्य पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियों, स्काउटिंग-गाइडिंग, एन.सी.सी., एन.एस.एस. समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं समाजसेवा आदि का नियमित आयोजन न केवल विद्यालयी वातावरण को सरस बनाता है बल्कि शिक्षण-अधिगम का मार्ग प्रशस्त कर विद्यालयों एवं शिक्षकों के प्रति सकारात्मक वातावरण पैदा करता है।

पिछले 2 माह में मुझे बड़ी संख्या में शिक्षकों, अभिभावकों एवं छात्र-छात्राओं से मिलने का सौभाग्य मिला है। एक बात जो समान रूप से इन सब में मुझे दिखाई दी, वो यह है कि सभी उत्तम शिक्षा एवं संस्कार चाहते हैं। इसके लिए हमें साथ चलते हुए सार्थक प्रयास करने होंगे। मेरी अपील है कि-

1. **अभिभावक** अपने बच्चों को नियमित रूप से स्कूलों में भिजवाएं तथा घर पर भी उनकी पढ़ाई-लिखाई की तरफ ध्यान रखें।
2. **शिक्षक** अपने शिक्षण की व्यवस्थित योजना बनाकर शिक्षण कार्य करवाएं। उन्हें पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं अपितु संस्कारों की शिक्षा भी विद्यार्थीवृन्द को देनी है
3. **छात्र-छात्राओं** को चाहिए कि वे अपने गुरुजन के मार्गदर्शन में उत्तम शिक्षा ग्रहण करें। उन्हें अपने माता-पिता, गुरुजन और बड़ों की आज्ञा पालन में सदैव तत्पर रहना चाहिए। इससे उनकी ग्रहण की हुई विद्याफलदायी होगी।

शिक्षक दिवस के अवसर पर हमें सर्वपल्लि डॉ. राधाकृष्णन् के जन्म दिवस पर उनका भावपूर्ण स्मरण करते हुए आदर्श एवं उत्तरदायी नागरिक बनने का संकल्प लेना चाहिए। इसी में शिक्षकों एवं विभाग का हित निहित है।

शुभकामनाओं के साथ,

(ओंकार सिंह)

> *"शिक्षा का काम व्यक्ति निर्माण का है। शिक्षा संस्कार प्रदायनी होती है। इसीलिए व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि होता है। शिक्षा को प्रभावी बनाने में शिक्षकों की निर्णायक भूमिका होती है। शिक्षा विभाग को कदाचित इसीलिए मातृ विभाग कहा जाता है।"*

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शिक्षक दिवस विशेष

कीर्ति गुरु देव की

❒ संग्राम सिंह सोढ़ा

भारतीय संस्कृति में गुरु 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का संदेश वाहक रहा है। संसार में भटकने वाले मनुष्यों को तारने के लिए गुरु के समान बंधन नाशक तीर्थ दूसरा कोई नहीं है। इसलिए हमारी संस्कृति में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। गुरु ज्ञान-गरिमा की साक्षात प्रतिमूर्ति है। गुरु के बिना न तो ज्ञान मिलता है और न ही संसार सागर से मुक्ति। गुरु ही अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाला माध्यम है। माता-पिता जन्म दे सकते हैं किन्तु जीवन नहीं। जन्म मनुष्य की नियति है, जबकि जीवन उसके कर्तव्यों का पवित्र दस्तावेज है। गुरु वह होता है जो जीवन के गूढ़ रहस्यों का पता लगा कर उनका अनाकरण करना जानता है। मृत्यु से अमरत्व का बोध करना जानता है। मनुष्य के उचित मार्गदर्शन में गुरु की प्रभावी भूमिका रहती है। गुरु का दर्जा सर्वोपरि है। इसलिए उसे 'आचार्य देवो भव' की संज्ञा दी गई है।

गुरु ही मनुष्य को उस सोपान तक ले जाता है, जहां वह अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। गुरु की गरिमा का वर्णन 'गुरु गीता' में इस प्रकार किया गया है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःर्साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरु शब्द 'गृ' धातु से बनता है। 'गृ' का अर्थ होता है निगल लेना अर्थात जो शिष्य के पापों को निगल जाता है, वही गुरु है। गुरु वह है जो अहंकार मुक्त होकर शिष्य को तैयार करता है। स्वयं को ऋषि से मुक्त करने के भाव से ज्ञान का प्रसव करता है। पूर्ण मनोयोग से शिष्य को अपना प्रतिबिम्ब मानकर अपने प्रतिनिधि के रूप में तैयार करता है। उसको भावी जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने की दृष्टि से तैयार करता है, जीने की सामर्थ्य प्रदान करता है, भले-बुरे से भेद करना सिखाता है। ज्ञान का आलोक प्रदान करता है।

गुरु से शिक्षा मिले बिना मनुष्य अनजान है। इसी संदर्भ में लूहिया (संवत् 830 के आसपास) की यह रचना दृष्टव्य हैं-

का-आ तरुवर पंच विह्वल,
चंचल चीर पाइयो कालू।
दिअ करिअ महासुद परिमाण,
लहू भणइ-गुरु पच्छिं आजाय।

भक्त कवि मेघराज हम्मीरजी बीहू ने 'गुरु महिमा' काव्य में इसी तथ्य को यों उद्धृत किया है जो सटीक लगता है-

रवि हरत ज्यों रजनी को, त्यों गुरु हरत अज्ञान।
तन मन से सेविये, तज के गरव गुमान।।

संसार-सागर में मानवता की सांस्कृतिक धरोहर को सम्प्रेषित और उजागर का काम गुरु के बिना असंभव है। गुरु ही वह आदर्श है जो मानव को सही दिशा की ओर प्रवृत्त कर सकता है। वह गुरु से शिक्षक, शिक्षक से सखा तक अलंकृत होने वाला 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की सिद्धि की ओर अग्रसर करता है। दरअसल गुरु शिक्षा जगत का अक्षर-दर-अक्षर बहुआयामी व्यक्तित्व है। इस व्यक्तित्व के कृतित्व द्वारा हमें शिक्षा रूपी शिवत्व का सुन्दरम् पाठ सीखने को मिलता है। शिक्षार्थियों को उनकी अजेय जीवन शक्ति से भावी जीवन के लिए नई दिशाएं तलासने की राह मिलती है। गुरु ही अपनी विशद बौद्धिक सोच क्षमता के बल ही अपने सफल नेतृत्व, व्यक्तित्व, अनुभव, योग्यता तथा कार्य दक्षता के द्वारा ज्ञान गंगा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरण करने में सार्थक प्रयास ही नहीं बल्कि नरक सेतु का कार्य करता है।

आदिकाल से वर्तमान से वर्तमान तक गुरु पद की महिमा, उसके महत्व एवं उसकी गौरव-गाथाओं से हमारे शास्त्र भरे पड़े हैं। गुरु के प्रति जितना पूज्य भाव हमारे शास्त्रों में मिलता है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। हमारे नीतिकारों एवं संतों-महात्माओं ने गुरु की कीर्ति को कलमबद्ध करने का सद्प्रयास किया है, वह श्लाघनीय बन पड़ा है। इस संदर्भ में भक्ति काल की ज्ञानाश्रयी धारा के प्रवर्तक महात्मा कबीर ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को करीब से देखकर गुरु को 'गोविन्द' से भी ऊंचा स्थान दिया है-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

संत कबीर इतना ही नहीं गुरु को तीन लोक और नौ खण्डों में बड़ा बताते हुए कहते है कि 'गुरु करे सो होय' क्योंकि जिस घर में गुरु का आदर और सम्मान होता है, वहां पर हमेशा देवता निवास करते हैं। गुरु की संगत से बुरे से बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन सकता है। सच्चा गुरु ही मानव को अंधेरे से उजाले की ओर ले जा सकता है। गुरु सम्मान कोई दाता नहीं है। कबीर का यह कथन इस दृष्टि से अनुकरणीय है। वे कहते हैं-

गुरु समान दाता नहीं, जाचक सिष समान।
तीन लोक की सम्पदा, तो गुरु दीन्हा दान।।

राव लूणकरण बीकानेर कृत एक कविता में गुरु के सद्गुणों का अच्छा उल्लेख मिलता है। वे कहते है कि गुरु ने भवसागर से तरने के लिए नाव लगाई है-

गुर सो दाता नाहिं, परमगति गुर तै पाई।
भवसागर बहै जात, मुक्त की न्हाव लगाई।।

गुरु माहात्म्य के सन्दर्भ में संत लरिराम दास ने गुरु को पारस पत्थर की संज्ञा दी है। वे कहते है कि ईश्वर से साक्षात्कार करने में गुरु से विमुख होकर भले ही हरि भजो, लेकिन गुरु के बिना सफलता नहीं मिलेगी। गुरु तो अपने शिष्य को अपने जैसा बना ही देता है-

लौह पलटि कंचन भया, पारस का परताप।
जन हरिया सतगुरु करै, आप सरीखा आप।।

गुरु कृपा से मनुष्य को देवत्व प्राप्त करने में सफलता मिलती है जिससे उसका जीवन पथ अग्रसर होता है। गुरु कृपा से ही कृतज्ञता मिलती है-

बलिहारी गुरु आपने, घड़ी-घड़ी सौ बार।
मानुष से देवत कियां, करत न लागी बार।।

गुरु एक ऐसे नाविक के समान होता है, जो भयंकर तूफानों में भी शिष्य की डगमगाती जीवन नैया को खे कर संसार रूपी सागर से पार पहुंचा देता है और उस कुम्हार के समान होता है जो मिट्टी के ढेले को सुन्दर घड़े की आकृति देकर जीवनपोयगी बना देता है, तभी तो गुरु के लिए कहा जाता है कि-

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढि-गढि काढे खोट।
अन्तर हाथ सहाय दे, बाहर मारे चोट।।

गुरु हमारे अन्तर्मन को आहत किये बिना

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

हमें सभ्य जीवन जीने योग्य बनाते हैं। दुनिया को देखने का नजरिया गुरु की कृपा से मिलता है। पुरातन काल से चली आ रही आदर्श परम्परा के मुताबिक गुरु महिमा को शब्दों में लिखा नहीं जा सकता। संत कबीर गुरु महिमा को अवर्णनीय बनाते हुए कहते हैं–

सब धरती कागढ करुं, लेखनि सब बनराम।
सात समुद की मसि करु,गुरु गुन लिख्या न जाय।।

गुरु ही विद्या मंदिर के प्रांगण में श्री सरस्वती की असीम कृपा से बालकों में सम्यक ज्ञान का बीजारोपण कर अपनी कर्तव्य परायणता का भावात्मक सम्बन्ध जोड़ता है। उन्हें संस्कारवान बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। वस्तुतः गुरु की महिमा निर्वाच्य है। इस कड़ी में निम्नांकित पंक्तियां बहुत ही मार्मिक है–

सौ सौ सूरज ऊगवै, चंदा चढ़े हजार।
उतना चानण होत भी, गुरु बिन घोर अंधार।।

संसार में गुरु के समान कोई सगा नहीं होता। वह विपत्ति में जूझने की कला सीखता है। गुरु ही गुण ज्ञान का सागर होता है। उसी सागर की दो चार बूंदे बरस जाए तो मोती ही निपजते है। संत ब्रह्मदास का यह कथन पठनीय है–

गुरु सम सगा न जगत में, स्थान रतन दे सार।
दिष्टि पोख दे ब्रह्मदास, जग सूं कर ही पार।।

डॉ. सुदेश शर्मा के अनुसार गुरु एक शक्ति है। गुरु एक दर्शन है। अध्यात्म का जितना सामर्थ्य है, श्रद्धा व विश्वास एक व्यक्ति के मार्गदर्शन पर टिका है वह है गुरु।

गुरु शक्ति का वर्णन एक राजस्थानी कवि ने यों किया है–

जंगल में मंगल करै, पतझड़ करै बहार।
दुख नै सुख में बदल दें, गुरु की शक्ति अपार।।

राष्ट्रीय कवि मैथिली शरण गुप्त गुरु शक्ति के सान्निध्य में जाने की सलाह देते हुए बोल उठते हैं–

सद्गुरु को समझो सदा खोया रत्न विशाल।
पाओ तुम उसको यहां अपनाओ तत्काल।।

इसी भांति भक्त कवि ब्रह्मानन्द ने नारायणी गीता में गुरु महिमा का गुणगान करते करते हुए, नर से नारायण के रूप में उसकी प्रतिष्ठा की है। यथा–

सद्गुरु रूप अनूप रवि, पूरन अधिक प्रकाश।
प्रवाह ताहि कीना प्रकर, जन उर तिमिर विनाश।।

ऐसे पवित्र आचरण वाले गुरु की असीम कृपा–दृष्टि पाने के हमें पुर्नजन्म लेना पड़े तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस सन्दर्भ में एक गुरु के सच्चे शिष्य ने कहा भी है–

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश कटाये गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

असलियत में ऐसे सच्चे शिक्षा के सितारों पर माँ सरस्वती माँ की सदैव असीम कृपा बनी रहती है। उनकी सेवा का श्रद्धाभाव अभिनन्दनीय होता है। उनके शिक्षण में सत्यनिष्ठा और मूल्य निष्ठा निर्णायक बनती हैं और शिक्षा के विविध पक्षों को उजागर करने में चरितार्थ होती है।

आज राष्ट्र को ज्ञानवान, प्रकाशवान तथा शक्तिवान बनाने के लिये चिर प्राचीन गुरु–शिष्य परम्परा की पुनरावृति की नितान्त आवश्यकता है। सत्य निष्ठ, गुरु के बिना लोक मंगल की परिकल्पनाएं साकार नहीं की जा सकती है। 'शिक्षक दिवस' के पुनीत अवसर पर अपने शिक्षक बन्धुओं से आशा रखता हूँ कि वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में उचित सेवा का लाभ देते हुए देश की भावी पीढ़ी को पराग की भांति सुंगधित करते रहें। जो अपने आप में सेवा का सबसे बड़ा सम्मान है।

अन्त में महाकवि तुलसीदास के शब्दों में गुरु देव की कीर्ति को विराम देना उचित है–

बन्दऊ गुरु पदकंज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम कुंज, जासु बचन रविकर निकर।।

–अध्यापक, सोढाण लोक साहित्य सदन
चक सचियापुरा पो. बज्जू,
तह. कोलायत (बीकानेर)
मो. 9983181510

शिक्षा व शिक्षक

❒ धर्मपाल सरेल

सृष्टि की रचना के समय परमात्मा ने जिस श्रेष्ठ रचना का सृजन किया वह ''मनुष्य'' है। हमारे ऋषियों ने मनुष्य की श्रेष्ठता को रेखांकित करते हुए कहा कि ''न हि मानुसात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्''। विचार आता है, मनुष्य ही इस प्रकृति की श्रेष्ठ रचना क्यों हैं? क्योंकि इस विशाल ब्रह्माण्ड में विशालकाय जीव जन्तुओं, गहन वनों, पर्वतों और वृक्षों की विशाल माया के समक्ष मनुष्य ने स्वयं को श्रेष्ठता से विभूषित किया है।

मनुष्य की श्रेष्ठता के पीछे उसकी बुद्धिमता व विवेकशीलता कारणभूत रही है। अन्य जीवों में मनुष्य की भाँति देखने, सुनने, भोजन करने, उत्सर्जन करने की क्षमता जरूर है परन्तु सोचने समझने और अतीत के अनुभवों से भविष्य के निर्णय लेने की क्षमता केवल मनुष्य में हैं क्योंकि मनुष्य परमात्मा की सर्वांगपूर्ण रचना है।

इस संसार में अधिकांश लोग सुखी नही है। क्योंकि उनके पास जीवन जीने की मूलभूत सुविधाएं (रोटी,कपड़ा व मकान) नहीं है लेकिन जब ये सुविधाएं उसके पास हो फिर भी वो दुःखी होने की बात करे तो जाहिर है दुःख भौतिक नहीं मानसिक है ये स्वार्थपरता व आत्मकेन्द्रित वृत्ति है। ये एक पाशविक वृत्ति है।

मनुष्य को पाशविक वृत्ति से बचने व जीवन जीने की प्रेरणा देती है–'शिक्षा'। शिक्षा की एक बड़ी ताकत यह हैं कि इससे व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक विकास होता है। जो जीवन जीने की दृष्टि देती है।

असली शिक्षा वह जो प्रत्येक बालक व प्रत्येक व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं को निखार कर उसे उत्तम मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक गुणों से युक्त करती है। शिक्षा की प्रयोजन को लेकर स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''शिक्षा का उद्धेश्य मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना तथा मनुष्य व समाज का निर्माण करना है।''

व्यक्ति निर्माण एवं समाज व राष्ट्र की भौतिक सांस्कृतिक, नैतिक, आत्मिक उन्नति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

विद्यालय एक सजीव संस्था है जहाँ बालक के चरित्र का निर्माण होता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ शिक्षक विद्यार्थियों में रूचि जाग्रत करके उसे सजीव संस्था बना दे तो बालक वहाँ जायेगा, आत्मीयता का अनुभव करेगा। वहाँ की सृजनात्मक प्रवृत्तियों में भाग लेगा और जब वहां से निकलेगा तो वह श्रेष्ठ जीवन मूल्य व स्वस्थ मस्तिष्क लेकर निकलेगा।

शिक्षकों को चाहिए कि वे बालकों से आकर्षण बनाये रखे जिससे बालक को यह महसूस हो कि घर जैसे ही वह ऐसे स्थान पर है जहां उसके विकास की चिंता करने वाले समर्पित लोग हैं।

–अध्यापक, रा. उ.प्रा. विद्यालय
पुनाड़िया (बाली)

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

गंगा प्रदूषित हो सकती है, पर गंगोत्री को तो पवित्र रहना ही होगा। मैदानी गंगा का प्रदूषण तो देर-सवेर हो जाएगा, लेकिन यदि गंगोत्री ही ही प्रदूषित हो गई तो फिर कोई उपचार नहीं है। उद्गम की अपवित्रता तो सम्पूर्ण प्रवाह में झलकती है। पूरी काया जुड़ी रहती है इसके प्रभाव से। गंगा को यदि पवित्रता के आचरण को निभाना है तो उसकी प्रथम अनिवार्यता है गंगोत्री को पवित्र रखना, इसका अन्य कोई विकल्प नही हों सकता।

दुनिया भर के दंगे और फितूर पहले मनुष्य के मस्तिष्क में पैदा होते हैं और तब वे आकार ग्रहण करते हैं जंग के रूप में, साम्प्रदायिक तनाव के रूप में आपसी वैमनस्य के रूप में। यदि मस्तिष्क का प्रदूषण ही समाप्त हो जाए तो... तो फिर न दंगे होंगे, न फसाद, न वैमनस्य होगा, न तनाव, दुनिया अमन चैन से रहेगी।

लेकिन यक्ष प्रश्न तो अभी शेष है। मस्तिष्क पवित्र हो भी तो कैसे? महान मनीषी और दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन् ने इसके दो उपचार बताए- आध्यात्मिकता और शिक्षा। आत्मा और मस्तिष्क की पवित्रता का इससे बेहतर और कोई माध्यम नही हो सकता।

पहले आध्यात्मिकता के पक्ष को लेते हे। डॉ. राधाकृष्णन् की मान्यता थी कि कोई ऐसी शक्ति तो अवश्य है, जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नियमन करती है। यह कैसे हो सकता है कि सृष्टि बिना किसी प्रयोजन के रची गई हो।

'हमें देखना यह है कि क्या प्रकृति, इतिहास अथवा नाटक के इस पूरे परिदृश्य के पीछे-इस दृश्य जगत के पीछे कोई अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति है? क्या यह जगत अर्थपूर्ण है या मात्र निरर्थक ही है? इन सबके पीछे ईश्वर है अथ्वा वह केवल संयोग का ही खेल है?

डॉ. राधाकृष्णन् कहते है, जब मैं इस संसार को देखता हूँ तो इस विचार से बच नही सकता कि इसके पीछे एक अनंत और सनातन वैश्विक रहस्य है।'

हमारा मूल चिंतन तो मस्तिष्क की पवित्रता को लेकर है। इन्ही विचारों को आगे बढ़ाते हुए डॉ. राधाकृष्णन् इस मुद्दे पर आते है और कहते हैं, 'सृष्टि ने बहुत कष्ट सहे हैं और भरपूर संघर्ष किया है ताकि ऐसे इंसान पैदा हो सकें जो सत्य और सुंदरता की पूजा करें और जो

शिक्षक दिवस विशेष

डॉ. राधाकृष्णन् की ऋषि दृष्टि

❒ रामनरेश सोनी

अपने आदिम पशुत्व की धारा में संतोष करके ही न बैठ जाए... यद्यपि हममें बहुत कुछ ऐसी बाते है जो हमें अपने आदिम पूर्वज-पशु जगत- से विरासत में मिली है। फिर भी यह सही है कि मनुष्य ही मनुष्य है, वह पशु से भिन्न है। चाहे हमारे गुण हो या अवगुण, विस्मयाजनक ढंग से वे हमारे ही है। जो मनुष्य-समुदाय शरीर और जीवन से भी ज्यादा महत्व मस्तिष्क (मन) को देता है, वह ऊँचे धरातल पर खड़ा है। लेकिन जब तक हम मस्तिष्क को एक व्यापक भावना से नहीं लेंगे, इसका कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा। मन की इस भावना से नहीं लेंगे, इसका कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा। मन की इस भावना में सौंदर्यपरक-विकास तथा आचारगत पूर्णता दोनों ही सम्मिलित हैं जब तक मस्तिष्क को आत्मा के एकाकार के रूप में व्याख्यायित नहीं किया जाए हम सभ्यता के आदर्श तक नही पहुंच पाऐंगे।

यह सभ्यता का आदर्श आखिर क्या है? इसका लक्ष्य क्या है और यदि लक्ष्य सही भी हुए तो उनसे क्या होना जाना है, कोई रास्ता तो होना चाहिए, जिससे हम उन लक्ष्यों तक पहुंच सकें। डॉ. राधाकृष्णन् का कहना है कि 'इस लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग लम्बा और दुविधाओं से भरा हुआ है-इसे पार करने के लिए पहले तो हमें नागरिक गुणों की राह से गुजरना होगा, और तब चिंतन का वह पथ आएगा, जो दिव्यता की ओर ले जाता है।'

इसके लिए कष्ट सहना ही होगा। जीवन कोई सुख की शैया तो नहीं है कि आराम करते चले जाएं। कष्ट सहकर ही कोई कुंदन बन सकता है। कष्ट की यह परिसीमा डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार इस प्रकार है; पीड़ा जीवन की कोई ऐसी सहचरी नहीं है, जिसे मात्र संयोग कह दिया जाए। सच बात तो यह है कि जीवन के केन्द्र में है। सारी उच्च उपलब्धियां पीड़ा एवं वेदनाओं में ही निहित रहती है। जीवन का लक्ष्य प्रेय नहीं श्रेय होना चाहिए। जीवन का आनंद और जीवनानंद एक ही शब्द नहीं है। यदि पीड़ा हमें अपने आदर्शो की सम्पूर्ति की ओर ले जाती है। तो उसमें उतनी ही खुशी मिलती है जितनी आनंदमय जीवन में मिला करती है। गहन से गहन पीड़ा की खुशी के साथ सहन किया जा सकता है यदि ऐसा मान लिया जाए कि वह हमारे आदर्शों की पूर्ति में सहायक होगी।

और अब शिक्षा की ओर आया जाए। शिक्षा के शीर्ष में है विश्वविद्यालय। डॉ. राधाकृष्णन् का मानना है कि विश्वविद्यालय वे माध्यम हैं, जिनके जरिये किसी देश की परम्पराएं (बौद्धिक, कलात्मक व चारित्रिक) एवं तकनीकी कौशल एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाये जा सकते हैं। इस माध्यम को जीवन्त और गतिशील बनाए रखना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि 'विश्वविद्यालय अनिवार्यतः प्राध्यापकों व छात्रों का मिलाजुला निगम होता है।' दोनों के आपसी संबंध चरित्र की पवित्रता के होने चाहिए। जिस प्रकार की शिक्षा हम अपने युवकों को देना चाहते हैं उसका निर्धारण पूरी तरह से इस बात पर निर्भर होगा कि शिक्षकों के रूप में कैसे स्त्री-पुरुषों को प्राप्त कर पाते हैं।

पवित्रता के संदर्भ को एक बार फिर से उठाये। डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार 'यदि आज संकटपूर्ण स्थिति में है और लोग एक-दूसरे से भयभीत है तो इसका कारण वह नहीं है कि भौतिक सम्पदा की या उच्च बौद्धिक शक्ति की कमी आ गई है, बल्कि यह है कि हममें वह सम्बल नहीं है, यह सन्तुलन और निर्णय शक्ति नहीं है कि हम सही अथवा गलत में अंतर कर सके।' गलत से हमें सही की ओर जाना है, अंधकार से प्रकाश की ओर, तथा इस क्रम में दो ही चीजें जरूरी हैं-एक मनुष्य की आत्मिक व आध्यात्मिक शक्ति और दूसरी सही शिक्षा प्रणाली। क्या हम डॉ. राधाकृष्णन् के इन विचारों के साथ न्याय कर सकेंगे और इन दोनों को प्रदूषण से बचा सकेंगे?

-जेल रोड, बीकानेर
मो. 9413939133

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

चिन्तन

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की धुरी है

❒ डॉ. अशोक बिश्नोई

शिक्षा राष्ट्र-निर्माण की धूरी है । देश को आज उच्च कोटि के शिक्षक, वैज्ञानिक, विचारक, तकनीशियन, अर्थशास्त्री चाहिए। यह लक्ष्य तभी प्राप्त हो सकता है जब बालकों की शिक्षा पर उचित ध्यान दिया जाये। अनेक प्रतिभाशाली लोग समाज के निर्धन वर्ग से आये है। अत: शिक्षा पर त्याग किया गया धन कभी घाटे का सौदा नहीं होता।

आधुनिक प्रतिस्पर्धा एवं वैश्वीकरण के युग में विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व को सुनिश्चित दिशा प्रदान करने वाले कुशल शिक्षकों की महत्ती आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति का सबसे उत्तम माध्यम विद्यालय में ही बालकों के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कुशल शिक्षकों के द्वारा बालकों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया जाता है।

हॉल्पिन तथा क्राट के अनुसार विद्यालय एक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रणाली है, इस प्रणाली में व्यक्ति (शिक्षक व प्रधानाध्यापक) परस्पर व्यवहार करते हैं। इनके व्यवहारों के अनुरूप विद्यालयी संगठन अनेक प्रकार के पर्यावरणों को जन्म देती है। इस पर्यावरण का प्रभाव विद्यालय की विशेषता के अनुरूप विद्यालय की गुणवत्ता, उपलब्धियों शैक्षिक व सहशैक्षिक कार्यकलापों, शिक्षकों के उद्देश्यों, शिक्षक-शिक्षार्थियों के मनोबल आदि पर असर पड़ता हैं।

अर्थात् हम कह सकते हैं कि विद्यालय एक ऐसी जगह है जहां बालकों को ऐसी शिक्षा उपलब्ध करवायी जाती है जो उनके भविष्य निर्माण से सम्बन्धित सभी उद्देश्यों को पूरा करने में निष्फल हो तो इस स्थिति में बालक इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अन्य साधनों की सहायता लेते हैं।

बालकों के सर्वांगीण विकास में उत्तम एवं सागरगर्भित शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा का सामान्य अर्थ-मानव को व्यवहार अर्जन करने में सहायता करना व संशोधन सदैव समाज की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं के अनुरूप किया जाता है। शिक्षा एवं समाज में घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और परिस्थितियों में अनवरत परिवर्तन होता रहता है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा पर पडता है। फलत: शिक्षा में परिवर्तनीय शैक्षिक आयामों को समाहित करना अपेक्षित है।

विदित है कि शिक्षा में परिवर्तन का मुख्य आधार 'शिक्षाक्रम/पाठ्यक्रम' में परिवर्तन होना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अनुशंसाओं में विद्यार्थियों का चहुंमुखी दिशा में सर्वांगीण विकास किया जाना वांछनीय हैं।

महात्मा गांधी के शब्दों में-'शिक्षा से तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण से हैं।'अर्थात् शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा विकास एवं सफलता के चर्मशिखर तक पहुंचा जा सकता है। शिक्षा ही व्यक्तियों को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। अत: विद्यालयी शिक्षा ऐसी हो जो विद्यार्थियों में रुचि पैदा कर सके एवं उनकी आवश्यकताओं एवं कठिन विषयों में आने वाली समस्याओं के प्रयोगात्मक आधार पर निवारण करने वाली हो ताकि विद्यार्थियों को अपनी समस्या निवारण हेतु अन्य विकल्प न तलाशने पड़े।

-प्राचार्य, डी.ए.वी. टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, रायसिंहनगर, श्री गंगानगर
मो. 9783920950

इस माह का गीत

चिंतन नहीं, चेतना है

❒ बाल स्वरूप राही

मेरी कविता में चिंतन नहीं, चेतना है।

जीवन-सागर का ओर-छोर मालूम नहीं
ले जाय कहां कोई हिलोर मालूम नहीं
मुझ को न ज्ञान कब मुरझा जाएगी रजनी
कब उग आएगी शुभ्र भोर मालूम नहीं

मैं मांझी हूं हर डगमग नाव बचाता हूं
हर थकी बांह को सहलाता दुलराता हूं

मुझ से इतिहास न पूछो गत-आगत का तुम
मेरी रचना में दर्शन नहीं, प्रेरणा है।

मेरी कविता में चिंतन नहीं, चेतना है।

मैं अश्रु बहाने को अभिशाप समझता हूँ
जीते-जी मर जाने को पाप समझता हूं
गीला-गीला आंचल, लोचन की कोर सजल
इन को न दर्द की केवल माप समझता हूं

सूने सूने दृग, कस कर भीचे हुए अधर
क्या नहीं कर दिया करते उर की पीर मुखर?

बिखराता नहीं संजोता हूं मैं पीड़ा को
मेरे गीतों में रोदन नहीं, वंदना है।

मैं आने वाली नई भोर का आराधक
मैं नई मान्यताओं, युग-सत्यों का गायक
मैं नई पौध का एक उभरता अंकुर जो
उग आया तोड़ शिला का पाषाणी मस्तक।

मेरी प्रतिभा मिट्टी को स्वर्ण बनाती है,
गाया करता मधुमास, जहां वह गाती है

मुझ को अपने ऊपर केवल अभिमान यही
मेरा अवलम्बन साधन नहीं, साधना है।

मेरी कविता में चिंतन नहीं, चेतना है।

(युग ध्वनि से साभार)

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शिक्षक दिवस विशेष

तस्मै श्री गुरवे नमः

❒ सांग सिंह इन्दा

गुरुब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

भारतीय संस्कृति का मूलभूत आधार गुरु या शिक्षक ही रहा है। आदिकाव्य रामायण में गुरु वाल्मीकि अपने आश्रम में लव कुश के साथ-साथ आश्रम में रहने वाले बच्चों को सुसंस्कारों की शिक्षा दिया करते थे। महाभारत में गुरु द्रोणाचार्य राजवंश के जातकों (राजकुमारों को) अस्त्र व शस्त्र विद्या सिखाते थे। गुरु सांदीपनि के आश्रम में श्री कृष्ण व सुदामा शिक्षा ग्रहण करते थे। इन पुराने उद्धरणों से यह आभास होता है कि भारतीय सभ्यता व संस्कृति के विकास में गुरु की अत्यन्त ही महती भूमिका रही है। यही गुरुपद धीरे-धीरे कालान्तर में वर्तमान युग में शिक्षक बन गया है। जैसा कि गुरु के बारे में कहा गया है-

आज्ञामूलं गुरुर्वाक्यं, पूजामूलं गुरुर्पदं।
ध्यानमूलं गुरुमूर्तिं मोक्षमूलं गुरुर्कृपा।।

हिन्दी में भी गुरु के बारे में कहा गया है-

गुरु गोविन्द दोनो खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

इस प्रकार विचार करते हुए जब वर्तमान परिस्थिति पर विचार करते हैं तो एक आदर्श शिक्षक के बारे में विचार करें तो यह प्रश्न मन में उठता है कि एक अच्छे शिक्षक में क्या-क्या गुण या विशेषताएं होनी चाहिए जो इस प्रकार है-

शिक्षक स्वयं विद्यार्थी बना रहे : जो स्वयं अपने ज्ञान का परिमार्जन करता रहता है वही एक अच्छा शिक्षक बन सकता है जो शिक्षक स्वयं ज्ञान की भूख मिटाने के लिए नित्य पुस्तके पढ़ने, अध्यवसाय व स्वाध्याय करता रहता है और उस ज्ञान को अपने भक्तों (शिष्यों) में बाँटता रहता है।

स्वतंत्र विचार वाला हो : शिक्षक अपने शिष्यों को सीमित दायरों से बाहर निकाल खुलीं हवा में जीना सिखायें। शिक्षक अपने नवीन विचारों से अवगत कराने के साथ-साथ उनके विचारों का भी सम्मान करें तथा उनको शिक्षण कार्य की सीमाओं में न बाँधकर सर्वांगीण विकास में सहायता करें।

नवीन शिक्षण विधियों में पारंगत हो : अच्छा शिक्षक पुरानी शिक्षण विधियाँ जो इस समय उतनी कारगर नही है उनका परित्याग करते हुए छात्रों के लिए रुचिकर, आनन्दप्रद, समयानुकूल, सरल व सरस तकनीक से शिक्षण करावें जो अधिक प्रभावी व कारगर होगा।

हर समय मदद के लिए उपलब्ध रहे : एक अच्छा शिक्षक अपने शिष्यों की समस्याओं के निदान के लिए जब भी उनको आवश्यकता हो तो उनके लिए समय प्रदान कर उनकी सहयता के लिए तत्पर रहे।

छात्रों का सर्वांगीण विकास : शिक्षक को छात्रों के नैतिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, चारित्रिक व भौतिक विकास में मदद करने का भी जज्बा होना चाहिए। एक अच्छे शिक्षक को केवल पाठ्य वस्तु का ही ज्ञान नहीं करवाना चाहिए अपितु छात्रों के नैतिक विकास के लिए नीतिपरक, ज्ञानवर्द्धक, रुचि प्रदत, संस्कार प्रदत, कथाएं व कहानियों के माध्यम से योगदान देने वाला हो।

"Healthy mind lives in healthy body" की बात को ध्यान में रखते हुए खेल के प्रति रुचि पैदा करें व उनके लिए समाज के भामाशाहों का सहयोग लेते हुए खेल सामग्री जुटाने में उनका सहयोग करावें तथा उनके साथ स्वयं भाग लेकर उनका उत्सावर्द्धन करे, जिससे उनके खेल में निखार आ सके तथा निरन्तर आगे बढ़ते रहें। गरीब तबके के बच्चों को आर्थिक सम्बल प्रदान करने में सहयोग करें।

अनुशासन प्रिय : शिक्षक स्वयं समय का पाबन्द, कर्म को ही पूजा समझ करना, छात्रों को देवता मानने वाला, कर्तव्यनिष्ठ, उदार, सहिष्णु, उच्चनैतिक आदर्शों वाला, परपीड़ा को समझने वाला व उच्च मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए

व्यसनमुक्त : एक अच्छा शिक्षक बुरी आदतों से पूर्णतया मुक्त, सदाचारी, सुशील, चरित्रवान, उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करने वाला, छात्र हित में रत तथा ज्ञानवान होना चाहिए।

सादाजीवन-उच्च विचार : सच्चा शिक्षक, हमेशा सीधी व सरल जिन्दगी जीने वाला, मानवीय मूल्यों में निष्ठा रखने वाला, भौतिक चकाचौंध से दूर, इन्द्रिय निग्रही, स्थिर मनोवृत्ति युक्त, समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला हो।

परोपकारी : अच्छा शिक्षक स्वार्थी न होकर परमार्थी होता है उसका लक्ष्य हमेशा व्यष्टि न होकर समष्टि कल्याण होता है।

परोपकारायः बहन्ति नद्यः,
परोपकाराय र्दुहन्ति गावः।
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः,
परोपकाराय सत्तां विभूतयः।।

ऐसी ही बात पुराणों के विषय में कही गई है-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम्।।

इस प्रकार अच्छे शिक्षक का मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण लक्ष्य विद्यार्थी कल्याण, समाज कल्याण व विश्व कल्याण होता है। वह ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना से होता है ओतप्रोत।

अहिंसा को प्रोत्साहित करना : आज की परिस्थितियों में चारों तरफ घर-परिवार, देश-समाज व विश्व स्तर पर हिंसा ताण्डव मचा रही है। विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय तथा अन्य शिक्षण संस्थान जो ज्ञान के आगार है। हिंसक वातावरण से दहक रहे है। ऐसी स्थिति में केवल एक शिक्षक ही है जो अपने शिष्यों में शैशवावस्था से अपने आचरण व कृतित्व द्वारा यह भाव भर सकता है। इस समाज व देश में सभी को बराबर का हक है। यहाँ न कोई व्यक्ति व समाज बड़ा है न छोटा है। सभी धर्म बराबर है। योग्यता की कद्र करने वाला

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

होना चाहिए। हिंसा को निरूत्साहित करने वाला हो।

कथनी व करनी एक हो : छात्र अपने गुरुजी या शिक्षक की छोटी से छोटी बात या आचरण का सूक्ष्मता से निरीक्षण करता है और उसी के अनुसार अपने को ढालता है। गुरुजी का व्यवहार शान्त, सहनशील, सहृदय, उच्च मानव मूल्यों का धारणकर्ता, समाज व राष्ट्र का भावी पथ प्रदर्शक व राष्ट्र निर्माता होना चाहिए।

एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो अपने शिष्यों की आँखों में स्वर्णिम सपना जगाने वाला हो और सपने भी ऐसे दिखाये जो शिष्यों को सोने न दे जब तक वे सपने सच में न बदल जाए उस शिक्षक द्वारा पढ़ाई कर बच्चे बड़े हो विश्व कल्याण की कामना करते हैं–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुः मा कश्चिद् दुःख भाग्येवत्।।

इस प्रकार के गुरु के शिष्य हमेशा अपने गुरु के आदर्शों पर चलते हुए उनके सपनों को साकार करते हुए देश, समाज व जनकल्याण के लिए नये आयाम स्थापित करते हैं तथा अपने गुरु का नाम रोशन करते हैं। शिक्षक का शिक्षकत्व तभी सफल है जब उसके द्वारा शिक्षित उसके शिष्य विज्ञान तकनीकी शिक्षा में पारंगत बने। वे अपने देश व समाज का, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, भौतिक व सर्वांगीण विकास करें।

सार रूप में यह कहा जा सकता है एक अच्छा शिक्षक, एक अच्छा गुरु व अभिभावक भी होता हैं । जैसे मोरिया मोन्तेस्सोरी और उनसे ही प्रेरणा लेकर गुजरात के अमर शिक्षक गजुभाई बछेका। यह कहा जा सकता है कि इंजीनियर द्वारा भी की गई गलती को सुधारा जा सकता है, एक डॉक्टर द्वारा हुई गलती को भी सुधारा जा सकता है। परन्तु एक शिक्षक द्वारा की गई गलती को व्यक्ति, परिवार, देश व समाज तथा राष्ट्र कई पीढ़ियों तक भुगतता है। अतः शिक्षक ऐसा हो जो उच्च चारित्रिक गुणों से युक्त, मानवीय संवेदनाओं से युक्त, विश्वव्यापी दृष्टिकोण वाला, एकाग्रचित स्तत अध्ययनशील, मननशील, सदाचारी, सत्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, ज्ञान पीपासु व आदर्श पात्र होना चाहिए।

–सहा. निदेशक (वरिष्ठता एवं नियम),
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर
मो. 9461879679

स्वास्थ्य शिक्षा

जीवन जीने की कला है-योग

❒ **रामलाल जाखड़**

आज व्यक्ति भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर दौड़ रहा है। इस भौतिकवादी युग में सबका ध्यान आर्थिक पक्ष की ओर अधिक है। हम हमारे शरीर और स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। आज का जीवन मशीनी, आपाधापी, कुण्ठा, उलझन, ईर्ष्या–द्वेष, कलह–कटुता से भरा हुआ है। हमारा जीवन अनियमितताओं से घिरा हुआ है। अनियमितता जीवी व्यक्ति के पास न तो संयम है, न सहनशक्ति और न ही शान्ति व धर्म है।

संघर्षपूर्ण जीवन के कारण मानसिक अशान्ति, तनाव, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, यौन कुण्ठा, शारीरिक दुर्बलता आदि अनेकों व्यक्तियों से व्यक्ति घिरा हुआ है।

मानव समाज जिस तनाव, अशांति, आतंकवाद, अभाव एवं अज्ञान का शिकार है, उसका समाधान केवल योग के पास है। योग एक पूर्ण विज्ञान है, एक पूर्ण जीवनशैली है, एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। योग भारत की अति प्राचीन एवं सुप्रसिद्ध पद्धति है। ऋषि–मुनियों ने बहुत खोज–बीन, चिन्तन–मंथन करके इसका विकास किया था। यह आत्मज्ञान प्राप्ति का महान साधन माना गया है। योग मानव–मात्र को आजीवन स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल, उर्जावान, रूपवान, गुणवान, ज्ञानवान, धर्मवान व चरित्रवान बनाये रखने का सबसे उत्तम साधन है।

आज सभी व्यक्ति सुख व शान्ति चाहते हैं, लेकिन सही रास्ते से भटक रहे हैं। यदि हम लोग वास्तव में शान्ति स्थापित करना चाहते हैं तो इसका एकमात्र साधन महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग का पालन है। अष्टांग योग के द्वारा ही वैयक्तिक व सामाजिक समरसता हो सकती है। अष्टांग योग का सामान्य विवेचन–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि ये महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग के आठ अंग हैं। इनका विवरण इस प्रकार है–

1. **यम** : जिनके अनुष्ठान से इन्द्रियों एवं मन को अशुभ भावों से हटाकर आत्म केन्द्रित किया जाता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह में पांच यम है।
2. **नियम** : शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्राणिधान ये पांच नियम हैं।
3. **आसन** : साधक को जप, उपासना, ध्यान व प्राणायाम करने के लिए पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन आदि किसी भी आसन में बैठना आसन कहलाता है।
4. **प्राणायाम** : श्वास–प्रश्वास की गति को नियन्त्रित करना प्राणायाम कहलाता है।
5. **प्रत्याहार** : विषयों से विमुख होकर मन तथा इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करना ही प्रत्याहार है।
6. **धारणा** : मन को एकाग्र करना ही धारणा है।
7. **ध्यान** : मन को एकाग्र करके चित्त को लीन करना अर्थात् ध्यान के समय ईश्वर के अलावा अन्य विषय का स्मरण नहीं करना बल्कि अन्तर्यामी ब्रह्म के स्वरूप में मग्न हो जाना व एक बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित करना ध्यान कहलाता है।
8. **समाधि** : चित्त लीन करके समाधिस्थ हो जाना, समाधिस्थ होने वाला व्यक्ति अपने स्वरूप से शून्य जैसा होता है, तब उसे समाधि कहते हैं।

यह अष्टांग योग केवल योगियों के लिए ही नहीं, अपितु जो भी व्यक्ति जीवन में सुखी रहना चाहता है, उसे अष्टांग योग का पालन करना चाहिए। हमारे बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालयों में प्रार्थना सभा को समय व स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के कालांशों में अष्टांग योग के बारे में बताना चाहिए एवं बच्चों को नियमित रूप से प्राणायाम व आसन का अभ्यास करवाना चाहिए।

–शारीरिक शिक्षक
राजकीय सोनी उ.प्रा. विद्यालय
सरदारशहर (चूरू)–331403

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

चिन्तन

साधू ऐसा चाहिए....

❒ गोपाल प्रसाद मुद्गल

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुमाय।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय।।

यह एक साखी है। महात्मा कबीर की साखी। आमजन के लिए है। शिक्षक के लिए भी है। शिक्षक के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी है। इस सन्दर्भ में एक लोककथा याद आ रही है।

एक गाँव में भयंकर साँप था। आए दिन किसी न किसी को काट लेता। लोग उसे दूध पिलाते। नाग पंचमी पर उसकी पूजा भी करते। एक दिन एक महात्मा उधर होकर गुजरे। उसने गाँव वालों की कथा-व्यथा सुनी। महात्मा को दया आ गई। उसने सर्प देवता को समझाया। महात्मा की बात उसकी समझ में आ गई। उसने काटना छोड़ दिया। अब क्या था सभी निर्द्वन्द्व हो गए। सभी की समझ में आ गया कि साँप अब किसी से कुछ नहीं कहता। अतः कोई भी आता, साँप को भला-बुरा कह जाता। यहाँ तक बात रहती तो भी सर्प झेल-काटता यानी सह लेता। अब तो कोई हाथ से नौच जाता। कोई लात तक चला जाता। कहने का मतलब है कि साँप को कई यातनाएँ झेलनी पड़ी। सच मानो साँप घायल हो गया। तन से भी और मन से भी। पर वह वचनबद्ध था।

एक दिन अचानक वही महात्मा उधर होकर गुजरे। उन्होंने सर्प देवता से उसका मिजाज पूछा। साँप तो महात्मा के प्रतीक्षा में ही था। उसने अपने दिल का दर्द उड़ेल दिया। अपनी व्यथा रो-रोकर सुना ही दी। महात्मा भी दुःखी हुए। उन्होंने कहा, ''अरे भाई, मैंने काटने के लिए ही तो मना किया था किन्तु तुमने तो फुंकार मारना ही छोड़ दिया। तुमने तत्त्व को नहीं समझा। सार को ग्रहण नहीं किया। अतः ऐसा होना स्वाभाविक था।'' खैर महात्मा दूसरा मंत्र देकर चले गए।

सर्प की समझ में आ गई। उसने तत्त्व को जान लिया। उसकी चेतना जाग गई। उसने पुनः अपना रूप बदल लिया। कोई भी गाँव का उधर आता तो दूर से ही अपना फन उठा लेता। जैसे-जैसे कोई पास आता वह फुंकार मारने लगता। उसकी फुंकार सुनकर लोग सजग हो गए। कन्नी काटने लगे। पास तक आने से घबराने लगे। साँप की फिर पूजा बढ़ गई। ''भय बिन प्रीति न होय गुसाँई।'' उक्ति सार्थक होने लगी।

उक्त लोक कथा के माध्यम से यह कहना चाहता हूँ कि राज्य आदेश का दंड विधान सही था। उसकी पालना जरुरी थी। गुरु वर्ग का दंड विधान हद्द पार कर गया था। बच्चों के लिए असह्य था। दंड अंग-भंग और मृत्यु तक पहुँच गया था, जो निंदनीय था। यातनाओं से भयभीत छात्र वर्ग कराह उठा था किन्तु गुरु वर्ग ने सार को ग्रहण नहीं किया केवल शाब्दिक अर्थ को ही पकड़ा। उसने अपने हाथ का बेंत-डंडा फेंक दिया। थप्पड़-लात, छोड़ दिए। मुर्गा बनाना बंद कर दिया। इसी तरह के अन्य विधानों को छोड़ भी दिया। अच्छा किया। छात्र वर्ग को राहत मिली, किन्तु गुरु वर्ग ने अपनी वाणी का उपयोग करना भी छोड़ दिया।

वाणी का सदुपयोग करना तो बहुत जरूरी था। अति लाड़-प्यार से घर में जैसे बालक बिगड़ते हैं उसी प्रकार शालाओं के बच्चों पर प्रभाव पड़ा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण शाला के अन्दर और बाहर देखा जा सकता है-

शालाओं में हो गए सब अनुशासन हीन।
ना कोई इनका धरम, ना है कोई दीन।।

फल इसका स्पष्ट दिखाई दे रहा है। कक्षा 9 तक छात्र दनादन आगे बढ़ रहे है। स्कूल के ग्राफ ऊँचे चढ़ रहे हैं किन्तु गाँधीजी के शब्दों में We are progressing of course, but we can not say weather we are progessing towards heaven or hell. हाँ कक्षा 10 का बोर्ड का परिणाम आँखें खोल रहा है। किसी किसी विद्यालय का इस वर्ष का 0 प्रतिशत परिणाम पूरी-पूरी पोल खोल रहा है। किसी-किसी विद्यालय का पाँच वर्ष का 0 प्रतिशत बोर्ड परिणाम सोचने को मजबूर कर रहा है।

आओ हम मिल जुल करें, सभी सुमंगल काम।
सद्वाणी उपयोग से, दें अच्छे परिणाम।।

मेरा अच्छे परिणाम से तात्पर्य केवल बोर्ड के परीक्षा परिणाम तक सीमित नहीं है। मेरा मतलब नई पीढ़ी को मजबूती देने से है। नई पीढ़ी के निर्माण में योगदान से है। नई पीढ़ी के चहुँमुखी विकास से है। नई पीढ़ी को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर खड़ा करने से है। शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से खेल के मैदान में भी और बौद्धिक क्षेत्र में भी। यह तभी संभव है जब शिक्षक वर्ग सोचे-समझे-सम्भले। केवल शाब्दिक अर्थ तक न रह जाए। हर कानून के मर्म को समझें। सार को समझे।

मिलजुल कर मन से करे, काम सभी दिनरात।
अच्छे दिन आ जाएँगे, बन जाएगी बात।।

अभी-अभी की बात है। फुटबाल के मैदान में जर्मनी के खिलाड़ियों ने जान लगायी। एक जुट होकर खेलों में चौथी बार बाजी मार ली। उन्होंने बाजी तो मारी मगर इतिहास कहता है कि उन्होंने कोच का प्यार भी पाया और आँखे भी देखी। तब कही जाकर जर्मनी अखबारों में छपी। इसी तरह हर विद्यालय यह सीख ले। सबका मतव्य एक हो, सबका लक्ष्य एक हो। गरमी पड़ रही है। लुएँ चल रही है। या सरदी पड़ रही है किन्तु अपने विद्यालय को मंजिल पर पहुँचाना है तो निश्चय सफलता मिलेगी। यदि विद्यालय के छह टापरों में से एक भी टापर बिगड़ा तो गाड़ी नहीं चलेगी। गाड़ी नहीं चलेगी तो मंजिल भी नहीं मिलेगी। यदि मलूकादास को आराध्य बनाया तो कही के न रहेंगे। कहा है-

अजगर करे न चाकरी, पंछी करें न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

अतः हम सभी शिक्षकों को अपने-अपने विद्यालय को सँवारने के लिए ''कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' मंत्र को भी सीखना है। ''सबका सुहित सुमंगत सबका'' भावना भी रखनी है। मधुमक्खी की तरह, सार-सार को ग्रहण भी करना है। अपने मनीषियों के प्राप्त वाम्यों का अभिप्राय भी समझना है। तभी शिक्षक की सफलता है तभी शिक्षक की सार्थकता है।

पाण्डेय मौहल्ला, डीग (भरतपुर)
मो. 9414973412

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शिक्षा दर्शन

योगी अरविन्द का शिक्षा दर्शन

❒ पी.डी. सिंह

योगीराज अरविन्द एक ऐसे शिक्षा दार्शनिक थे जिनका दर्शन पूर्वी एवं पाश्चात्य संस्कृतियों के समन्वय की कड़ी है। अधिकांश भारतीय एवं विदेशी दार्शनिकों ने उनके विचारों को समझा और स्वीकारा। योगी अरविन्द के दर्शन की समग्र अभिव्यक्ति पांडीचेरी आश्रम में स्पष्टतः दृष्टव्य है। शिक्षा के नियामकों ने इस सिद्धान्त को माना परन्तु इसकी क्रियान्विति उस भाव, भावना एवं निष्ठा के साथ नहीं हुई जो आवश्यक थी अतः इसका विशिष्ट प्रभाव हमारी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई।

श्री अरविन्द के मतानुसार बालक की शिक्षा का लक्ष्य उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली, सर्वाधिक अंतरंग और जीवनसंपूरित है, उसे अभिव्यक्त करना होना चाहिये। सम्यक विकास हेतु अंतरंग गुण व शक्ति के अनुसार ही विकास की गति होनी चाहिए। इस प्रकार शिक्षा का प्रथम उद्देश्य आत्म शिक्षा अर्थात् स्वयं को शिक्षित करना है। इस प्रक्रिया में शिक्षार्थी अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु शिक्षकों, विद्यालयों एवं पुस्तकों का प्रयोग करता है।

सही व सक्षम शिक्षक शिक्षार्थी को एक ऐसे मार्ग पर ले आता है जहाँ बालक की आन्तरिक प्रकृति ही उसका पथ प्रदर्शन करती है। यहां जिक्र है 'मैन मेकिंग' शिक्षा का अर्थात् मानवीय गुणों के उद्दीपन एवं विकास का न कि मात्र पाठ्य पुस्तकों, परीक्षा एवं प्रमाण-पत्र मात्र का। शिक्षा में प्रेम का स्थान सर्वोपरि होना चाहिए। बालक से प्रेम करके उसे जितना पढ़ाया-समझाया जा सकता है; उससे अधिक का और कोई स्रोत हो नहीं सकता।

श्री अरविन्द की मान्यता है कि 'मस्तिष्क को ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता जो जीव की आत्मा के अनावरण में सुप्तज्ञान के रूप में पहले से ही मौजूद न हो, जैसे कि नीम के बीज में अन्तर्निहित नीम के स्थान पर उसे बबूल या बड़ बनाये जाने की क्रिया अव्यावहारिक एवं निष्फल होगी। शिक्षा का आधार है मानव मस्तिष्क, आवेग-संवेग तथा शिशु, किशोर एवं वयस्क का अध्ययन।

व्यक्तिनिष्ठ होने के साथ ही शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया भी है। समाज के सम्पर्क में बालक स्वतः ही काफी कुछ सीख जाता है। श्री अरविन्द की शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य व्यक्ति और समाज की दैवी पूर्णता प्राप्त करना है। शिक्षा का लक्ष्य ऐसी सर्वांगपूर्णता प्राप्त करना है जिसमें वह केवल एक व्यक्ति के रूप में ही नहीं अपितु समाज परिवार व राष्ट्र के सदस्य के रूप में भी विकसित होता है।

उनका शिक्षादर्शन निम्न मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित है। सर्वप्रथम बालक को स्वयं को जानना और विकसित होना है शिक्षक केवल सहायक होता है, वह केवल निर्देशन और सहायता करता है। दूसरी बात यह है कि शिक्षा शिक्षार्थी की विशिष्ट प्रकृति के अनुरूप होनी चाहिए। तीसरा सिद्धान्त है निकट से दूर की ओर तथा वर्तमान से भविष्य की ओर चलना है। इस प्रकार विद्यालय के पाठयक्रम, माध्यम, सामान्य वातावरण सभी कुछ शिक्षार्थी के लिये स्वाभाविक होना चाहिए। केवल शिक्षा का आदर्श ही नहीं अपितु उसका स्वरूप भी 'स्वदेशी' होना चाहिए।

शिक्षा राष्ट्र भाषा के माध्यम से ही होनी चाहिए। श्री अरविन्द मातृभाषा को ही बालक की शिक्षा का उपयुक्त माध्यम मानते हैं। मातृभाषा के माध्यम से बालक अपने देश की संस्कृति, साहित्य और इतिहास का परिचय प्राप्त करता है। इससे उसे अपने चारों ओर के जीवन को सहज में समझने की सहायता मिलती है। मातृभाषा पर अधिकार होने पर ही अन्य भाषाएं सिखाई जानी चाहिये। मातृभाषा से बच्चों का लगाव होना आवश्यक है।

श्री अरविन्द सक्रियता से सीखने के साथ ही निष्क्रियता से सीखने पर भी बल देते हैं। बालक को अपने मन को सक्रिय करने के साथ-साथ निष्क्रिय करने का भी अभ्यास करना चाहिये। अध्यापन का प्रथम चरण है-रुचि जाग्रत करना, प्यास जगाना। बालक की विभिन्न आंतरिक प्रवृत्तियों एवं क्षमताओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया शिक्षण प्रभावी होता है। जिज्ञासा की प्रकृति को जाग्रत कर विज्ञान का प्रशिक्षण प्रभावी होता है। जिज्ञासा की प्रवृत्ति को उकसाकर विज्ञान का प्रशिक्षण सहजता से दिया जा सकता है। बौद्धिक चेतना को जगाकर दर्शन सिखाना उचित है। अनुकरण और कल्पना को सक्रिय करके कला सिखाना सहज होगा।

शिक्षण का प्रथम कदम है ध्यान केन्द्रित करना, दूसरा रुचि जगाना या जिज्ञासा चेतन करना और तत्पश्चात विद्यार्थियों की आन्तरिक रुचि से मेल खाती पद्धति से शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहिये। किसी प्रकार का भी दबाव अनुचित होता है। स्मृति और निर्णय की शक्तियों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। प्राकृतिक वस्तुओं जैसे फूलों के निरीक्षण से रंग, रूप, भेद, तुलना आदि से स्मृति को विकसित किया जा सकता है। तारों के निरीक्षण से नक्षत्र विद्या, भूमि और पत्थरों के निरीक्षण से भूगर्भ शास्त्र तथा पशुओं के निरीक्षण जीव शास्त्र तथा चारों ओर के निकट परिवेश से मानसिक शिक्षा। बालक को अपने निर्णय की अन्य व्यक्तियों के निर्णयों से तुलना करके अपनी गलतियों को समझना भी सीखना चाहिये।

श्री अरविन्द के अनुसार शारीरिक शिक्षा के बिना मानसिक शिक्षा अधूरी है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का पूर्ण विकास है। शारीरिक विकास हेतु खेलों और व्यायाम के साथ ही ब्रह्मचर्य पर भी विशेष बल देना चाहिये। ब्रह्मचर्य से मन अनुशासित होता है। शिक्षार्थी उच्च लक्ष्यों की ओर बढ़ता है, मानसिक नियन्त्रण भी होता है और स्मरण शक्ति भी बढ़ती है। वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य बच्चे में इन्हीं गुणों का विकास करना होना चाहिए।

किसी भी आदर्श शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है। नैतिक शिक्षा उपदेश और शिक्षण से नहीं विद्यालय के समग्र परिवेश, वातावरण एवं शिक्षकों के

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

व्यक्तित्व से ही मिलती है। नैतिक परिवेश पुस्तकों एवं उपदेश से कही अधिक और स्थाई नैतिकता सिखाता है। महापुरुषों की जीवनियां भी पर्याप्त प्रेरणा देती हैं।

नैतिक शिक्षा के साथ ही अपने धर्म और संस्कृति की भी शिक्षा आवश्यक है। विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं के आधार पर सर्वधर्म समभाव विकसित किया जाना है। धर्म के मूल तत्वों को स्पष्ट किया जाना चाहिये। शिक्षकों का धार्मिक आचरण स्वतः ही पुस्तकों से अधिक सिखा देता है।

श्री अरविन्द टुकड़ों में बांटकर शिक्षा देने के विरुद्ध हैं। शिक्षा समन्वित होनी चाहिये। शिक्षार्थी के मस्तिष्क पर ढेर सारे विषयों का बोझ लादना अनुचित है। पाँच-छः विषय पढ़ाने की अपेक्षा दो-तीन विषयों पर अधिकार कराने का प्रयास अधिक उत्तम है। औपचारिक शिक्षण 6 वर्ष की आयु से पहले नहीं करना चाहिये। वातावरणीय शिक्षा अर्थात् वातावरण से स्वतः सीखने की व्यवस्था प्रदान करने वाली पाठशाला ही सही प्रारंभिक पाठशाला होगी जहाँ शिक्षक केवल सहायक होगा और सहायता की जिसे आवश्यकता होगी जो पूछेगा, मांगेगा उसी को दी जाय। वस्तुतः शिक्षा का यही स्वरुप कारगर एवं फलदायी हो सकता है।

आज भारत में शिक्षा में तरह-तरह की समस्याएं भयंकर रूप से उपस्थित है और इन समस्याओं के मूल कारणों को खोजने में श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन से मार्गदर्शन लिया जा सकता है क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने व्यापकता और गहराई दोनों ही दृष्टि से सत्यों को अन्वेषण किया है प्रायोगिक रूप में। इसीलिये उनका शिक्षा दर्शन केवल समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन में ही नहीं, अपितु विश्व के समग्र शिक्षा-दर्शन में भी विशिष्ट स्थान रखता है। महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोध हुए/हो रहे हैं।

महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन के मूल को आवश्यक रूप से विद्यालयी एवं हायर एजूकेशन में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

निदेशक
टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीटयूशन्स
शास्त्री नगर, जयपुर
मो. 9829014513

विश्व साक्षरता दिवस

साक्षरता विस्तार समय की सबसे बड़ी आवश्यकता

❒ उषा टेलर

शिक्षा किसी भी विकसित राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है। इसी आधार पर प्रगतिशीलता हस्तगत होती है, उपलब्ध ज्ञान के स्तर पर सम्पदा के अनेक पक्ष विकसित होते है उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकना, दूसरों की सेवा सहायता प्राप्त कर सकना, इसी से सम्भव है। पर इसे दुर्भाग्य की कहना चाहिए कि संसार में आधे पेट भूखे सोने वालों की संख्या जितनी है उससे कहीं अधिक वे लोग हैं, जिनको निरक्षर कहते हैं। निरक्षरों की संख्या बढ़ना एक प्रकार से संसार में अपंगों की भरमार ही होना है। कारण स्पष्ट है कि बिना पढ़े-लिखे लोग न केवल व्यक्तिगत रूप से कोई प्रगति करने में असमर्थ होते है वरन् समाज और राष्ट्र की उन्नति में भी बाधक बनते है।

अनपढ़ और अनपढ़ समुदाय अपने जीवन की सर्वांगीण समस्याओं का समाधान नहीं कर पाता फलतः दीनहीन एवं दयनीय स्थिति में पड़ा समाज पर भार बनकर रह जाता है। अतः अब समय आ गया है कि प्रगति की दिशा में तेजी से बढ़ती दुनिया में उसकी आधी से अधिक आबादी का बौद्धिक पिछड़ापन दूर किया गया जाए। इस निमित प्रौढ़ शिक्षा की योजनाओं को कार्यान्वित करना और उन्हें सफल बनाना नितान्त आवश्यक है।

निरक्षरता उन्नति के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा है। मनुष्य के पतन और दुःख-दरिद्रता की जड़ में अशिक्षा है। इनमें से अधिसंख्य निरक्षर बिखरे देहातों में रहते है, जहां न शिक्षा का महत्व समझा जाता है और न उसके लिए आवश्यक सुविधाएं ही उपलब्ध है। उत्साह के अभाव में वे लोग समाधान ढूंढने का भी प्रयत्न नहीं करते। जहां शिक्षा का महत्व नहीं समझा गया हो, इस ओर इन्हें अभिप्रेरित न किया गया हो, उसके लिए प्रयत्न भी क्यों चलेगा? उत्साह क्यों उभरेगा? सही कारण है कि वहां कोई बड़ी उपलब्धि भी हस्तगत नहीं होती है वे लोग किसी प्रकार अपनी आजीविका भले ही कमाते रहें पर समाज का ऋण चुकाने जैसा कोई उपयोगी कार्य नहीं कर सकते और जो लोग केवल अपने लिए ही जीने को विवश हों, उन्हें समाज की राष्ट्र की प्रगति में सहायक कैसे कहा जा सकता है? कदम से कदम मिलाकर न चल पाने के कारण वे समाज के पिछड़ेपन का एक कारण बनते है। निरक्षरता दूर करने के लिए साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा, क्रियात्मक साक्षरता जैसे नामों से सरकारी अर्द्ध-सरकारी स्तर पर बहुत कुछ प्रयत्न किया जा रहा है। अध्यापकों एवं प्रौढ़ शिक्षा अधिकारियों पर्यवेक्षकों आदि की एक विपुल जनसंख्या इसी शिक्षा प्रयोग में लगी हुई है शिक्षा नीति पर लम्बी-चौड़ी चर्चाएं होती रहती है रिपोर्ट तैयार होती और योजनाएं बनती रहती है फिर भी सफलताएं बहुत सीमित रही है। इतनी बड़ी जनसंख्या को साक्षर बना सकना अकेले सरकारी तन्त्र के बलबूते की बात नहीं है। कारण स्पष्ट है कि बढ़ती आबादी के कारण नवोदित छात्रों के लिये सरकार को नवीन स्कूल कॉलेज खोलने के लिये पर्याप्त साधन सुविधा जटा पाना ही मुश्किल पड़ रहा है फिर प्रौढ़ नर-नारियों की शिक्षा का प्रबन्ध कैसे हो? एक तो इन लोगों में शिक्षा के प्रति अभिरूचित की कमी है, दूसरे रोज कुंआ खोदने और पानी पीने वाले इस विशाल अभाव ग्रस्त समुदाय में यदि पढ़ाई लिखाई के प्रति उत्साह उमंगे भी तो इसके लिये उन्हें रात्री में ही कुछ समय मिल पाता है। उनके लिये इन थोड़े घण्टों के लिये अल्प वेतन श्रेणी के अध्यापक कहां से मिले? बिना पूरे वेतन के कोई क्यों कर इस बन्धन में बन्धन को तैयार होगा? फिर इतनी बड़ी संख्या में निरक्षरों के लिये लाखों

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

नये प्रौढ़ विद्यालय कैसे खुले? उनमें पढ़ाई लिखाई के प्रति अभिरूचि कैसे जागृत हो उत्साह कैसे उभरे? यह सभी समस्यायें इतनी जटिल है जिसके समाधान समज सम्भव समस्याओं इतनी जटिल है जिसके समाधान सहज सम्भव नहीं दिखते।

विश्व के कितने ही देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं, यहां की अधिकांश जनता कभी निरक्षर थी। परन्तु जब पढ़ाई लिखाई का महत्व समझा गया, लोगों में इसके प्रति अभिरूचित जगी तो वहां सहयोग के आधार पर शिक्षा सम्बर्द्धन को एक ''आन्दोलन'' के रूप में चलाया गया और देखते-देखते कुछ वर्षों में ही सारे देशवासियों को साक्षर बना दिया। बड़े देश रूस और चीन के अतिरिक्त निकारागुआ, एर्जेन्टीना, ईराड, युगाण्डा, केन्या, क्यूबा, गोर्डन, हंगरी, पोलेण्ड, पनामा, कुल्गारिया, रोमानिया, लीकिया, सीरिय, सूडान, सिंगापुर आदि देशों में प्रौढ़ शिक्षा को बहुत व्यापक स्तर पर चलाया गया है। इन देशों में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का पर्याय मानकर इसे सुनियोजित ढंग से भावनात्मक स्तर पर क्रियान्वित किया गया है। यही कारण है कि छोटे-छोटे कृषि प्रधान देश भी अब अपनी बुद्धिमता और कौशल का विकास कर प्रमुख औद्योगिक देश बन गये है। वहां शिक्षितों में उदार विचारशीलता को भावान्तमक स्तर पर उभारा गया है और उन्हें देशवासियों की मानसिक अपंगता को दूर करने, उन्हें साक्षर बनाने के काम पर स्वैच्छिक रूप में लगाया गया है, इन देशों में अवैतनिक स्वयं सेवी शिक्षकों की एक संगठित सेवा सी बन गयी है, जो गांव-गांव जागर लोगों में शिक्षा के प्रति उत्साह जगाती है। और उन्हें साक्षर बनाती है। प्रशिक्षण का एक ऐसा वातावरण बन गया, जिसमें समानता, पारस्परिक सहयोग तथा विश्वास के साथ शिक्षित युवक युवतियों अशिक्षितों को अपने साथ लेते और उन्हें साक्षर बनाते चले गये।

प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में निजरागुआ सबसे अग्रणी देश है। निरक्षरता उन्मूलन में जिस प्रगति से उसने सफलता पाई है वह विश्वभर में अपने देश की अद्वितीय है। सन् 1971 में जब स्वतंत्रता हॉसिल की तब आधे से अधिक देशवासी निरक्षर थे। स्वतंत्र सरकार के साथ विकास योजनाओं में राष्ट्रीय साक्षरता अभियान चलाना अति आवश्यक था। परन्तु उसके क्रियान्वयन में गम्भीर आर्थिक-संकट एवं शिक्षकों की कमी प्रमुख बाधायें थीं।

इस विषय परिस्थिति में अपने निरक्षर देशवासी भाइयों को साक्षर बनाने का संकल्प लिया, पढ़े लिखे नवयुवक एवं युवतियों जो युवा पीढ़ी पहले देश की स्वतंत्रता के लिये लड़ रही थी, उसी लगन के साथ राष्ट्रीय साक्षरता अभियान में जुट गई। सामुदायिक अध्ययन दलों का संगठन किया गया। जगह-जगह अस्थायी स्कूल खोले गये। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को साक्षर बनाया जाने लगा। पांच महिनों की अल्पवधि में ही चार लाख से अधिक नर नारियों ने पढ़ने-लिखने की आरम्भिक शिक्षा प्राप्त कर ली।

जीवन दर्शन

सफलता का मार्ग खतरों का मार्ग है जिसमें खतरों से लड़ने का साहस और संघर्ष में पड़ने का चाव हो, उसे ही सिद्धि के पथ पर कदम बढ़ाना चाहिए। जो खतरों से डरते हैं, जिन्हें कष्ट सहने से भय लगता है, कठोर परिश्रम करना जिन्हें नहीं आता, उन्हें अपने जीवन को उन्नतिशील बनाने की कल्पना नहीं करनी चाहिए। अदम्य उत्साह, अटूट साहस, अविचल धैर्य, निरन्तर परिश्रम और खतरों से लड़ने वाला पुरुषार्थ ही किसी का जीवन सफल बना सकता है।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

जिस बुनियादी शिक्षा के लिये विपुल धन राशि.... पड़ती, योजनायें बनती, शिक्षक तैयार किये जाते उसके पूर्व होने में वर्षों का समय लगता, उस जटिल कार्य योजनाओं समर्पित-सेवाभावी उवाचेता राष्ट्रीय साक्षरता जेहाद को स्वयं युवा वर्ग में वर्षिभर में पूर्ण कर दिखाया।

साक्षरों ने अपने अड़ोस-पड़ोस के निरक्षरों को, कारखानों के साक्षर मजदूरों में अपने साथी निरक्षर मजदूरों को, फैक्टरियों में ही अवकाश के समय पढ़ना लिखना आरम्भ कर दिया। दूरवर्ती कृषकों और पहाड़ी क्षेत्रों के लोगों तक पहुंचकर नवयुवकों ने उन्हें अक्षर ज्ञान करवाया। कम पढ़ी-लिखि महिलाओं ने अपना-अपना मोर्चा सम्भाला, शहरवालों ने शहर वासियों को सीखाया। सभी ने अपने-अपने ढंग से योगदान दिया। सभी का उद्देश्य एक था कि निकारागुआ वासियों को बदलते समाज में प्रगतिशील दुनियां में भागीदारी के लिये आवश्यकज्ञान कौशल व अनुभव प्राप्त करें, जिससे वे प्रगति के दौर में पीछे नहीं रहे।

इस सामुहिक प्रयास ने एक वर्ष में ही निरक्षरता के कलंक के धो दिया और विकसित तथा समुन्नत श्रेणी में जा पहुंचा। हमारे सामने साक्षरता अभियान के ये ज्वलन्त उदाहरण है। निश्चय ही निकारागुआ, क्यूबा, सोवियत रूस जैसे देशों के साक्षरता अभियान में बहुत कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकते है और अपने देश की दो तिहाई जनता को जो सर्वथा निरक्षर है, उसे साक्षर बना सकते हैं। प्रौढ़-शिक्षा की आवश्यकता इतनी बड़ी है जिसे काल शिक्षा की तुलना में अनेक गुणी विशद् समझा जा सकता है। यह समस्या ऐसी है जो पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार है और प्रगति की शिक्षा में सोचने समझने एवं कदम बढ़ाने तक में अवरोध उत्पन्न करती है। ऐसी दशा में यह अति आवश्यक हो जाता है कि जैसे भी बन पड़े, अपने माथे पर लगे निरक्षरता के इस कलंक को धोया जाए। शिक्षा ही वह साधन है, जिसमें मानव को नव पशु स्तर से ऊंचा उठा कर सृष्टि का मुकुटमणि कहलाने वाले जीव 'मनुष्य' की श्रेणी में बैठ सड़ने योग्य बनाया है।

शिक्षा को न छोड़ वत्स तू,
करती यह जीवन निर्माण।
इससे ही होता जीवन में,
मानव मात्र का पूरा त्राण।
शिक्षा को यदि छोड़ दिया तो,
वह निश्चित पछतायेगा।
पहुंच जायेगा न गतंव्य
इच्छित फल भी न पायेगा।

-प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा.वि., रेलमगरा
मो. 8829006071

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

हिन्दी दिवस विशेष

अशुद्ध वर्तनी का बढ़ता प्रयोग

❒ उत्तम चन्द्र सागर

हिन्दी शिक्षण के दौरान कक्षा के ही एक छात्र द्वारा अपनी गृहकार्य की अभ्यास-पुस्तिका पर अपना नाम 'हेमराज भईय्यावत' अंकित कर रखा है। मैंने उक्त छात्र से कहा कि आपके नाम के साथ उपनाम/गोत्र 'भईय्यावत' अशुद्ध है। छात्र का जबाव था-'नहीं गुरुजी मेरी बड़ी बहिन के विवाहोत्सव में पेंटर द्वारा हमारे घर के मुख्य द्वार पर 'भईय्यावत परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है' लिखा गया था, अतः यह सही है।' छात्र को मेरे द्वारा पेंटर की शैक्षिक योग्यता एवं मेरी शैक्षिक योग्यता का तर्क देकर शुद्ध शब्द 'भैयावत' भैया 'भ' में ऐ अर्थात् आ+इ=ऐ मात्रा से उच्चारण कर समझा कर संतुष्ट किया।

इसी तरह हिन्दी की बिंदी यानी अनुस्वार (ं) को कतिपय छात्र या पाठक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते, यथा-किसी का नाम मोहन सिंह है उसको केवल मोहन सिह उच्चारित करते हैं या फिर सिंघ अशुद्ध उच्चारित करते हैं।

ये तो केवल नमूना मात्र है। हम अपनी दिनचर्या में विचार विनिमय में पाठ्य पुस्तकों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, चित्रों, मानचित्रों, पोस्टरों-विज्ञापन पट्टों, चैनलों-चलचित्रों आदि में बढ़ती हिन्दी भाषा में अशुद्ध वर्तनी देखकर कभी-कभी गहरा विचार आता है कि भाषा में अशुद्ध वर्तनी को लेकर पूरे कुएं में ही भांग घुल गई है। भला भावी पीढ़ी किस तरह सुरक्षित रह पाएगी? हिन्दी वर्तनी को लेकर इतनी अधिक निश्चिन्तता क्यों?

हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों/क्षेत्रों का जब यह हाल है तो अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र दक्षिणी भारत के कतिपय प्रान्तों का तो कहना ही क्या? हिन्दी भाषा की इस अशुद्ध वर्तनी सम्बन्धी दुर्दशा को देखकर अर्थशास्त्र का एक नियम है जिसे 'ग्रेशम्स ला' (ग्रेशम का नियम) कहते है। ग्रेशम के अनुसार-'बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है।'

वर्तमान में अशुद्ध वर्तनी के बढ़ते प्रयोग से लगता है कि ग्रेशम के नियम की तरह ही आधुनिक हिन्दी भाषा के चलन में शुद्ध वर्तनी रूपों का स्थान अशुद्ध वर्तनी रूप लेते हुए चले जा रहे हैं तथा शुद्ध वर्तनी रूपों को वे चलन से बाहर करते हुए बढ़ रहे हैं। इसी कारण शुद्ध वर्तनी रूपों से विद्यार्थी तथा पाठक अपरिचित है। यहाँ तक कि इन्हें शुद्ध स्वीकारते हिचकिचाते हैं।

इस प्रयोग से पाठ्य पुस्तकें भी अछूती नहीं रही है। पाठ्य-पुस्तकें तो ज्ञान का स्रोत है। नमूने के तौर पर कतिपय अशुद्ध वर्तनी वाले शब्द हमारे समक्ष है, जिसमें-'श्रृंखला' तथा 'चिन्ह' शब्द अशुद्ध वर्तनी प्रयोग हैं। शुद्ध वर्तनी है-'शृंखला' 'चिह्न' जो श्+ऋ='शृ' (शृ) तथा ह्+न='ह्न' से बने हैं। इसी तरह श्रृंगार, श्रृंग, चिन्हित, पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह अशुद्ध वर्तनी शब्द वर्तमान प्रचलन में हैं जिनका शुद्ध वर्तनी रूप-शृंगार, शृंग, चिह्नित, पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न है।

हिन्दी भाषा में 'ता' प्रत्यय लगाकर अशुद्ध वर्तनी से शुद्ध शब्दों की भरमार है। यथा-सोहार्द, सौजन्यता, सौन्दर्यता, कौमार्यता, धैर्यण, वैमनस्यता, माधुर्यता, ऐक्यता, नैपुण्यता, वैधयता, साम्यता, दारिद्रयता, सौख्यता जैसे अशुद्ध वर्तनी शब्द आज प्रचलन में है।

शुद्ध वर्तनी के लिए इन्हें 'ता' प्रत्यय हटा कर लिखना चाहिए यथा-सौहार्द, सौजन्य, सुजनता, सौन्दर्य/सुन्दरता, कौमार्य/कुमारता, धैर्य/धीरता, वैमनस्य, माधुर्य/मधुरता, ऐक्य/एकता, नैपुण्य/निपुणता, वैधव्य, साम्य/समता, दारिद्रय/दरिद्रता, सौख्य आदि।

हिन्दी भाषा में कतिपय 'इक' प्रत्यय से बनने वाले अशुद्ध वर्तनी से युक्त है। जैसे-'संवैधानिक' शब्द पाठ्य-पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं में लिखा जा रहा है। इस शब्द की व्युत्पत्ति या शब्द-रचना व्याकरण की दृष्टि से इस प्रकार है-संविधान+इक प्रत्यय के योग से सांविधानिक शब्द बनेगा। 'इक' प्रत्यय से बनने वाले अन्य शब्द-संसार+इक से सांसारिक, प्रसंग+इक से प्रासंगिक, संस्कृति+इक से सांस्कृतिक, मंगल+इक से मांगलिक शुद्ध वर्तनी से युक्त शब्द हैं।

बसन्त ऋतु, बासन्ती बगार, बसन्त कुमार, नर्बदा, नबाब, बाबत, जबाब, बाबजूद, लाबारिस, वर्तनी शब्दों में रेखांकित 'ब' का प्रयोग अशुद्ध है। शुद्ध वर्तनी रूप हैं-वसन्त ऋतु, वासन्ती बहार, वसन्त कुमार, नर्मदा, जवाब, बावत, जवाब, बावजूद, लावारिस, लेकिन कितने विद्यार्थी-पाठकगण इन शुद्ध वर्तनी रूपों से परिचित हैं?

पाणिग्रहण/विवाहोत्सव, वर्षगांठ, वाकदान जैसे मांगलिक अवसरों पर दीवारों अथवा मुख्य द्वार पर 'सुस्वागतम्' लिखकर अथवा 'सुसंगतम्' विद्युत पट्ट लगा कर आगन्तुकों का स्वागत-सत्कार किया जाता है। हम अतिथियों का स्वागत भी अशुद्ध वर्तनी से कर रहे हैं। 'स्वागतम्' शब्द की रचना 'आगतम्' के पूर्व 'सु' उपसर्ग जुड़ा है। यथा सु+सु+आगतम=सुस्वागतम् लिखना क्या औचित्य है। व्याकरणिक एवं वर्तनी के अनुसार अशुद्ध वर्तनी को बढ़ावा देता है।

मेरे स्वाध्याय व पठन-पाठन अनुभव के आधार पर वर्तमान में प्रयुक्त अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों की शब्दावली व उनका शुद्ध रूप प्रस्तुत है कतिपय उदाहरण ही है। यथा-आध्यात्म (अध्यात्म), आधीन (अधीन), अनाधिकार (अनधिकार), बारात (बरात), सन्यास (संन्यास), अनुग्रहित (अनुगृहीत), उपरोक्त (उपर्युक्त), उज्वल (उज्ज्वल), निर्दोषी (निर्दोष), निरपराधी (निरपराध), पूज्यनीय (पूज्य/पूजनीय), बेफिजूल (फिजूल), अत्याधिक (अत्यधिक), भलमन साहत (भलमनसत), अन्तर्ध्यान (अन्तर्धान), कैलाश (कैलास), कवित्री (कवयित्री), चर्मोत्कर्ष (चरमोत्कर्ष), द्वन्द (द्वन्द्व), सादृश्य (सदृश), छात्रछाया (छत्रछाया), तदोपरान्त (तदुपरान्त), पुरुस्कार (पुरस्कार), निरोग (नीरोग), सदोपदेश (सदुपदेश), मंत्रीमण्डल (मंत्रिमण्डल), कालीदास (कालिदास), श्रीमति (श्रीमती), पियुष (पीयूष), आर्शीवाद (आशीर्वाद), परिक्षा (परीक्षा), पुनरुत्थान (पुनरुत्थान) आदि।

इस अशुद्ध वर्तनी वाले रूपों के अलावा दैनिक प्रचलन में भरमार हिन्दी भाषा में नकली हीरे (अशुद्ध वर्तनी) का यह झूठा मोह त्यागना होगा तथा असली हीरो (शुद्ध वर्तनी रूप) के प्रति आकर्षण जगाना होगा।

आज के इस प्रतियोगिता युग में शुद्ध वर्तनी रूपों की महत्ती आवश्यकता है। हिन्दी दिवस के पावन दिवस पर अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने हेतु शुद्ध वर्तनी रूपों को प्रचलन में लाते हुए अशुद्ध वर्तनी के बढ़ते प्रभाव को रोकना होगा। इससे वर्तमान व भावी पीढ़ी उत्तरोत्तर विकास कर समाज व राष्ट्र का नाम रोशन करेंगे।

-व.अ., रा.उ.मा.विद्यालय,
सेरिया (सलूम्बर) 313027 उदयपुर
मो. 9414758565

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शिक्षा व शिक्षक

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

❒ गायत्री शर्मा

सच्चे अर्थों में शिक्षक का मूल विनय है।
बुद्धि ज्ञान संवर्धन शामिल भी है लेकिन।।
जब तक नहीं हृदय परिशुद्ध बनेगा तब तक।
कैसे होगा विमल आत्मा का अनुशासन।।

वस्तुओं में प्राण, नदियों में गंगा, शास्त्रों में चक्र, धातुओं में स्वर्ण, तेजवालों में सूर्य तथा रत्नों में कोस्तभमणि की जितनी महत्ता है उतनी ही महत्ता शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक की है। शिक्षक जिसे मनुष्य का निर्माणकर्ता कहा जाता है तथा शिक्षक ही मस्तिष्क से संबंध स्थापित करता है। शिक्षक ही एक राष्ट्र का निर्माता है और विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार, अतः इन भावी कर्णधारों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का दायित्व एक स्पष्ट अन्तकरण वाला शिक्षक ही कर सकता है। एक ऐसी शिक्षा जो गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दी थी अर्थात् एक आलौकिक शिक्षक द्वारा निष्पक्ष भाव से दी गई शिक्षा की लक्ष्योन्मुखी बनाती है। शिक्षक ही जीवन का वह सांचा है जिसमें विद्यार्थी तैयार होकर निकलता है।

वस्तुतः जीवन मूल्यों का बीजारोपण हमारे बाल्यकाल की अमूल्य निधि है जिसको विस्तारित एवं स्थायित्व प्रदान का कृत्य शिक्षक द्वारा ही किया जाता है। सामाजिक विसंगतियों को तिरोहित करते हुए शिक्षक न केवल भौतिक विभिन्नता एवं अज्ञानता के विनाश की दिव्य अविरल धारा को साकार रूप प्रदान करता है वरन् सुकोमल सर्जनकर्ताओं की भावनाओं को शब्दांकित करते हुए उनकी गुणान्वेषक तुलिकाओं के माध्यम से मानवीय दृष्टिकोण को मुखरित करने का प्रयास भी करते हैं। आज के लुप्त प्रायः जीवन मूल्यों वाले समाज में मानव मूल्यों की पुनः स्थापना शिक्षक की गम्भीर चुनौती है। शिक्षक न केवल समाज की संस्कृति एवं विरासत भावी पीढ़ी में हस्तांरित करते हैं वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करते हैं।

शिक्षक को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है। शिक्षक ही वह सशक्त उपागम है,

जिसके द्वारा विद्यार्थी विभिन्न संस्कारों के माध्यम से अपने शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास कर समाज से राष्ट्र को योग्य नागरिक प्रदान करते हैं। देश के विद्यार्थियों को अपनी संभावनाओं की सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करना ही शिक्षक का उद्देश्य होता है। शिक्षक ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का निर्माता एवं विकास का मुख्य आधार है। बिना शिक्षक की सक्रिय सहभागिता के किसी भी राष्ट्र का वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण एवं विकास संभव नहीं है। इस बात को भारतीय मनीषियों ने 'गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णु, गुरु देवो महेश्वर' के रूप में कहा है।

प्राचीनकाल से ही शिक्षक का स्थान सर्वोपरि माना गया है। किसी महापुरुष की उक्ति है कि–'जिस प्रकार किसी निर्जीव वस्तु को ऊपर फेंकने हेतु सजीव की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार पाश्विक प्रवृति से युक्त बालक को देव तुल्य बनाने के लिए शिक्षक की आवश्यकता होती है।' समाज में शिक्षक का स्थान, अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएं और तकनीकी कौशल पहुँचाने का माध्यम है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित करने में सहायता देता है। शिक्षक ही हमारे भविष्य का संरक्षक है। किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति उसके शिक्षकों पर निर्भर करती है क्योंकि शिक्षक ही देश की भावी पीढ़ी को तैयार करता है, साथ ही समाज की मांग व आवश्यकता के अनुरूप विद्यार्थियों को तैयार करके उन्हें समाज के लिए एक उपयोगी इकाई बनाना ही शिक्षक का उद्देश्य होता है।

अतः शिक्षा में गुणात्मक अभिवर्द्धन में शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है तथा शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु सबसे ज्यादा प्रयास शिक्षक द्वारा ही किये जाने चाहिए। जब भी शिक्षक कक्षा में जाये जो उसे शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु निम्न बिन्दुओं पर अवश्य विचार करना चाहिए–

- कक्षा में जाने से पहले शिक्षक को इस बात की तैयारी कर लेनी चाहिए कि किसको पढ़ाना है? क्या पढ़ाना है? तथा कैसे पढ़ाना है? जब तक शिक्षक कक्षा में जाने से पहले इन बिन्दुओं पर विचार नहीं करेगा तो किसी भी सूरत में कक्षा में गुणवत्ता को नहीं लाया जा सकता है। अतः कक्षा में जाने से पहले शिक्षक को इन तीन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- कक्षा में जाने के बाद शिक्षक को इस बात की अवश्य जांच कर लेनी चाहिए कि कल कक्षा में दिया गया गृह कार्य बच्चों ने किया है या नहीं तथा किस गुणवत्ता के साथ किया है। यदि शिक्षक द्वारा इस बिन्दु पर हर रोज विशेष ध्यान दिया जाये तो सभी बच्चे गुणवत्ता के साथ समय पर गृह कार्य करना शुरू कर देंगे।
- हर शिक्षक को कक्षा खत्म होने के बाद कुछ समय के लिए यह अवश्य विचार करना चाहिए कि मैंने आज बच्चों को नया ज्ञान दिया या नहीं या केवल समय ही पास किया। यदि हर शिक्षक इस प्रकार प्रतिदिन विचार करने लग जायेगा तो शिक्षा में गुणवत्ता को कोई नहीं रोक सकता है।
- यदि शिक्षक शिक्षण की परम्परागत तरीकों के स्थान पर शिक्षण हेतु नये–नये नवाचारों को अपनाये तो बच्चों को शिक्षा के प्रति आकर्षित किया जा सकता है। शिक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के नवाचारों को अपना कर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

सकता है तथा यह सब शिक्षक की रुचि पर ही निर्भर करता है।

- कक्षा समाप्त होने के बाद शिक्षक को इस तथ्य पर अवश्य विचार करना चाहिए कि कक्षा में पढ़ाते समय बच्चों को स्वयं सीखने का अवसर प्रदान किया गया या नहीं। यदि बच्चों को सीखने का अवसर प्रदान नहीं किया जायेगा तो शिक्षा में गुणवत्ता को लाना संभव नहीं है।
- समय-समय पर शिक्षक द्वारा बच्चों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन द्वारा ही पता चलता है कि बच्चों की क्या स्थिति है तथा उनको प्रदान की जा रही शिक्षा को वह ग्रहण भी कर रहे हैं या नहीं। यदि नहीं तो शिक्षा में किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है जिससे शिक्षा में गुणात्मक विकास किया जा सके।
- शिक्षकों को इस बात पर अवश्य विचार करना चाहिए कि बच्चों में सर्वांगीण विकास की नई कड़ी जोड़ी गई है अथवा नहीं।

इस प्रकार इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर शिक्षक बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकता है एवं बच्चों को देश का अच्छा नागरिक बना सकते हैं। शिक्षक के बारे में सही गया है कि-

हम वो सूरज है, कभी डूबेगी ना जिनकी किरण।
रात होगी तो सितारों में बिखर जायेंगे।
सुबह का होगा फिर से अपना चमकता वजूद।
जमाने भर को रोशनी लुटायेंगे।।
अटल हो विश्वास साहस उल्लास को मन में लिए।
कर्म ज्योति जगमगाएं सत्य का सम्बल लिए।

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा का संवाहक शिक्षक ही है। उसे अपने कर्त्तव्य और भूमिका को समझ कर इस महान कार्य को पूरा करने के लिए आगे आना ही होगा। जब-जब शिक्षक अपनी ज्ञान ध्वजा हाथ में लेकर आगे बढ़ा है; तब-तब प्रकृति और व्यवस्था सभी ने उसका साथ दिया है और वह एक क्रान्ति का सूत्रधार बना है। आज फिर जरुरत है कि शिक्षक अपने कर्त्तव्य को समझ कर आगे आएं तथा एक शिक्षित व सुसंस्कृत देश का भाग्य लिखे जिसका आधार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है।

-5/279, एस.एफ.एस.
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
मो. 8829075513

शिविरा पंचांग

सितम्बर, 2014					
रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

सितम्बर, 2014 ● कार्य दिवस 24, रविवार 04, अवकाश 02, उत्सव 05 ● 1-10 सितम्बर-प्रथम एवं द्वितीय समूह (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा) की विद्यालयी जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (अधिकतम चार-चार दिवस), केजीबीवी, मेवात बालिका आवासीय विद्यालयों की जिला स्तरीय प्रतियोगिता। **1-2 सितम्बर**-विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (विद्यालय स्तर)। **4 सितम्बर**-रामदेव जयन्ती/तेजा दशमी (अवकाश-उत्सव)। **5 सितम्बर**-शिक्षक दिवस (उत्सव), राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ। **6 सितम्बर**-मीना मंच के अन्तर्गत मीना कहानी का सामूहिक वाचन व समूह चर्चा। **8 सितम्बर**-विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव)। **11-16 सितम्बर**-प्रथम समूह राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा)। **11-14 सितम्बर**-प्राथमिक विद्यालय ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता, साथ में नि:शक्त विद्यार्थियों हेतु खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन (प्रारम्भिक शिक्षा)। **14 सितम्बर**-हिन्दी दिवस (उत्सव)। **15 सितम्बर**-श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2014 के प्रस्तावों का मूल्यांकन कर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) द्वारा मण्डल अधिकारी को प्रेषित करना। **15-20 सितम्बर**-सम्बलन प्रथम चरण। **17-20 सितम्बर**-विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (जिला स्तर)। **18-20 सितम्बर**-प्राथमिक विद्यालय जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (प्रारम्भिक शिक्षा)। **19-20 सितम्बर**-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता के लिए जिला स्तर पर पूर्व तैयारी। **19-24 सितम्बर**-द्वितीय समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा)। **20 सितम्बर**-शिक्षा शनिवार का आयोजन। **22 सितम्बर**-किशोर जागृति दिवस (उत्सव), मीना मंच के अन्तर्गत प्रथम मौहल्ला बैठक का आयोजन करना। **24 सितम्बर**-राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है), मीना विद्यालयों में मीना दिवस का आयोजन। **25 सितम्बर**-नवरात्रा स्थापना (अवकाश)। **26-27 सितम्बर**-जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)। **28 सितम्बर से 1 अक्टूबर**-तृतीय समूह विद्यालयी जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता। **30 सितम्बर**-राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना एवं श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार 2014 के प्रस्तावों की समीक्षा कर मण्डल अधिकारी द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को भेजना। इस तिथि तक नि:शक्त विद्यार्थियों की वैयक्तिक शिक्षा योजना भिजवाना, फंक्शनल एसेसमेन्ट कैम्पों का आयोजन, चिन्हित विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की सूची को अंतिम रूप देना एवं प्रेषण (प्रारम्भिक शिक्षा), विद्यालय में अध्ययनरत ऐसे बालक-बालिकाओं का चिन्हिकरण करना, जो अपने माता-पिता के साथ आजीविका हेतु पलायन करते हैं एवं उनके लिये माइग्रेटरी छात्रावास के प्रस्ताव तैयार करना एवं उन्हें प्रारम्भ कराना। **30 सितम्बर**-''यू-डाइस'' प्रपत्र भरने की आधार तिथि।

नोट-प्रारम्भिक शिक्षा -1. समस्त छात्रवृत्तियों के लिए यदि आवश्यक हो, तो अतिरिक्त बजट की मांग एवं ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृति योजना के नवीनीकरण के शेष प्रस्तावों को सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को प्रेषित करना एवं भामाशाह योजना का त्रैमासिक प्रतिवेदन निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करना। 2. कम्प्यूटर, उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का गणित एवं विज्ञान विषय का प्रशिक्षण। 3. केजीबीवी में अन्तर जिला पैनल निरीक्षण दिनांक 15 से 30 सितम्बर।

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

चिन्तन

जीवन की राह

❒ करुणा श्री

विद्यालय में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सभी विद्यार्थियों को विद्यालय की इंचार्ज द्वारा विद्यालय परिसर में समझाया जा रहा था कि अभी विद्यार्थियों को कैसे शिक्षक दिवस मनाना चाहिए। सभी विद्यार्थी उत्साहपूर्वक एकाग्रता के साथ सुन रहे थे और इंचार्ज मैडम की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार थे।

दूसरे दिन शिक्षक दिवस था। सभी अध्यापिकाओं को शुभकामना और बधाई दी जा रही थी। कुछ बच्चों ने अपनी कल्पना के सहारे शिक्षक दिवस के कार्यक्रम तैयार किये थे। कक्षा अध्यापिकाएं बनकर पढ़ा रही थी। अनुशासन बनाये रखने के लिए नियम इत्यादि भी बना दिए थे। जब सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन शुरू हुआ तो अध्यापिकाओं को ससम्मान के साथ बिठाया और फूलों के हार और उपहार देकर सम्मानित किया तथा अपनी कलम से प्रत्येक अध्यापिका को कुछ न कुछ लिखकर दिया। तभी कक्षा आठ की विद्यार्थी उठी और खड़ी होकर बोली-मैं भी कुछ उपहार स्वरूप अपनी गुरु देवांसी मैडम को देना चाहती हूं। स्वीकृति मिलने के पश्चात् नीतिशा ने कहा-शिक्षक दिवस की महत्ता सबको पता है। हमारा देश गुरु और शिष्यों के संबंधों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। सभी विद्यार्थियों को गुरुओं का सम्मान करना चाहिए। लेकिन गुरुओं को भी यदि विद्यार्थी कुछ बताना चाहे या सीखना चाहे। जीवन की राह बताना चाहे तो शिक्षक को स्वीकार करके अपने जीवन में परिवर्तन लाना चाहिए। यथार्थ में कम देखने को मिलता है। विद्यार्थियों से ही गुरु का सम्मान होता है। हम नहीं होंगे तो विद्यालय आंगन सूने पड़े रहेंगे। यदि स्टाफ नहीं होगा तो संस्था प्रधान का कोई मतलब नहीं जब दोनों नहीं होंगे तो क्लर्क (कार्यालय) का महत्व नहीं होगा। जब कार्यालय नहीं होगा तो चपरासियों का महत्व नहीं होगा। इसलिए शिक्षक दिवस को प्रत्येक दिन ज्ञान के सागर-प्रेम-बलिदान के रूप में मनाया जाए तो शिक्षक का महत्व है। शिक्षकों को बच्चों में ऐसे संस्कार भी देना चाहिए जिससे बच्चे देश के प्रति अपना फर्ज निभाना सीख सके क्योंकि प्रत्येक परिवार हर तरह के संस्कार नहीं डाले जाते क्योंकि अशिक्षा भी इसके लिए जिम्मेदार है। सरकार ने सरकारी विद्यालय गरीब परिवारों की शिक्षा सुविधाओं के लिए खोला हैं। सरकारी विद्यालयों को जो भी शिक्षक है वह पढ़े-लिखे हैं। उनका भी नैतिक दायित्व बनता है कि जैसे वह अपने बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं वैसे गांव के विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य का निर्माण करें क्योंकि गांवों में भी प्रतिभाएं छिपी है। केवल आय कमाने से और बस कब आती है, कब जाती है इसकी प्रतीक्षा न करें क्योंकि गांवों के बच्चों के कुछ सपने हैं।

यह सब सुनकर सभी अध्यापिकाएं स्तब्ध रह गईं क्योंकि जिस बालिका को कभी कक्षा में बोलते नहीं देखा, कभी किसी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए देखा। आज उसके मुख से अनोखी बात सुनकर हैरान थी। अध्यापिकाएं स्वयं में शर्म महसूस कर रही थीं। तभी इंचार्ज ने कहा-रूपा, तुम्हारे विचारों का हम सभी स्वागत करते हैं। शिक्षक दिवस की अहमिता को समझा और समझाया। मैं तुम्हारे माँ-पिता से मिलना चाहती हूँ। आज ही कार्यक्रम के पश्चात् तुम्हारे घर हम सब अध्यापिकाएं साथ चलेंगे।

कार्यक्रम के पश्चात् सभी अध्यापिकाएं रूपा के साथ घर गई। वहां देखकर और स्तब्ध रह गई कि रूपा के अभिभावक अंधे थे। कच्चे मकान के घर के आंगन में छोटे बच्चे बैठे गिनती और पहाड़े याद कर रहे थे। रूपा ने सभी अध्यापिकाओं को पास में बिछी चटाई पर बैठने को कहा और अपने पिताजी से कहा-बाबू, मेरे विद्यालय की मैडम आयी है, आपसे मिलना चाहती है।

पिता जनक ने सभी का स्वागत किया और कहा-मेरे लिए बड़े गर्व की बात है। गुरु इस आंगन में आये और पवित्रता की चादर को बिछा दिया। लगता है मेरी बेटी से कुछ गलती हो गई होगी इसलिए आने का कष्ट किया। क्योंकि गांव से बस्ती के विद्यालय की अधिक दूरी है।

इसी बीच इंचार्ज ने कहा-नहीं... नहीं पिताजी! गलती आपकी बेटी से नहीं हुई। गलती हमसे हुई है। हमने शिक्षक दिवस की महत्ता को सही मायने में समझा है। आपकी बेटी बहुत समझदार और प्रतिभाशाली है। इसको परखने में हमसे गलती हो गई। खामोश रहने का अर्थ समझने में नहीं आया। आपको धन्यवाद देते हैं। आपकी बेटी लाखों में एक है। तभी रूपा की माँ ने कहा-बेटी, इस बच्ची के सहारे हम सब जीवित है। पैसे का अभाव जरूर है। फिर भी इसकी हिम्मत और विचार-लगन हम सबको नई राह दिखाती है। यही बच्ची हम दोनों को खाना बनाकर खिलायेगी फिर घर के काम से निपट कर शेष समय में घर के छोटे-छोटे बच्चों को बुलाकर थोड़ा बहुत पढ़ाएगी। ये बच्चे जानवर चराने वालों के हैं। कितना ज्ञान देती है यह। व्यावहारिक ज्ञान हम दोनों देते हैं।

सभी अध्यापिकाओं की आंखें नम हो गईं। सोचने लगी-साधनों के अभाव में भी ज्ञान को बांटा जा रहा है। ये बच्ची शिक्षक दिवस पर हमारी शिक्षिका बनी और एक नई रोशनी दी। जीने की राह का नया मार्ग दिखाया। सभी ने सौ-सौ रुपये इकट्ठे करके आठ सौ रुपये रूपा के पिता के हाथ में रख दिये और कहा-इन रुपयों से इन बच्चों को कुछ ज्ञान की सामग्री खरीद कर दे देना। हम सभी कुछ न कुछ और व्यवस्था करके किताबें, स्लेट, कॉपियों की व्यवस्था करके भिजवा देंगे।

सभी अध्यापिकाएं नई चेतना, नई रोशनी के साथ आगे की राह पर बढ़ गई। रूपा के चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट बिखर रही थी।

-एल-76, हिम्मत नगर, टोंक रोड,
जयपुर (राज.)
मो. 9460244392

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

नैतिक शिक्षा

आवश्यक है जीवन मूल्यों की शिक्षा

❒ अचलचन्द जैन

आज की शिक्षा जीवन के व्यावहारिक ज्ञान पर कम एवं किताबी ज्ञान पर अधिक आधारित है। जिससे विद्यार्थियों जीवन मूल्यों को सीखने का अवसर कम मिलता है। किताबी शिक्षा उनके जीवन में व्यवहारिक ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि एक तरह के बोझ जैसी है, जिसे ढोने के लिये उन्हें विवश होना पड़ता है। क्योंकि माता-पिता उन्हें जीवन मूल्यों की शिक्षा देने के बजाय स्कूल जाने, होमवर्क करने, अच्छे अंक प्राप्त करने एवं पढ़ाई तथा प्रतियोगिताओं में प्रथम आने के लिये दबाब डालते हैं। अध्यापक भी उन पर होमवर्क पूरा करने के लिये मानसिक दबाब डालते हैं और पूरा न करने पर सजा देते हैं।

बच्चों को इतना होमवर्क दिया जाता है कि उनके मनोरंजन का समय भी होमवर्क पूरा करने में ही चला जाता है। यदि वे इसे पूरा नहीं कर पाते हैं तो उन्हें अपने अध्यापक से डांट खानी पड़ती है। अथवा अध्यापक द्वारा माता-पिता को शिकायत करने पर बच्चों को माता-पिता की डाँट खानी पड़ती है। डाँट के कारण बच्चों में पढ़ाई के प्रति अरुचि पैदा होती है और वे स्कूल नहीं जाने के लिए तरह-तरह के बहाने बनाते हैं।

आज के समय में स्कूल जाने वाले छोटे-छोटे बच्चों का स्कूल बैग भी इतना भारी होता जा रहा है कि उसे देखकर लगता है कि बच्चे कितना बोझ ढो रहे हैं? बच्चों पर किताबों का बोझ बढ़ाने और अधिक कार्यकरने का दबाव डालने से बच्चों की प्रतिभा को विकसित नहीं किया जा सकता।

शिक्षा का मूल उद्देश्य नैतिक मूल्यों के साथ जीवन जीना सिखाना है। पहले के समय में कहानियां, खेलों आदि के माध्यम से विद्यार्थियों का शिक्षण होता था। खेल-खेल में ही जीवनोपयोगी बातों का शिक्षण होता था। जिसे वे भाईचारा, एकता, वीरता, त्याग, बलिदान, मातृ-पितृ भक्ति, आत्म विश्वास, धीरज एवं नेतृत्व के गुण आदि बहुत कुछ सहजता से सीख जाते थे और उन्हें जीवन भर भूल नहीं पाते थे। भगवान महावीर की अहिंसा, श्रवण कुमार की मातृ-पितृ भक्ति, पन्नाधाय का त्याग, मीरा बाई की कृष्ण भक्ति, महाराणा प्रताप का स्वतन्त्रता प्रेम, भगतसिंह का बलिदान आदि का शिक्षण आज भी हमें प्रेरणा देता है।

आज के समय में कॉलेज से डिग्री प्राप्त व्यक्ति भी जीवन मूल्यों से परिचित नहीं है। फलस्वरूप सत्ता पर पहुँचने वाले अधिकांश व्यक्ति ईमानदारी को दर किनार कर रिश्वत के आदि बन जाते हैं। इसके अलावा इस उम्र में इन्टरनेट, टी.वी. मोबाइल फोन आदि के माध्यम से उनका मन इतना परिपक्व हो जाता है कि वे उनमें ही रम जाते हैं और मानवीय मूल्यों में उनकी रुचि कम हो जाती है जिससे आगे चलकर इनके दुष्प्रभावों से वे प्रभावित होते हैं। बच्चे जैसा देखते हैं वैसा करते हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि बच्चे अमर्यादित व्यवहार करते हैं, आक्रोशित होते हैं, अपराध करते हैं। बच्चों में अपार ऊर्जा होती है, वह किसी न किसी रूप में बाहर निकलती है। यदि इन्हें सही समय पर सही दिशा नहीं दी जाय तो वे गलत मार्ग अपना सकते हैं।

आजकल बच्चों के माता-पिता उन्हें ऐसी स्कूलों में भर्ती करते हैं जहाँ अच्छी शिक्षा के नाम पर उनसे अधिक फीस वसूली जाती है। इतना ही नहीं नई-नई गतिविधियाँ के नाम पर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति भी उनके माता-पिता को ही पूरी करनी पड़ती है। इन स्कूलों में बच्चों को अच्छी तरह से तैयार करने के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा देने वाली बातें सिखायी जाती है जो न हमारी संस्कृति से मेल खाती है और न ही जीवन जीने में इनकी ज्यादा अहमियत होती है।

आज की शिक्षा येन-केन प्रकारेण पैसा कमाना सिखाती है परन्तु उनमें मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता का अभाव रहता है। यदि हम उन्हें अच्छा जीवन जीने की शिक्षा देना चाहते हैं तो उनमें आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक एवं राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के प्रति कर्त्तव्यों की समझ पैदा करनी होगी, मानवीय गुणों एवं मूल्यों का विकास करना होगा, उन्हें आत्म निर्भर बनाना होगा एवं दूसरों की मदद करना आदि जीवन मूल्यों को सीखाना होगा।

आज की पढ़ाई एक तरह से स्मृति परीक्षण है। जिस बच्चे की याददाश्त जितनी कमजोर है, वह उतना ही कमजोर विद्यार्थी माना जाता है। कक्षाओं में अध्यापक केवल इसी बात पर ध्यान देते हैं कि विद्यार्थी कितना याद रखता है। इस बात पर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया जाता कि वे कितने प्रतिभावान हैं और उनकी प्रतिभा एवं योग्यता का उपयोग कैसे किया जा सकता है?

हमारी शिक्षा पद्धति की कमियां एवं माता-पिता के सही मार्ग दर्शन के अभाव में विद्यार्थी अपनी योग्यताओं को सिद्ध न कर पाने एवं वाच्चित सफलता न मिलने के कारण आत्महत्या तक कर लेते हैं। परन्तु उनकी कोमल भावनाओं को परिवार के लोग समझ नहीं पाते और अच्छे अंक लाने अथवा प्रथम आने के दबाव में उनकी प्रतिभा कुंठित हो जाती है और वे असफल हो जाते हैं।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में आवश्यक परिवर्तन तो सरकार और शिक्षाविद मिलकर ही कर सकते हैं। लेकिन अगर माता-पिता अपना दायित्व संभाले और बच्चों की मदद करे तो छोटे बच्चों के सिर पर बढ़ते हुए पढ़ाई के बोझ को कम करने में मददगार हो सकते हैं। कहानियों एवं विभिन्न खेलों के माध्यम से अच्छे जीवन मूल्य सिखाएँ जा सकते हैं। उनको त्याग, वीरता एवं परोपकार की कहानियां सुनायें। ऐसा करने से उनके अन्दर अच्छे संस्कारों का उदय होगा और उनका जीवन जीना सहज हो जायेगा।

गाँधी मुहतों का बास,
सायला (जालौर)
फोन : 02977-272079

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

श्रम और शिक्षा

शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं हैं

❒ सत्य नारायण पंवार

ब्रिटिश शासन के समय लॉर्ड मेकाले ने 1835 में कहा था कि भारतवासियों को शिक्षित करने का उद्देश्य है-उन्हें एक ऐसा शिक्षित भारतीय बनाना जिनकी आदतें अंग्रेजों जैसी हो और वे सिर्फ क्लर्क बनें, इसलिए आज भी शिक्षित लोग श्रम से दूर भागते हैं और सफेद कालर वाली नौकरी ही करना चाहते हैं। 'बुड और अवोट' ने 1937 ई. में शिक्षा में श्रम की आवश्यकता पर जोर दिया था ताकि छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' ने कहा था कि शिक्षा के सिर्फ किताबी ज्ञान से काम नहीं चलता। उन्होंने श्रम की आवश्यकता पर जोर दिया। वास्तव में गांधीजी ने भी 'बेसिक एजूकेशन' की योजना का प्रस्ताव रखा था। 1927 से शिक्षा को किसी न किसी हस्तकला और उत्पादन कार्य पर केंद्रित किया गया। दूसरा उद्देश्य था कि शिक्षित लोगों (दिमाग से काम करने वाले) और मजदूरों (हाथों से काम करने वालों) के बीच की दूरी को समाप्त किया जाए।

श्रम और शिक्षा के बीच दूरी-

भारत के आजाद होने के पश्चात सभी लोगों ने महसूस किया कि शिक्षा और उत्पादन (श्रम) के बीच की जो दूरी हैं उसे समाप्त किया जाए। इसी उद्देश्य को लेकर 'कोठारी कमीशन रिपोर्ट (1934)' में भी कार्य अनुभव को शिक्षा के सभी स्तरों पर एक आवश्यक विषय के रूप में रखा गया, ताकि श्रमिकों और शिक्षित लोगों की बीच की दरार समाप्त हो जाए और सभी लोग राष्ट्र उत्पादन में जुट जाएं।

प्रो. ईश्वरी भाई पटेल ने 1977 में सुझाव दिया कि शिक्षा को समाज और श्रम से जोड़ा जाएं। उन्होंने शिक्षा के सभी स्तरों पर समाज उपयोगी उत्पादन कार्यों को एक अनिवार्य विषय के रूप में रखा जिसमें सभी शिक्षित लोग स्वयं का और राष्ट्र का विकास करके राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य कर सकें। श्री श्रीमन नारायण ने 1977 में नेशनल एजूकेशन कान्फ्रेंस में यह सुझाव दिया कि स्कूल के 50 फीसदी समय को उत्पादन, सृजनात्मक और मनोरंजनात्मक गतिविधियों के लिए निर्धारित किया जाए और उसमें से आधे समय को विभिन्न प्रकार के समाजोपयोगी उत्पादन कार्यों के लिए केंद्रित किया जाए।

श्रम और शिक्षा के भिन्न स्वरूप-

हालांकि समाजोपयोगी उत्पादन कार्य हमारी शिक्षा के सभी स्तरों पर एक अनिवार्य विषय बन चुका हैं, लेकिन आज फिर भी श्रम और शिक्षा को दो अलग-अलग स्वरूपों में देखा जाता है। अधिकतर लोगों की धारणा हैं कि वे अपने बच्चों की श्रम से दूर रखने के लिए शिक्षित बना रहे हैं। कुछ कारीगर ऐसा सोचते हैं कि अगर उनके बच्चों को अपनी जीविका हाथ से ही कमानी हैं तो उन्हें शिक्षित करने की क्या आवश्यकता हैं? इतना ही नहीं, आजकल भारतवासियों की ऐसी धारणा बन गयी है कि शिक्षा के द्वारा बेरोजगारी बढ़ रही हैं क्योंकि सभी शिक्षित लोगों को सफेद कालर वाली नौकरी नहीं मिल पाती। शिक्षित नवयुवक कोई भी हाथ से ऐसा काम नहीं करना चाहते जिससे उनके हाथ मिट्टी से मैले हो जाएंगे। वास्तव में शिक्षित लोगों की इसी प्रवृति ने बेरोजगारी को बढ़ाया हैं।

वास्तव में देखा जाए तो शिक्षित लोग अशिक्षित लोगों से अधिक अनुशासित और ज्ञानी होते हैं। शिक्षित लोग किसी भी व्यवसाय को सुचारू रूप से और अधिक व्यवस्थित ढंग से चला सकते हैं। इतना ही नहीं, वे अपनी सृजनात्मक शक्ति के प्रयोग से व्यवसाय को नया मोड़ भी दे सकते हैं। आजकल व्यवसाय करने वालों की आर्थिक स्थिति नौकरी करने वाले शिक्षित लोगों से अच्छी हैं। आजकल एक अनपढ़ कारीगर पढ़े लिखे से ज्यादा कमा रहा हैं। शिक्षित को नौकरी न मिलने पर वह हाथ का काम नहीं करना चाहता, लेकिन अर्धशिक्षित मजदूरी करके अपना पेट पाल लेता हैं। हाथों और शिक्षित दिमाग दोनों के प्रयोग से किया हुआ कार्य अधिक अच्छा होता है और दोनों की क्षमता में वृद्धि होती हैं। स्वप्न को सच बनाने के लिए श्रम करना आवश्यक हैं। श्रम की जीवन का सार हैं।

श्रम को शैक्षिक उद्देश्यों से न जोड़ना-

भारत में ऐसी व्यावसायिक संस्थाएं नहीं हैं जो छात्रों को काम सीखने के लिए आकर्षित करें। आई.टी.आई. में आठवीं कक्षा पास करने के बाद व्यावसायिक ट्रेनिंग ले सकते हैं, लेकिन उनमें में सुचारू ट्रेनिंग नहीं होती और ये संस्थाएं भी कम पड़ रही हैं।

छात्रों के अभिभावक नहीं चाहते कि उनके बच्चे अच्छे लोहार, कारपेंटर या मोटर मैकेनिक बनें। समाज इन धंधों को हेय की दृष्टि से देखता हैं। ऐसे छात्र जो नवम् कक्षा पास करने में असमर्थ हैं, मजबूर होकर वही इन संस्थाओं में प्रवेश लेते हैं। निराशावादी छात्र आई.टी.आई. के वातावरण को दूषित कर देते हैं और वहां का वातावरण अनुशासनहीन हो जाता हैं। इन संस्थाओं में अच्छे छात्र, जो कम सीखने के शौकीन होते हैं, वे प्रवेश ही नहीं लेते।

व्यावसायिक ट्रेनिंग लेने के बाद ये छात्र किसी प्राइवेट फैक्टरी या व्यवसाय में नौकरी करते हैं जहां पर उन्हें न तो अच्छी तनख्वाह मिलती हैं और न रोजगार की सुरक्षा। ऐसे नौकरी करने वाले छात्रों को निराशा का सामना करना पड़ता हैं।

पॉलीटेक्निक और इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला पाने के लिए मेरिट में 85 प्रतिशत अंक होना आवश्यक हैं। ऐसी संस्थाएं कम हैं और वे सभी लोगों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पातीं। 85 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले या प्री-इंजीनियरिंग की परीक्षा में मेरिट में नहीं आने वाले छात्र निराश हो कर बी.एस.सी., एम.एम.सी. करते हैं।

आजकल कुछ लोग प्राइवेट संस्थाओं में ब्यूटीशियन, रसोई बनाना, वस्त्र सिलाई, रेडियों, टेलीविजन की मरम्मत, कम्प्यूटर, कार-स्कूटरों की मरम्मत इत्यादि का शिक्षण लेकर अपना धंधा शुरू करना चाहते हैं। उनके पास इतना पैसा नहीं होता, इसलिए बैंक से ऋण लेना पड़ता हैं। बैंक से ऋण लेने में कई तकलीफों का सामना करना पड़ता हैं।

शिक्षित लोगों को कुछ सुझाव-

आजकल शिक्षित लोगों के समक्ष रोजगार की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया हैं। यह एक ज्वलंत अंतरराष्ट्रीय समस्या हैं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षित लोगों को चाहिए

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

कि वे निम्नलिखित सुझावों को स्वीकार करें-

वैसे देखा जाए तो कमजोर वर्ग के बच्चों को बचपन में काम करना आसान है, लेकिन पढ़ना मुश्किल लगता हैं, क्योंकि काम करने का नतीजा बच्चों को पैसों के रूप में मिलता हैं जिससे वे रोटी खा सकें, सिनेमा देख सकें और अच्छे कपड़े खरीदकर पहन सकें। शिक्षा लेने की प्रक्रिया लंबी होती हैं। कम से कम दसवीं कक्षा पास करने के लिए दस वर्ष यानि शिक्षा का नतीजा दस वर्ष के बाद मिलता हैं। दसवीं कक्षा पास करने के बाद भी कभी-कभी रोजगार मिलता नहीं। अगर हाथ से काम करना और शिक्षण का कार्य दोनों साथ-साथ होते रहें तो सभी छात्रों को बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

शिक्षा के साथ-साथ हाथ से काम करने वाली कमाई करने की प्रवृति को बाल मजदूर कानून से न जोड़ा जाए। बाल मजदूर कानून तो उस पर लागू होना चाहिए जो बिना शिक्षा ग्रहण किये दिन में आठ घंटे मजदूरी करता हैं। स्कूलों में इलेक्ट्रिक के सामान की मरम्मत, ग्रीटिंग कार्ड बनाना, लिफाफे बनाना, मोमबत्ती बनाना, चाक बनाना, फाइल बनाना आदि विषय रखें जाएं जिससे छात्र पढ़ने के साथ-साथ कमाई कर सकें। छात्रों में पढ़ाई के साथ-साथ काम करने की आदत का विकास किया जाए।

प्रत्येक विद्यालय में किताबी ज्ञान देने के साथ शारीरिक श्रम, स्वावलंबन, सेवाभावना और हाथ से काम करने के हुनर भी सिखाये जाएं।

बहरहाल, शिक्षा और श्रम दो अलग-अलग तत्व हैं, लेकिन दोनों ही पाठ्यक्रम के अनिवार्य अंग हैं। श्रम जीवन की परिस्थितियों को सिलेबस से जोड़ता हैं। इतना ही नहीं, श्रम स्कूल एवं सामाजिक जीवन की सच्चाईयों और उसके स्तर से संबंध स्थापित करता हैं। शिक्षा के साथ-साथ मस्तिष्क, हृदय और हाथों की शिक्षा न दी गयी तो संपर्क विकास की गति रुक जाएगी और हमारी शिक्षा अधूरी रह जाएगी। शिक्षा तभी सार्थक बनती हैं जब वह प्रत्येक विद्यार्थी को सभी प्रकार के कार्य के योग्य बनाती हैं। श्रम ही तपस्या हैं। श्रम ही पूजा हैं। मेहनत के द्वारा ही जीवन का उद्देश्य पूरा किया जा सकता हैं। श्रम मानव जीवन के लिए अनिर्वाय है और यही मानव कल्याण का मूल मंत्र है।

शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
68 गोल्फ कोंस स्कीम, जोधपुर-342011

वैदिक शिक्षा

वैदिक ज्ञान बिना अधूरी शिक्षा

❒ विष्णु दयाल शर्मा

भारत सदियों से विश्व गुरु रहा है। भारत ने विश्व को जीना सिखाया जबकि आज हम खुद जीवन मूल्यों को सीखने के लिए लालायित है। यह नई शिक्षा नीति द्वारा परम्परागत मूल्य आधारित ज्ञान की उपेक्षा करने से हुआ है। आजकल शिक्षा ज्ञान या सृजनात्मक के लिए नहीं केवल परीक्षा पास करने का एकमात्र जरिया रह गई हैं।

आईआईटी जैसे उच्च तकनीकी संस्थान में प्रवेश या आईआईएम जैसे संस्थानों में जगह बनाने की कवायद हो, छात्रों का एकमात्र लक्ष्य परीक्षा पास करना है।

यूजीसी के मुताबिक भारत में केवल 2% कॉलेजों में उत्कृष्टता है। भारत का कोई भी विश्वविद्यालय विश्व के प्रमुख 100 विश्वविद्यालय में नहीं है स्वामी विवेकानन्द ने कहा-'वेदो की ओर लौटों।' वर्तमान पाठ्यक्रम में वैदिक शिक्षा का काफी समावेश है। प्राचीन भारतीय गणितज्ञों द्वारा रचित गणितीय सूत्रों से बालकों को परिचित करवाया जाना चाहिए। शून्य का आविष्कार भारत में हुआ। अरब में इसे आज भी 'हिन्दसा' अंक कहते हैं। गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त किसी चतुर्भुज का क्षेत्रफल उसकी भुजाएं नाप कर निकाल लेता था। भास्कराचार्य का ग्रन्थ 'लीलावती' प्राचीन भारतीय गणित का अमूल्य रत्न है। द्विघात समीकरण को हल करने के लिए 'श्रीधर विधि' को आज भी प्रामाणिक माना जाता है। यूरोप के लोग बड़ी से बड़ी संख्या मिलियन (दस लाख) को ही मानते थे, जबकि भारतवासी अरबों-खरबों की संख्या लिखते थे।

दिल्ली पर मुगलों का शासन आजने तक इस देश में वैदिक अध्ययन ही सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के केन्द्र में था। उसी शिक्षा प्रणाली के आधार पर तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय सम्पूर्ण एशिया से जिज्ञासुओं को आकृष्ट करते थे। वस्तुतः भारतीय चिन्तन और साहित्य का कोई भी अंग ऐसा नहीं जिसका संबंध वेद से ना हो।

प्राइमरी स्तर तक ज्यामिति में भी शिक्षक को चाहिए कि वर्ग, रेखा कोण, वृत, त्रिभुज, बेलन, आयत आदि की आकृतियां एवं संकल्पना भी भली ंति रूप से बालकों को सहायक सामग्री के माध्यम से समझाएं। भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भी हम इस स्थिति को बच्चों नहीं बदल पाए, यह एक विचारणीय प्रश्न है। महात्मा गांधी हो या पं. नेहरु, सभी ने संस्कृत के अध्ययन को बारम्बार रेखांकित किया।

प्रसन्नता की बात है कि मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने अपने मंत्रालय को इस विषय में विचार करने के लिए कहा कि वैदिक अध्ययन को कि प्रकार मुख्यता दी जा सके। परम्परागत वैदिक शिक्षा का समावेश शिक्षा प्रणाली में किया जा सके। स्मृति ईरानी जब इस प्रश्न को दोबारा संसद में उठा रही है तो इस पर संकीर्ण दलगत दृष्टि से विचार न करके राष्ट्रीय दृष्टि से विचार न करके राष्ट्रीय दृष्टि से विचार करना चाहिए कि क्या हम अपनी शिक्षा में उस भारतीय प्रणाली को समुचित स्थान दें जो पुरातन युग में छीन लिया। अब स्वतंत्र भारत में उसे पुनः वह स्थान मिलना चाहिए मानव संसाधन मंत्री की वैदिक शिक्षा का समावेश शिक्षा प्रणाली में करने की पहल करके एक ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाये। जिसे इस देश के चिन्तन के मूल तत्वों का ज्ञान सब को दिया जा सके। हमारे विद्यार्थी भारतीय सभ्यता और संस्कृति से परिचित हो।

भारतीय दर्शन पश्चिमी दर्शन की तरह बुद्धि विलास नहीं अपितु सीध जीवन दर्शन से जुड़ हो। वैदिक अध्ययन विद्यार्थी के जीवन में सन्तुलन बनायेगा। वैदिक अयन ज्ञान के लिए हो परीक्षा पास करना नहीं।

रा.प्रा.वि.टाई नाडी खजवाना
पं.सं. मूण्डवा (नागौर)

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।।
-मैथिलीशरण गुप्त

आदेश-परिपत्र : सितम्बर 2014

1. हितकारी निधि एवं राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान से सहायता : नियम व प्रक्रिया
2. प्रोबेशन अवधि पूर्ण होने के पश्चात वेतन स्वीकृति आदेश
3. गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा स्व घोषणा पत्र भरने बाबत निर्देश
4. प्रोबेशन अवधि पूर्ण होने के पश्चात वेतन स्वीकृति आदेश
5. माध्यमिक शिक्षा का विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता कार्यक्रम : 2014-15

1. हितकारी निधि एवं राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान से सहायता : नियम व प्रक्रिया

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/हिनि/28233/09-10(2) दिनांक : 19.5.2014 ● विषय : हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर एवं राष्ट्रीय शिक्षा कल्याण प्रतिष्ठान, बीकानेर से कर्मचारियों के निधन पर आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना-पत्र तत्काल प्रेषित करने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि हितकारी निधि एवं राष्ट्रीय शिक्षा कल्याण प्रतिष्ठान दोनों संस्थाओं से कल्याणकारी योजना के अन्तर्गत निम्नलिखितानुसार समस्त वर्ग के कर्मचारियों को सहायता दिए जाने का प्रावधान किया हुआ है :-

अ. हितकारी निधि :-

1. राज्य कर्मचारी की सामान्य स्थिति में मृत्यु होने पर उसके आश्रितों को रुपये 7000/- एवं दुर्घटना में निधन होने पर 10000/- की सहायता दी जाती है।

ब. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान :-

1. अध्यापकों के निधन पर उनके आश्रितों को रुपये 5000/- की सहायता राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत दिये जाने का प्रावधान है परन्तु प्रायः देखा गया है कि अध्यापकों के निधन पर प्रकरण समय पर नहीं भेजे जाते एवं प्राप्त होने पर उन्हें विलम्ब से अग्रेषित किया जाता है।

अतः कर्मचारी/अध्यापकों के निधन पर उनके आश्रितों से सहायता का प्रार्थना-पत्र भरवा कर मृत्यु प्रमाण-पत्र सहित तत्काल निम्नानुसार भिजवाएं (अनुकम्पात्मक नियुक्ति के समय ही आश्रित से सहायता हेतु फार्म भरवा लिया जावे) :-

1. हितकारी निधि से सहायता के लिए :- अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक-शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
2. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान से सहायता के लिए :- सचिव कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

कृपया विशेष रूप से आपका ध्यान आकृष्ट किया जाता है कि मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को सहायता समय पर उपलब्ध हो सके उक्त तथा उनके आश्रितों से तत्काल फार्म भरवाकर भिजवाएं। साथ ही यह भी निवेदन है कि उक्त सूचना अपने अधीनस्थ को भिजवाएं ताकि प्रकरण भिजवाने में विलम्ब न हो सके। ● उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव, हितकारी निधि, बीकानेर।

2. प्रोबेशन अवधि पूर्ण होने के पश्चात वेतन स्वीकृति आदेश

● Government of Rajasthan Finance Department (Rules Division) ● Memorandum ● No. F.1(2)FD (Rules)/06 Part-1 Jaipur, dated : 11 June 2014 ● Sub : Regarding successful completion of period of probation by probationer-trainees and grant of pay in the pay scale/running pay band of the post.

Provisions regarding grant of extraordinary leave to a Probationer-Trainee in the probation training period and successful completion of period of probation have been made vide Finance Department memorandum of even No. dated 22.05.2009. The appointing authority is presently authorised to sanction extraordinary leave upto three months to a probationer-trainee during the entire period of probation training. Extraordinary leave beyond three months in the probationer training period can be granted by the appointing authority in exceptional circumstances with the concurrence of Finance Department. It has also been provided in the memorandum that the period of probation shall be extended upto the period of extraordinary leave taken beyond three months subject to a maximum of one year.

For early disposal of extraordinary leave cases of probationer trainees, it has been decided to delegate powers to grant extraordinary leave as under :-

S. No.	Extraordinary leave period	Competent Authority to sanction leave
1.	Upto three months	Appointing Authority
2.	Beyond three months but period not more than on year	Appointing Authority approval of Administrative Department.

Extraordinary leave beyond the period of one year in exceptional and unavoidable circumstances shall be granted by the appointing Authority only with the prior approval of Department of Personnel and Finance Department.

It has also been decided to modify provision relating to extention of period of probation. In all cases where extraordinary leave is taken for a period exceeding one month, the probation period will be extended for the period of extraordinary leave taken beyond one month.

Pending cases of extraordinary leave pertaining to Probationer Trainee prior to issue of this memorandum may also be decided by the Appointing Authority and Administrative Department in terms of this order.

This order shall come into force with immediate effect. (Subash Chandra Garg) Principal Secretary, Finance

3. गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं द्वारा स्व घोषणा पत्र भरने बाबत निर्देश

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी-एफ/19626/मूल मान्यता/11-12/248 दिनांक : 13.08.14 ● विषय : पूर्व संचालित एवं मान्यता प्राप्त गैर सरकारी संस्थाओं को स्व-घोषणा पत्र भरने तथा आर.टी.ई. नियम 2011 लागू होने से पूर्व मान एवं मानक पूरा करने बाबत। ● प्रसंग : राज्य सकरार का पत्रांक : पं.9 (2) शिक्षा-5/051 पार्ट दिनांक 05.07.11 ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत निर्देशानुसार प्रासंगिक पत्र व इस कार्यालय द्वारा जारी विज्ञप्ति क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी /19626/मूल मान्यता/11-12 दिनांक 10.07.11 द्वारा आर.टी.ई. नियम 2011 लागू होने से पूर्व, पूर्व संचालित एवं मान्यता प्राप्त और गैर सरकारी संस्थाओं के स्व-घोषणा पत्र पर 20 सितम्बर 2011 तक भरकर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रस्तुत किये जाने थे। जिन संस्थानों ने आर.टी.ई. एक्ट 2009 की अनुसूची के अनुसार मान एवं मानक 31.03.13 तक पूर्ण नहीं किए है अथवा जिन संस्थाओं ने विभाग को सूचित नहीं किया है और तिथि निकल चुकी है ऐसी संस्थाएं जिन्होंने आज दिनांक तक स्व-घोषणा पत्र भर कर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में प्रस्तुत नहीं किए है ऐसी दोनों प्रकार की संस्थाओं के विरुद्ध नियम 8 (ख) के तहत कार्यवाही कर उनके द्वारा मान एवं मानक पूरा नहीं करने के आधार पर युक्तियुक्त सुनवाई का अवसर प्रदान करते हुए नोटिस जारी करावे तत्पश्चात् भी मान एवं मानक पूरा नहीं करती है, तो ऐसी संस्थाओं के विरुद्ध मान्यता समाप्ति का प्रस्ताव तैयार कर इस कार्यालय को भिजवावे ताकि उन संस्थाओं की मान्यता समाप्ति के प्रस्ताव का अनुमोदन राज्य सरकार से लिया जाकर मान्यता समाप्ति की कार्यवाही की जा सके। इसे अत्यावश्यक समझे। ● अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4. प्रोबेशन अवधि पूर्ण होने के पश्चात वेतन स्वीकृति

● Government of Rajasthan Finance Department (Rules Division) ● F. 1 (2)FD/Rules/2006 Pt-I Jaipur, dated : **7 Aug. 2014** ● Memorandum ● Subject : Regarding successful completion of period of probation by probationer-trainee and grant of pay in the pay scale/runnig pay band of the post.

As per provisions contained in Finance Department Memorandum of even number dated 22.05.2009 Probation. Trainee who have availed extra-ordinary leave during the period of probation exceeding the period of 90 days but upto one year, the period of probationer-trainee was extended by the period beyond 90 days.

In partial modification of aforesaid memorandum, vide Finance Department Memorandum of even number dated 11.06.2014, the period of extraordinary leave availed beyond one month and upto one year, the period of probation is to be extended by the period of extra-ordinary leave availed beyond one month and this provision has also been made applicable to the cases pending on 11.06.2014.

This has resulted in disparity between the same class of employees because delay in deciding the cases of extra-ordinary leave was on the part of cncerned apporiting authorities and not on the part of concerned employees.

Accordingly, the matter has been considered and it has been decided that in all pending case of employees who availed extra-ordinary leave prior to 11.06.2014 the period of probation is to be extended by the period of extraordinary leave availed beyond three months. However, the competent authority for sanctioning leave would be as per provision of FD memorandum dated 11/06/2014.

It is also made clear that employees who are continuing to avail extra ordinary leave even before 11-06-2014 and onwards, such cases shall be decided in accordance with the provisions of Finance Department memorandum of even number dated 11.06.2014.

(Subhash Chandra Garg) principal Secretary to the Government

5. माध्यमिक शिक्षा का विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता कार्यक्रम: 2014-15

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● सत्र 2014-15 की 59 वीं राज्य स्तरीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक 17 व 19 वर्ष आयु वर्गऋ विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित किया जाता है । समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिकऋ को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों में पंचांग एवं निर्देशों को अविलम्ब प्रसारित करें ।

विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु निम्नानुसार खेल समूह बनाये गये है:-

प्रथम समूह

फुटबॉल	17,19 वर्ष	छात्र
जिम्नास्टिक	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
हैण्डबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
हॉकी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा

जूडो	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
सॉफ्टबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
तैराकी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
टेबल टेनिस	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
वॉलीबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
कुश्ती	17,19 वर्ष	छात्र

द्वितीय समूह

तीरंदाजी (इण्डियनराउण्ड)	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
तीरंदाजी (फीटा राउण्ड)	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
बेडमिन्टन	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
बास्केटबॉल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
क्रिकेट	17,19 वर्ष	छात्र
कबड्डी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
खो-खो	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
लॉन टेनिस	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
-	-	-
-	-	-

तृतीय समूह

एथलेटिक्स	17 एवं 19 वर्ष	छात्र-छात्रा

प्रतियोगिता निम्न तिथियों के अनुसार ही आयोजित की जावें :-

समूह	विद्यालय स्तर	जिला स्तर	राज्य स्तर
प्रथम समूह	16.08.14 से पूर्व	01.09.14 से 05.09.14 के मध्य (अधिकतम चार दिन)	11.09.14 से 16.09.14 तक
द्वितीय समूह	16.08.14 से पूर्व	05.09.14 से 09.09.14 के मध्य (अधिकतम चार दिन)	19.09.14 से 24.09.14 तक
तृतीय समूह	16.08.14 से पूर्व	28.09.14 से 01.10.14 तक	07.11.14 से 12.11.14 तक

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृतियां कार्यक्रम विद्यालय/क्षेत्रीय/जिला स्तर तक का आयोजन विभागीय खेलकूद नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 केअनुसार पूर्ववत जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं से पूर्व आयोजित करवायें।दिनांक 29 अगस्त 2014 मेजर ध्यानचंद जयन्ति को खेल दिवस के रूप में विद्यालय स्तर पर विविध खेलों के आयोजन किये जावें।

सत्र 2014-15 की 59वीं राज्य स्तरीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक 17 वर्ष एवं 19 वर्ष आयुवर्ग विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिता आयोजक विद्यालयों के नाम व स्थान परिशिष्ट 1 व 2 पर संलग्न हैं।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2008-2009 में खेलकूद प्रतियोगिताओं के नियमों में परिवर्तन/परिवर्द्धन के संबंध में विस्तृत आदेश, क्रमांक: शिविरा-माध्य/खेलकूद/निजी/35427/05-06/108 दिनांक 04-7-08 के द्वारा पूर्व में प्रसारित किये जा चुके है, यथावत रहेंगे।

सत्र 2014-15 की प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन हेतु निम्नांकित निर्देश प्रसारित किये जाते हैं :-

1. सभी अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि निर्धारित तिथियों के मध्य टीमों की संख्या के आधार पर न्यूनतम दिनों का कार्यक्रम तय कर जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं को आयोजित करें परन्तु क्षेत्रीय प्रतियोगिता आवश्यकतानुसार विद्यालयी स्तर की प्रतियोगिता के पश्चात एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व आयोजित करावें। राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ निर्धारित तिथियों एवं स्थानों पर निर्धारित विद्यालयों द्वारा ही आयोजित की जावेगी। तिथियों एवं प्रतियोगिताओं के स्थलों में कोई परिवर्तन नहीं किया जावेगा।
2. सत्र 2014-15 में सभी स्तर की प्रतियोगिताओं में संभागित्व के लिए खिलाड़ियों की जन्म तिथि निम्नानुसार होगी:-
   (1) 19 वर्ष आयुवर्ग-छात्र-छात्रा के लिए 01-01-1996 या उसके पश्चात एवं कक्षा 6 से 12 तक नियमित अध्ययनरत।
   (2) 17 वर्ष आयुवर्ग-छात्र-छात्रा के लिए 01-01-1998 या उसके पश्चात एवं कक्षा 6 से 10 तक नियमित अध्ययनरत।
3. पूर्व की भांति राज्य के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विधालयों में अध्ययनरत विधार्थी ही इन प्रतियोगिताओं हेतु पात्र होंगे।
4. शिक्षा विभागीय सभी खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु खिलाड़ी की पात्रता प्रवेश तिथि सभी कक्षाओं के लिए वास्तविक प्रवेश तिथि मान्य होगी।
5. प्रतियोगिता आयोजन के कार्यक्रम को निर्धारित करने ड्राज डालनेऋ की सुविधा हेतु सत्र 2013-14 में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम परिशिष्ठ-3 से 6 पर संलग्न किये जा रहे है।
6. सभी स्तर की विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन के समय प्रतियोगिता के सचांलन हेतु निदेशालय के आदेश क्रमांक-शिविरा/खेलकूद-3/ 35101/04-05 दिनांक 20 अगस्त 2005 के अनुसार ही प्रतिनियुक्तियाँ की जावें। यथा संभव स्थानीय कार्मिकों/अध्यापकों की सेवाएँ ली जावें।
7. सत्र 2014-15 की छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन शिक्षा विभागीय खेलकूद नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 व उसके पश्चात समय-समय पर नियमों में हुए संशोधन एवं प्रदत् निर्देशों के अनुरूप ही किया जावे तथा खेलों के नियम संबंधित खेल संघों के जो वर्तमान में संशोधित रूप में लागू है, के अनुरूप ही प्रतियोगिताओं को आयोजित किया जावे, परन्तु विभागीय आदेशों/नियमों को ध्यान में रखते हुए अनुपालना हो।
8. विशिष्ठ विद्यालय जैसे सार्दुल स्पोर्टस स्कूल, बीकानेर, सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र, शिक्षा विभागीय खेल छात्रावास के विद्यालय, संस्कृत शिक्षा निदेशालय के अधीनस्थ अध्ययनरत खिलाड़ियों का दल, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर द्वारा संचालित खेल

विद्यालय/छात्रावास/अकादमी के दल पूर्व की भांति सीधे ही राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में भाग ले सकेगें ।

9. राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर द्वारा संचालित खेल विद्यालय/छात्रावास/अकादमी में प्रशिक्षणरत/अध्ययनरत खिलाड़ियों की सूची मय पूर्ण विवरण दिनांक 14-08-2014 तक आवश्यक रूप से वाहक स्तर पर इस कार्यालय को भिजवावें खेलवार छात्र सूची निर्धारित प्रारूप में सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को 11 अगस्त 2014 तक प्रस्तुत की जावे जिससे जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) स्तर पर पूर्ण छानबीन पश्चात् प्रमाणित करते हुए उक्त सूचियां वाहक स्तर पर इस कार्यालय को दिनांक: 14.08.2014 तक भिजवाई जावेगीऋ अन्यथा इन्हे सम्बद्ध खेल की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु ड्राज में सम्मिलित नहीं किया जा सकेगा । जिसका सम्पूर्ण दायित्व सचिव/अध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर एंव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) का होगा ।

10. उक्त विशिष्ठ विद्यालयों का दल पूर्ण नहीं होता है तो इन विशिष्ठ विद्यालयों के खिलाडी एवं अन्य किसी विद्यालय का पूर्व में राष्ट्रीय विद्यालयी प्रतियोगिता में भाग ले चुका श्रेष्ठ खिलाड़ी किसी विशेष कारण से जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सका है तो राज्य स्तरीय चयन समिति के समक्ष उस खिलाड़ी का उक्त सत्र में प्रतियोगिता के समय अपने विद्यालय के संस्था प्रधान का नियमित विद्यार्थी होने का पत्र मय योग्यता प्रमाण पत्र एंव राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में संभागित्व प्रमाण पत्र (केवल पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी हेतु) की प्रमाणित छाया प्रति सहित खिलाड़ी स्वयं लेकर उपस्थित होता है तो चयन समिति द्वारा उसका परीक्षण किया जाकर चयन होने की स्थिति में निर्धारित संख्या में ही पूर्व राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर की राज्य स्तर पर तैयार की जाने वाली चयन सूची में सम्मिलित किया जावेगा । ऐसे खिलाड़ी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता स्थल पर चयन परीक्षण हेतु प्रतियोगिता समाप्ति से तीन दिन पूर्व प्रात: 11.00 बजे तक प्रतियोगिता आयोजक संस्था प्रधान को उपस्थिति देवें। छात्रा खिलाड़ी महिला प्रभारी के साथ उपस्थिति देवें।

11. सभी सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र एवं शिक्षा विभागीय खेल छात्रावासों के संस्था प्रधानों को निर्देशित किया जाता है कि सत्र 2014-15 की राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में खेल विशेष हेतु प्रशिक्षण योजनान्तर्गत चयनित खिलाड़ियों में से ही अपने दल का गठन करे । विद्यालय के अचयनित खिलाड़ियों को सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र/खेल छात्रावास के दल में सम्मिलित नहीं किया जावे। शिक्षा विभाग का विशिष्ट विद्यालय सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के अन्तर्गत प्रवेश लिए खिलाड़ी संबंधित खेल में सीधे ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे, एथलेटिक्स के छात्र अन्य खेलों में भी भाग ले सकते हैं, अन्य खेलों के छात्र एथलेटिक्स में भी भाग ले सकते हैं। इस हेतु विभाग द्वारा राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने पर ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगें। सादुल स्पोर्टस स्कूल, बीकानेर के डे-स्कॉलर विद्यार्थियों का अलग से दल गठन कर अन्य सामान्य विद्यालयों के छात्र दलों की तरह जिला स्तरीय प्रतियोगिता में दल भिजवाया जा सकता है। डे-स्कॉलर को सादुल स्पोर्टस स्कूल, बीकानेर के छात्रावासी खिलाड़ियों के चयनित दल में शामिल नहीं किया जावे ।

12. सत्र 2003-04 से राज्य सरकार के पत्र क्रमांक प.16( ) शिक्षा-6/2002 दिनांक 7.1.2003 की अनुपालना में वर्तमान प्रतियोगिता शुल्क के नियमान्तर्गत संस्कृत शिक्षा के जिले के सभी विद्यालयों से कुल छात्र-छात्रा संख्या के अनुसार सामान्य वर्ग से 5 रूपए एवं आरक्षित वर्ग से 2 रुपए प्रति छात्र-छात्रा की दर से एकत्रित राशि का 50: प्रतिशतऋ राशि राज्य के समस्त संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिकऋ नॉडल अधिकारी को प्रतियोगिताओं के आयोजन से पूर्व जमा करवाने की शर्त पर संस्कृत शिक्षा के खिलाड़ियों को 19 वर्ष एंव 17 वर्ष आयुवर्ग के छात्र वर्ग के निम्न खेलों :-वॉलीबाल, फुटबाल, कबड्डी, खो-खो, बेडमिंटन व कुश्ती ऋशिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित वजनवार में एवं एथेलेटिक्स 19 वर्ष एंव 17 वर्ष छात्र वर्ग के राज्य स्तर पर होने वाले इवेन्ट्स में निदेशालय संस्कृत शिक्षा, राजस्थान को भी विशिष्ठ विद्यालयों की भांति पृथक इकाई मानते हुए राज्य स्तर पर सीधे भाग लेने की स्वीकृति शिक्षा विभागीय नियमान्तर्गत प्रदान की गई है । निदेशालय संस्कृत शिक्षा राजस्थान के 19 वर्ष एंव 17 वर्ष छात्र खिलाड़ियों द्वारा उक्त खेलों में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में पृथक इकाई के रूप में भाग लेने पर उसकी सूचना आयोजक विद्यालयों के संस्था प्रधान को प्रतियोगिता से 15 दिन पूर्व दी जायेगी। राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगितार्थ चयन समिति द्वारा शिक्षा विभाग की निर्धारित प्रक्रियानुसार उन्हे चयन प्रक्रिया में शामिल किया जावेगा। यदि संस्कृत शिक्षा के खिलाड़ी का चयन राष्ट्रीय पूर्व प्रशिक्षण शिविर हेतु होता है तो उसका नाम चयन सूची में निर्धारित संख्या में ही शामिल होगा।

13. टेबल टेनिस, बैडमिंटन एवं लॉन टेनिस में दलीय स्पर्धा के साथ-साथ व्यक्तिगत स्पर्धा का आयोजन भी करवाया जावे । 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा के व्यक्तिगत स्पर्धा के आधार पर ही जिले के दल का गठन चयन विधि द्वारा किया जावेगा । दोनो वर्ग 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा में अच्छे खिलाड़ियों को आगे बढने के अवसर प्रदान करने हेतु टेबल टेनिस, बैडमिंटन व लॉन टेनिस की दलीय स्पर्धा के क्वार्टर फाईनल में पहुंचने वाले दलों के दो खिलाड़ी एवं सेमी फाईनल में पहुंचने वाले दलों के 5 खिलाड़ी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग लेगें । अन्य दलों से पूर्व की भांति 01 ही खिलाड़ी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग ले सकेगा । व्यक्तिगत स्पर्धा हेतु ड्राज डालते समय अच्छे खिलाड़ी को सींडिग दी जावे । इनकी ड्राज दलीय स्पर्धा में सेमी फाईनल में पहुंचने वाले दलों के निर्धारण होने के बाद डाली जावें । क्वार्टर फाईनल में पहुंचने वाले दलों के 2 खिलाड़ियों एवं सेमी फाईनल में पहुंचने वाले दलों के 05 खिलाड़ियों के नाम व्यक्तिगत क्रमानुसार प्रभारी से लिखित में लिये जावे । उसके बाद सीडिंग देकर ड्राज डाली जावे । ड्राज डालते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जावे कि सेमी फाईनल में पहुंचने वाले दलों के प्रथम वरीयता वाले खिलाड़ियों का सेमी फाईनल से पहले मैच न हो सके । टेनिस

प्रतियोगिता के क्वार्टर फाईनल से पूर्व के मैंचों में बेस्ट ऑफ 13 गेम, क्वार्टर फाईनल व सेमी फाईनल में बेस्ट ऑफ 17 गेम तथा फाईनल में बेस्ट ऑफ 3 सैट द्वारा निर्णय किया जाये।

14. खिलाड़ी संख्या जो जिला स्तर पर निर्धारित है वही संख्या उनके लिए राज्य स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में लागू होगी। सुविधा की दृष्टि से सभी स्तरों पर संभागी खिलाड़ियों की संख्या सत्र 2014-15 में निम्न प्रकार से होगी :-

खेल का नाम	सीमावि स्तर (19 वर्ष छात्र-छात्रा)		मावि स्तर (17 वर्ष छात्र-छात्रा)	
	जिला स्तर	राज्य/राष्ट्रीय स्तर	जिला स्तर	राज्य/राष्ट्रीय स्तर
तैराकी	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो
वॉलीबाल	12	12	12	12
हैण्डबॉल	16	16	16	16
हॉकी	18	18	18	18
सॉटबाल	16	16	16	16
फुटबॉल (छात्र)	18	18	18	18
जूडो	वजनवार जूडोका-1	वजनवार जूडोका-1	वजनवार जूडोका-1	वजनवार जूडोका-1
कुश्ती	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1
जिम्नास्टिक	07	07	07	07
बास्केटबॉल	12	12	12	12
क्रिकेट (छात्र)	16	16	16	16
बैडमिंटन	05	05	05	05
टेबल टेनिस	05	05	05	05
कबड्डी	12	12	12	12
खो-खो	12	12	12	12
लॉन टेनिस	05	05	05	05
तीरंदाजी (इण्डियन राउण्ड)	04	04	04	04
तीरंदाजी (फीटा राउण्ड)	04	04	04	04
एथलेटिक्स	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो

नोट : एथलेटिक्स एवं तैराकी में प्रत्येक रिले में खिलाडियों की संख्या चार होगी।

15. एथलेटिक्स व तैराकी 19 व 17 वर्ष आयुवर्ग की छात्र-छात्राओं द्वारा व्यक्तिगत स्पर्धा में विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले प्रथम व द्वितीय, रिले में समय के आधार पर श्रेष्ठ चार, कुश्ती व जूडो के प्रत्येक भार में केवल प्रथम आने वाला, तीरंदाजी इण्डियन व फीटा राउन्डऋ में कुल अंको के 30 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त कर मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी व जिम्नास्टिक में कुल अंको के 40 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त कर मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी वरीयतानुसार निर्धारित संख्या में राज्य स्तर पर भाग लेगें। निर्धारित मानदंड पूर्ण नहीं करने वाले खिलाड़ियों को उक्त खेलों की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में नहीं भिजवाया जावे। यह सुनिश्चित करने का दायित्व संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-नोडल अधिकारीऋ, शिविराधिपति, टीम प्रभारी एवं प्रशिक्षक का होगा। जिम्नास्टिक की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी को ही मेरिट/भाग लेने का प्रमाण पत्र देय होगा। तीरंदाजी इण्डियन व फीटा राउण्डऋ की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 30 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी को ही भाग लेने का प्रमाण पत्र देय होगा लेकिन मेरिट प्रमाण पत्र के लिए न्यूनतम 40 प्रतिशत अंकों की बाध्यता यथावत रहेगी। दलीय स्पर्धाओं में भी दल द्वारा निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने पर दल के सभी सदस्यों को स्मरण/मेरिट प्रमाण पत्र दिये जावेगें। राज्य स्तर पर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण नहीं करने वाले खिलाड़ियों को भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र नहीं दिये जावे। आदेश की अवहेलना करने वाले अधिकारी/कार्मिक के विरूद्ध खेलकूद प्रतियोगिता नियमावली, 2005 के बिन्दु संख्या 10.2.6 के अनुसार कार्यवाही की जावेगी।

16. खिलाड़ी, शारीरिक शिक्षक एवं संस्था प्रधान पात्रता/योग्यता प्रमाण पत्र का भली-भाँति मिलान करें। संस्था प्रधान छात्र की जन्मतिथि, नाम, पिता का नाम, प्रवेशांक स्कॉलरऋ रजिस्टर से मिलान करने के पश्चात छात्र-छात्रा के पात्रता/ योग्यता प्रमाण पत्र को प्रमाणित करें। खेल में भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित योग्यता प्रमाण पत्र के आधार पर ही तैयार किये जाते हैं। अत: बाद में इन प्रमाण पत्रों में दर्शाई गई जन्मतिथि, नाम आदि में परिवर्तन किया जाना संभव नहीं होगा।

17. विद्यालय/जिलों की टीमों के साथ आने वाले शारीरिक शिक्षक/प्रशिक्षक को निर्णायक के रूप में नियुक्त किया जाता है तो सम्बन्धित शारीरिक शिक्षक निर्णायक के रूप में कार्य करेगा। आदेशों की अवहेलना करने वाले के विरूद्ध कार्यवाही की जावेगी।

18. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) जिला स्तरीय आयुवर्ग खेल प्रतियोगिताओं के समेकित परिणाम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व निम्न प्रारूप में उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को निश्चित रूप से भिजवावें:-

क्र. सं.	खेल का नाम	प्रति. स्थल का नाम	प्रति. अवधि	प्रथम तीन स्थानों के परिणाम (विद्यालय के नाम सहित)	संभागी टीमों की संख्या	कुल खिलाड़ी संख्या	निर्णायकों की संख्या	अन्य कार्मिकों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9

गत वर्षों में यह देखने में आया है कि कतिपय जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ही उक्त सूचना भेजी जाती है। अत: भविष्य में सभी जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त निर्धारित प्रपत्र में सूचना

भिजवाना सुनिश्चित किया जावें ।

19. खेलकूदप्रतियोगिता शुल्क गत सत्रों के अनुसार सभी विद्यालयों से निम्न दरों के अनुसार वसूला जावें:-

सामान्य वर्ग	05 रू प्रति छात्र-छात्रा
आरक्षित वर्ग अनु.जाति, (अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग)	02 रू प्रति छात्र-छात्रा

उक्त प्रतियोगिता शुल्क की कुल संगहीत राशि में से 40 प्रतिशत राशि राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु अपने अपने जिलो में आरक्षित रखें। उक्त राशि निदेशालय के आदेशानुसार ही उपयोग में ली जावेगी। शेष रही 60 प्रतिशत राशि का व्यय करने के संबंध में खेलकूद नियमावली 2005 में प्रदत्त निर्देशानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जावेगी । संग्रहित की गई राशि की सूचना निर्धारित प्रपत्र में सत्र में दो बार दिनांक 30-9-2014 एवं 31-3-2015 तक सभी जिला शिक्षा अधिकारी (मा) अनिवार्यत: उप निदेशक (खेलकूद एवं शारीरिक,. शिक्षा) माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर को भिजवायेगें। उक्त प्रतियोगिता शुल्क की राशि राजकीय राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त गैर सरकारी/निजी एवं अनुदान प्राप्त समस्त शिक्षण संस्थाओं द्वारा माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर तक के समस्त विद्यालयों को भुगतान करना अनिवार्य है, चाहें विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेता हो अथवा नहीं। प्रतियोगिता शुल्क का भुगतान नहीं करने वाले विद्यालयों पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-नोडल) अपने स्तर पर नियमानुसार कार्यवाही करें।

20. प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित होने वाली जिला स्तरीय उच्च प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद छात्र-छात्रा प्रतियोगिता में यदि माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के छात्र-छात्रा खिलाड़ी भाग लेते है तो उक्त प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या के आधार पर 5 रूपये (पाँच रूपये) प्रति खिलाड़ी की दर से, जिसके अन्तर्गत सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग सम्मिलित है, के आधार पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वारा अपने जिले की समस्त विद्यालयों से ली गयी प्रतियोगिता शुल्क की 60 प्रतिशत राशि में से जिला शिक्षा अधिकारी (प्रांरभिक) को राशि जमा करवायेंगे। उक्त आदेश प्रारम्भिक शिक्षा राज., बीकानेर के पत्रांक शिविरा/प्रारं/खेकू/स्वाशि/7509/पंचाग/71दिनांक: 27-8-01 के अनुसार इस कार्यालय के पत्रांक-:शिविरा/मा/खेलकूद-3/35101/वार्षिकपंचाग /2001-02/26 दिनांक 30-8-2001 से जारी किया जा चुका है ।

21. जिला एवं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों के भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र प्रतियोगिता स्थल पर खिलाड़ी को अनिवार्यत: वितरित किया जावें ।संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं उपनिदेशक इस ओर विशेष ध्यान देते हुए इसकी पालना सुनिश्चित करें । प्रमाण पत्र खिलाड़ी के योग्यता प्रमाण पत्र के फोटो से मिलान करने के पश्चात खिलाड़ी के प्रतिपर्ण पर हस्ताक्षर लेकर उपस्थित खिलाड़ी को ही दिया जावे । अनुपस्थित खिलाड़ी के प्रमाण पत्र को अन्य किसी को नहीं दिया जावे । प्रमाण पत्र पर क्रमांक छपवाने अनिवार्य है तथा प्रमाण पत्र का प्रतिपर्ण गत सत्रों की भाँति छपवाया जावे एवं अभिलेख में सुरक्षित रखा जावे। मेरिट प्रमाण पत्र प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को ही दिया जावे। मेरिट प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाले खिलाड़ी को स्मरण प्रमाण पत्र भी दिया जावे । व्यक्तिगत एंव दलीय स्पर्धा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को भी मेरिट प्रमाण पत्र दिया जावे । कुश्ती व जूडो में तृतीय स्थान का मेरिट प्रमाण पत्र रेपीचार्ज पद्धति के आधार पर दो खिलाड़ियों को देय होगा ।

22. तैराकी, कुश्ती, जूडो, जिम्नास्टिक, लानटेनिस एवं तीरंदाजी 19 वर्ष एवं 17 वर्ष आयुवर्ग की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ खेलानुसार एक ही स्थान पर आयोजित होती है, जिसमें जिले के सभी आयु वर्ग के छात्र-छात्रा एक ही स्थान पर भाग लेते है । जिस जिले में दो जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) है, प्रतियोगिता स्थल पर दल के साथ जाने वाले दल नायक, प्रशिक्षक, शा.शिक्षक के आदेश जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी द्वारा प्रसारित किये जावे। छात्रा दल के साथ महिला अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक/महिला प्रभारी को ही लगाया जावे। अपरिहार्य कारणों से महिला अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक के स्थान पर पुरूष अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक को लगाया जाता है तो प्रतियोगिता आयोजक द्वारा प्रतियोगिता स्थल पर पुरूष अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक आदि की एवं छात्रा खिलाड़ियों के आवास की व्यवस्था अलग-अलग स्थानों पर की जावे । यह ध्यान रखा जावें कि छात्रा टीम के साथ महिला प्रभारी अनिवार्य भेजी जावे। यह सुनिश्चित करना कि छात्राओं के साथ महिला प्रभारी भेजी गयी है या नहीं, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) का उतरदायित्व होगा। जिला स्तरीय प्रतियोगिता स्थलों पर निर्णायक मंडल/चयन समिति में निर्धारित संख्यानुसार ही शारीरिक शिक्षकों को लगाया जावे । इस हेतु प्रतिनियुक्ति आदेश जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) के हस्ताक्षरों द्वारा ही जारी किये जावे। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत अधीनस्थ अधिकारी/उप जिला शिक्षा अधिकारी (शा.शि.) द्वारा प्रतिनियुक्ति आदेश अलग से प्रसारित नहीं किये जावे ।

23. **S.G.F.I. (गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया) द्वारा कुश्ती, जूडो, कबड्डी, एवं एथेलेटिक्स प्रतियोगिता हेतु गत सत्र से वजन निर्धारण एवं इवेन्ट केटेगरी के नये मानदण्ड निर्धारित किये हैं, जिसकी प्रति आपको इस कार्यालय के पत्र दिनांक 14.08.2012 के द्वारा भेजी जा चुकी है। अत: जिला/राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं को इसी अनुरूप सम्पन्न करावें। निर्धारित मानदण्ड परिशिष्ट 9 पर संलग्न हैं।**

24. एथलेटिक्स एवं तैराकी में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित स्पर्धा के अनुसार ही जिला/राज्य स्तर पर प्रतियोगिताओं में स्पर्धाएँ करवायें। इस हेतु निर्धारित स्पर्धा एवं इन स्पर्धाओं हेतु निर्धारित मानदण्ड परिशिष्ट:-7 से 8 पर संलग्न है ।

25. निदेशालय पृथकीकरण के पश्चात जिन जिलों में दो जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिकऋ कार्यरत है उन जिलों सें राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में एक ही दल भाग ले सकेगा। जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित करवाने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथमऋ नॉडल अधिकारी होगें।
26. जयपुर जिले से पूर्व की भाँति राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के दो दल भाग ले सकेगें। छात्रा खिलाड़ियों का एक ही दल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगा। छात्रा खिलाड़ियों का जिला स्तरीय प्रतियोगिता हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी होगें।
27. चयन समिति द्वारा पूर्व राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर हेतु जो सूची बनाई जाती है वह प्रतियोगिता स्थल पर घोषित नहीं की जावे।
28. इस कार्यालय के आदेश क्रमांक शिविरा/माध्य./खेलकूद-4/35151/खेलकलैण्डर/2013-14/92 दिनांक 08.01.14 से इस कार्यालय द्वारा आयोजित/संचालित होने वाली विद्यालयी विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं यथा क्षेत्रीय/जिला/राज्यस्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं खेल गतिविधियों तथा राष्ट्रीय प्रतियोगितार्थ चयन परीक्षण में भाग लेने हेतु स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया (SGFI) द्वारा अधिकृत/मान्यता प्राप्त 5 इकाईयों। (Affiliated Units) यथा C.B.S.E. Sports Organisation, I.P.S.C., Vidya Bharti, K.V.S., N.V.S., के सम्बद्ध विद्यालयों/अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को राजस्थान राज्य इकाई के अन्तर्गत शामिल होने के लिए प्रतिबन्धित किया गया है। इसी क्रम में आदेश क्रमांक: शिविरा/माध्य/खेलकूद-2/35446/ खेल प्रतियोगिता शुल्क/2013-14/126 दिनांक:02.07.2014 द्वारा उक्त 5 इकाईयों के अधीन संचालित विद्यालयों से शिक्षा विभागीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताएं साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रवृतियां आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका-2005 के प्रतियोगितार्थ प्रतियोगिता शुल्क नियम 12.1 के अन्तर्गत सत्र 2014-15 से खेलकूद प्रतियोगिता शुल्क वसूल नहीं किया जाने एवं सत्र 2014-15 से पूर्व की खेलकूद प्रतियोगिता शुल्क की राशि अगर बकाया है, तो उसे नियमानुसार वसूल किये जाने के निर्देश प्रसारित किये जा चुके है, की पालना सुनिश्चित करें।
29. राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में अधिक आयु के खिलाड़ियों को खेलने से रोकने तथा निर्धारित आयु के खिलाड़ियों को खेल का पर्याप्त अवसर देने हेतु राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं के आरम्भ से एक दिन पूर्व आयोजकों द्वारा गठित अधिकृत मेडिकल बोर्ड द्वारा सभी सम्भागियों का आयु सम्बन्धी मेडिकल परीक्षण करवाया जावेगा। इस हेतु समस्त सम्भागियों को प्रतियोगिता आरम्भ से एक दिन पूर्व प्रात: 10.00 बजे तक प्रतियोगिता स्थल पर उपस्थिति देनी होगी। अन्यथा दल प्रतियोगिता से वॅचित होंगे।
30. सभी खेलों में संबंधित खेल फेडरेशन के नवीनतम नियम मान्य होंगे परन्तु आयोजन की दृष्टि से टाई ब्रेक, समय, सैट आदि के सम्बन्ध में शिक्षा विभागीय नियम मान्य होंगे। लीग प्रणाली तथा लीग-कम-लीग अर्थात सुपर लीग प्रणाली से खेले जाने वाले सभी खेलों के मैचों में विजेता दल को 2 अंक व पराजित दल को 0 अंक एवं बराबर रहने वाले दलों को 1-1 अंक दिया जावेगा। विद्यालयी जिला/राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में लीग, लीग-कम-लीग अर्थात सुपर लीग प्रणाली से खेले गये समस्त खेलों के मैचों में टाई पड जाने अर्थात् अंको के आधार पर खेल परिणाम बराबर रह जाये तो टाई निम्नानुसार तोड़ी जावे :-

मैच जब पहली लीग प्रणाली या लीग-कम-लीग प्रणाली पर खिलायें और दल बराबर रह जाते हैं तो प्राप्त गोल/स्कोर/सेट के औसत को आधार मान कर टाई तोड़ी जावे। गोल/स्कोर/सेट का तात्पर्य है "जिस दल के पक्ष में जितने गोल/स्कोर/सेट हुए है उनमें से उसी दल के विपक्ष में हुए गोल/स्कोर/सेट का अन्तर निकाल कर टाई तोड़ी जावे। यदि इस पद्धति से निर्णय की स्थिति न बन पाये तो जिस दल के पक्ष में अधिक संख्या में गोल/स्कोर/सेट रहे, उसे ही विजेता घोषित कर दिया जावे परन्तु यह गणना प्रत्येक स्तर के क्रम में अर्थात् लीग के लिए अलग तथा लीग-कम-लीग (सुपरलीग) के लिए अलग-अलग लागू होगी दूसरे शब्दों में पहले लीग मैचेज के रहे परिणाम लीग-कम-लीग प्रणाली सुपरलीगऋ में लागू नहीं होंगे। लीग या सुपर लीग प्रणाली से खेले जाने वाले मैचों में टीमों की संख्या दो (2) ही रह जाये या दो ही हो तो नॉक आउट प्रणाली की भांति उस मैच का खेल विशेष केअनुसार परिणाम निकाल कर आगामी मैच के लिए दल का निर्धारण किया जावेगा।
31. विद्यालयी/क्षेत्रीय/जिला/राज्य स्तरीय विद्यालयी कुश्ती/जूडो में जिस केटेगरी/वजन के लिए जिस खिलाड़ी का चयन किया गया है, चयन परीक्षण भी उसी केटेगरी /वजन के खिलाड़ियों का आयोजित कर वजनवार दल गठन किया जावे एवं उसी वजन/केटेगरी में ही वह खिलाड़ी क्षेत्रीय/जिला/राज्य/राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेगा।
32. एथलेटिक्स में प्रत्येक इवेन्ट् (दौड़ के अलावा) में खिलाड़ी को तीन-तीन अवसर दिये जावेगें।
33. एथलेटिक्स एवं तैराकी की चैम्पियनशिप हेतु रिले में प्रथम, द्वितीय व तृतीय को क्रमश: 10-6-3 अंक तथा अन्य स्पर्धाओ हेतु 5-3-1 अंक दिये जावेंगें।
34. 17 व 19 वर्ष आयु वर्ग के छात्र-छात्रा टीम खेल व व्यक्तिगत खेलो में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व जिला स्तरीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जावें।
35. टीमों के अभिलेख, ध्वज आदि प्रतियोगिता स्थल पर ले जाने/जमा करवाने का उतरदायित्व संबंधित टीम/दल के दलाधिपति/दलनायक का होगा।

● (ओंकार सिंह) ● निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

● क्रमांक : शिविरा/मा/खेलकूद-3/35101/वार्षिकपंचांग/2014-15/ दिनांक: 28-07-2014

(कृपया राज्यस्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता आयोजन के समूहवार खेल, आयोजन तिथि एवं आयोजक विद्यालय की सूचना विभागीय वेबसाइट पर अवलोकन करें।)

शिक्षक सम्मान

सम्मान की पात्रता और शिक्षक

❒ डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता

पुरातन युग में शिक्षा-दीक्षा का कार्य तपोवनों व गुरुकुलों में हुआ करता था। गुरुकुल नगर के कोलाहल से दूर प्रकृति के शान्त व सुरम्य वातावरण में स्थित हुआ करते थे। समाज में गुरु का पद अत्यन्त पूजनीय माना जाता था। शिष्यों में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा हुआ करती थी। कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने राम और कृष्ण जैसे प्रमुख अवतारों के गुरु के प्रति श्रद्धाभाव को निम्न पंक्तियों में सशक्त रूप से उद्धृत किया है-

तू वशिष्ठ का वंशज है, तू ब्रह्मतेज का अधिकारी।
तेरे चरणों में नतमस्तक है, रघुकुल राम धनुधारी।।
तेरे इंगित पर विप्लव का ज्वार उठा करता था।
कुरुक्षेत्र में अर्जुन का गाण्डीव नमन करता था।।

देश का इतिहास साक्षी है कि कालान्तर में राजा-महाराजाओं ने भी अपने गुरुओं को यथेष्ट सम्मान दिया है। बड़े-बड़े राजमुकुट अपने आसन से उठकर गुरु के चरणों में झुकने में गर्व की अनुभूति करते थे। यूनान के सम्राट सिकन्दर और उसके गुरु सुकरात के संवाद को कवि ने निम्न पंक्तियों में अत्यन्त प्रवीणता के साथ प्रस्तुत किया है-

सिकन्दर ने कहा सुकरात से क्या तुमको लाऊँगा।
विजय डंका बजाकर हिन्द से जब लौट आऊँगा।।
कहा सुकरात ने राजन् विजय कर जब यहाँ आना।
हमारे वास्ते भारत से एक ज्ञानी गुरु लाना।।

उक्त संवाद इस बात को पुष्ट करता है कि प्राचीन काल में भारत के ऋषि-मुनियों और गुरुओं की ख्याति समस्त विश्व में व्याप्त थी। भारत से ही आध्यात्मिक ज्ञान की किरणें समस्त विश्व में प्रसारित हुई है।

समय परिवर्तनशील है। वैश्वीकरण के दौर में विदेशी सभ्यता व संस्कृति के आगमन से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन आया है। मूल्यों के संक्रमण से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा। विषम सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों तथा बढ़ते हुए उपभोक्तावाद ने शिक्षक को भी व्यावसायिक बनने को विवश कर दिया। शिक्षक की अपने दायित्वों से विमुखता और समाज में उसके प्रति अनास्था निसंदेह राष्ट्रीय चिंता का विषय है। अपने सम्मान की पुर्नस्थापना तथा अक्षुणता स्थापित करने हेतु शिक्षक समुदाय अपने स्तर निम्न प्रयास कर सकता हैं-

- शिक्षक को छात्रों के सम्मुख आभासी बड़प्पन का मुखौटा उतार कर उन्हें आत्मीयता और अन्तरंगता प्रदान करनी होगी। शिक्षक को छात्रों का सखा एवं स्नेहिल मार्गदर्शक बनना होगा।
- शिक्षक को निरन्तर अध्ययनशील रहते हुए अपने ज्ञान को आधुनिकतम बनाए रखने की आवश्यकता है, ताकि वह छात्रों की शैक्षिक समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान करते समय अपने आपको बौना महसूस न करे।
- शिक्षकों को यह समझना होगा कि पुस्तकीय ज्ञान और कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त योजनाबद्ध ढंग से आयोजित पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से भी बालक सहज एवं प्रभावी रूप से ज्ञान प्राप्त करता है।
- शिक्षक में सामाजिक चातुर्य, उचित निर्णय शक्ति, जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण, परिस्थितियों का सामना करने का साहस, मिलनसारिता आदि सामाजिक गुणों का होना भी अपेक्षित है।
- शिक्षक का पद मानवीय गुणों के संवाहक के रूप में प्रतिष्ठित है। इस निमित्त शिक्षक को छात्रों के सम्मुख अपने आचरण और व्यवहार द्वारा नैतिक मूल्यों के आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए। महात्मा गाँधी के शब्दों में **मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है।** किशोरवय के छात्र आदेशों व उपदेशों से कम तथा अनुकरण से ज्यादा सीखते हैं।
- शिक्षक को अद्यतन शैक्षणिक तकनीक का ज्ञान होना आवश्यक है, ताकि वह विषयों के जटिल ज्ञान को सरल व बोधगम्य बनाकर प्रभावी संप्रेषण कर सके। शिक्षण की परम्परागत विधियाँ नए परिवेश में अधिक प्रभावी साबित नहीं हो रही है। अतः नवीन सन्दर्भों में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानों एवं नवाचारों को लागू करने की आवश्यकता है।
- शिक्षण कर्म अन्य व्यवसायों से भिन्न तथा ऊपर है। अतः शिक्षक को व्यावसायिक प्रवृत्ति त्याग कर राष्ट्र निर्माण के इस पावन यज्ञ में अपनी आहुति देनी होगी। हमेशा अभावों व समस्याओं का ढिंढौरा पीटने के बजाय साधारण परिस्थितियों में असाधारण कार्य करके दिखाने होंगे।
- शिक्षक को दलगत राजनीति से दूर रहते हुए समाज में अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व व त्यागमय जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

शिक्षक को सम्मान माँगने या चाहने से नहीं, वरन् अपने अन्दर पात्रता पैदा करने से मिलता है। शिक्षक को अपने कार्य एवं व्यवहार में इतनी बुलन्दी पैदा करनी होगी कि शिक्षक का सम्मान महज एक औपचारिकता नहीं, बल्कि समाज की एक सहज प्रक्रिया बन जाए। शिक्षक को यथोचित सम्मान मिलने से राष्ट्र भी स्वतः समृद्ध होगा और भारत पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित हो सकेगा।

शिक्षकों को अपने गरिमामय स्थान को सदैव दृष्टि में रखना चाहिए। इससे उनसे कभी कोई गलत काम हो ही नहीं सकता। जिसके हृदय की आँखें खुली रहती है, उससे जगत में सब सही ही होता है और ऐसे महान शिक्षकों के मान सम्मान की कोई कमी नहीं होती।

पूर्व सहायक निदेशक (अनौप. शिक्षा)
32-शक्ति नगर, कोटा-324009
मो. 9799967932

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

हिन्दी दिवस विशेष

हिन्दी विकास में शिक्षक का योगदान

❒ वृद्धिचन्द गोठवाल

हिन्दी को राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त है अतः हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि राष्ट्रभाषा की उन्नति बढ़ाएँ और उसका मान बढ़ाएँ। धन्य है वह जिसकी मातृभाषा हिन्दी है। यों तो हिन्दी हमारे देश की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के नाम से सारी दुनिया में विख्यात है। हिन्दी को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहा जाए तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हमारे देश में सर्वाधिक लोगों की भाषा हिन्दी है, जिसको अच्छी तरह समझते हैं और बोलते एवं लिखते हैं अर्थात-

हिन्दी भारत की परिभाषा
हिन्दी माथे का चन्दन है
अपनी प्यारी भाषा हिन्दी का
कोटि कोटिशः वन्दन है।

यहाँ तक कि विश्व के लगभग 200 विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है। इसकी लोकप्रियता और विशेषताओं को देखते हुए शिक्षक समुदाय को हिन्दी भाषा के विकास में रुचिशील होकर अपना योगदान करना चाहिए। हिन्दी विषय के शिक्षक ही नहीं, बल्कि प्रत्येक शिक्षक हिन्दी भाषा की विशेषताओं एवं महत्व का प्रचार-प्रसार करे। इसका आशय यह नहीं कि अंग्रेजी का विरोध हो, किन्तु हमारे देश की राष्ट्र भाषा के विकास को प्राथमिकता देना चाहिए।

हिन्दी जन गण मन की भाषा है। सन् 1949 में संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को राजभाषा का पद मिला था। बड़े गौरव की बात है कि हमारे देश की परम्पराएँ, रीति-रिवाज, कथाएँ, लोक साहित्य के विविध पक्ष, देवी-देवताओं, तीर्थ स्थलों आदि के माध्यम से सारे भारत में हिन्दी भाषा ने लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

बालक तो मानवता का ध्रुवतारा है और राष्ट्र अनमोल निधि है, जिसे शिक्षक ही हिन्दी भाषा को बढ़ावा देकर पूर्ण सुरक्षित करने का उत्तरदायित्व पूरा कर सकता है। मेरे एक हिन्दी शिक्षक श्री माणिक्य लाल शर्मा थे उनका मूल मंत्र था-**शुद्ध आचरण एवं शुद्ध तथा सुन्दर लिखावट।** उनका हिन्दी अध्यापन का तरीका आज भी प्रेरणा देता है। शब्द की त्रुटि को कक्षा में श्यामपट्ट पर सही तौर पर लिखने का अभ्यास एवं उत्तर पुस्तिका में दस-दस मर्तबा सही लिखाते थे। यह विधि इतनी प्रभावी थी कि विद्यार्थी में शुद्ध लिखने की क्षमता उत्पन्न हो जाती। हिन्दी भाषा का महत्व बढ़ाने हेतु विद्यार्थियों को सार्थक अध्ययन कराना और उनका परीक्षण कराना शिक्षक को अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

विधिवत अध्यापन, रुचिपूर्वक, व्याकरण सम्मत ज्ञान नहीं छात्रों में हिन्दी भाषा के प्रति अभिरुचि पैदा करना है। फिर आज का विद्यार्थी एवं अभिभावक तो साहित्य और शिक्षक दोनों को अच्छी तरह परखता है।

हम 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं। वर्षभर में एक दिन हिन्दी भाषा के गुणगान करना और धारणाएँ व्यक्त कर देना राष्ट्रभाषा के प्रति सच्चा प्रेम नहीं कहा जा सकता। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं प्रत्येक देशवासी को योजनाबद्ध हिन्दी के विकास में योगदान करना चाहिए। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने वर्षों पूर्व उद्घोष किया था-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

अतः कहना होगा हिन्दी भाषा के माध्यम से ही देशवासियों की जिजीविषा, राष्ट्र प्रेम, आस्था वादिता, कर्त्तव्यनिष्ठा, सहिष्णुता, दायित्व बोध एवं समन्वय वादिता को उजागर किया जा सकता है। इनके लिए गली-गली में कुकुरमुत्तों की भांति खुलने वाले अंग्रेजी भाषा के विद्यालयों पर चिन्तन-मनन करने की जरूरत है, क्योंकि विद्यार्थी न तो हिन्दी में पारंगत हो रहा है न अंग्रेजी में। तब हिन्दी पढ़ने की बजाय अंग्रेजी से प्यार क्यों होने लगा है? मैं पूर्ण आत्मविश्वास से कह सकता हूँ चाहे कितना ही झंझावत, घात-प्रतिघात हो लेकिन हिन्दी का जो स्थान हम भारतीयों के मन में है उसे छीना जाना सम्भव नहीं है, बल्कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। बस उसके प्रति शिक्षक का अनुराग और तन-मन समर्पित होना चाहिए। अंग्रेजी का धृतराष्ट्र मोह के त्याग से ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास होगा एवं इसका सम्मान होगा।

आज के विद्यार्थी एवं शिक्षक मिलकर हिन्दी भाषा को सुरक्षित रखते हुए उसे निरन्तर विकसित कर सकते हैं। अब केवल चिन्तित बनने से नहीं, बल्कि चिंतक बनना आवश्यक है। अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि इक्कीसवीं सदी के अन्त तक हिन्दी के सम्मुख अन्य कई दूसरी भाषाएँ प्राणहीन हो जाएगी। देखा गया है भाषा के साथ कई लोग खिलवाड़ करते हैं लेकिन वे आज हैं, कल नहीं रहेंगे लेकिन हिन्दी सदा रहेगी। इस हेतु पूर्व की भांति प्राथमिक स्तर के शिक्षण में श्रुतलेख, सुलेख लिखाया जाए एवं शिक्षक मौलिक चिन्तन से हिन्दी के विकास में श्रम एवं समय लगाए। हिन्दी की महिमा में कहा गया है-

हिन्दी है देवों की वाणी
परम पुरातन सुखद सुहानी।
हिन्दी उतनी ही पावन है
जितनी गंगा माँ का पानी।।

विद्यालय स्तर पर शिक्षकों का यह कर्तव्य बनता है कि वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उसे लोकप्रियता प्रदान करने के लिए प्रयास करें। आज लगभग सभी परीक्षाएं हिन्दी माध्यम से आयोजित की जाने लगी है। इतना ही नहीं, हिन्दी भाषा में परीक्षा में सम्मिलित होने वालों का परिणाम भी अच्छा आ रहा है। अब तो बस हमें मन बनाने एवं मानने की बात है। हिन्दी को उसका उचित स्थान अवश्य मिलकर रहेगा। इसके लिए हिन्दी में रचित साहित्य को पढ़ा, समझा और उस पर मनन करना चाहिए।

पूर्व व्याख्याता-हिन्दी
गौतम आश्रम के पास,
पो. कपासन (चित्तौड़गढ़)
मो. 9414732090

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

शिक्षा एवं शिक्षक

प्राणवान शिक्षा : शिक्षक एवं समाज

❒ हरीश कुमार वर्मा

क्या है प्राणवान शिक्षा ?

मानव मस्तिष्क जिज्ञासु व क्रियाशील है और प्रयोग की जननी। आज चारों ओर जो विकास दृष्टिचोर हो रहा है, वह निरन्तर किये गये अनुसंधानों व प्रयोगों का ही परिणाम है। इसलिए गतिशीलता को जीवन का सूचक माना गया है, तो स्थिरता को मृत्यु का प्रतीक।

इसी तरह शिक्षा भी एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित करने के साथ उसमें संशोधन व संवर्धन करना है, जिससे शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् शिक्षार्थी समाज की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं की पूर्ति कर सके, क्योंकि शिक्षा की प्रखरता तभी बनी रह सकती है, जब वह समय व समाज के अनुकूल हो।

प्रश्न उठता है कि प्राणवान शिक्षा है क्या? प्राणवान शिक्षा कोई विशेष शिक्षा प्रणाली का नाम नहीं वरन् ऐसे नवाचारों से है, जो समय के साथ शिक्षा को जीवन्त बनाए हुए हों। साधारण शब्दों में कहे तो ऐसी शिक्षा जिसमें जीवन्तता हो वह प्राणवान शिक्षा है। शिक्षा को समयानुसार बनाये रखने में निरन्तर परिवर्तन आवश्यक है।

परिवर्तित परिस्थितियों में पुरानी मान्यता एवं ख्याति प्राप्त विधियाँ भी प्रभावहीन हो जाती है। यदि महाभारत का युद्ध आज के युग में लड़ा जाए तो कौरवों एवं पाण्डवों को परम्परागत अस्त्र-शस्त्रों के स्थान पर आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों को उपयोग में लाना पड़ेगा अन्यथा उस युग के भीम, द्रोण, भीष्म, अर्जुन जैसे योद्धा भी टेंक, मशीनगन व परमाणु बम से टक्कर लेने में असमर्थ रहेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में यह बात लागू होती है। शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, अध्यापयन विधियों, पाठ्य सहयोगी क्रियाओं, मूल्यांकन, विद्यालय प्रशासन आदि क्षेत्रों में परम्परा से हटकर नई दिशा में किये गये प्रयास शैक्षिक नवाचार कहलाते हैं, जो शिक्षा को प्राणवान बनाते हैं या यों कहें कि नवाचार वह ग्रीस है,

जिससे शिक्षा रूपी मशीन से विभिन्न पुर्जे अतिरिक्त गति प्राप्त करते हैं, ताकि उनमें जीवन्तता बनी रहे।

विशेष रूप से 1984 से ग्रीष्मावकाश में किग्राशील अवकाश योजना प्रारम्भ 'शिक्षा में नूतन प्रयोग' खोज एवं आविष्कार या कोई भी परिवर्तन जो किसी कार्यक्रम की वर्तमान स्थिति में, संस्थात्मक व गुणात्मक अभिवृद्धि करे, इसे ही हम नवाचार कहेंगे। यदि यह प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में है तो प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित नवाचार कहलायेगा तथा माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित है तो माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित नवाचार होगा।

नवाचार उसके उपयोगकर्ता पर निर्भर रहे। कोई नवाचार किसी एक उपयोगकर्ता के लिए नवाचार है, किन्तु दूसरे के लिए नहीं। वर्तमान परिस्थिति में साधन स्रोत, उपलब्धियों के आधार पर आप स्वयं भी अपनी सूझ-बूझ से नवाचार का प्रयोग कर सकते है।

नए ज्ञान का विस्तार करना जैसे कि कहावत है कि 'पहनने वाला ही जानता है कि पांवों में जूता कहां चुभता है' अतः आप स्वयं अपनी कक्षा की समस्या हल कर गहन अध्ययन के बाद नया हल निकाल सकते हैं, वही नवाचार होगा। कक्षा में नवाचार के दो क्षेत्र है, शैक्षिक व सहशैक्षिक नवाचार। शैक्षिक नवाचार के अन्तर्गत विद्यालय में बालक भिन्न-भिन्न रुचि व बुद्धिलब्धि के आते हैं अतः उनकी व्यक्तिगत कठिनाई का पता लगाकर उन्हें अध्यापन कराया जाता है, इस हेतु शैक्षिक तकनीक का उपयोग किया जाता है जैसे रेडियो, टेप, टी.वी., कम्प्यूटर प्रोजेक्ट आदि के द्वारा बालकों की विभिन्न समस्याओं का पता लगाया जाता है, ताकि वे अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सके।

सहशैक्षिक नवाचार के अन्तर्गत विज्ञान क्लब, भाषण, वाद-विवाद प्रदर्शनी, नाटक, कठपुतली, मनन कुटीर, आरोग्य मंदिर, योगासन, चार्ट्स, मॉडल व आशुरचित उपकरणों द्वारा शिक्षण कराया जाता है। नवाचारों में क्रियान्वित हो रहे हैं। जैसे शिक्षाकर्मी, आश्रम विद्यालय, डी.आर.डी.ए., सर्वशिक्षा अभियान, जीवन कौशल शिक्षा आदि।

नवाचारों के क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण है, उसे भी अपनी शैक्षिक योग्तया में अभिवृद्धि करना तथा विभिन्न अभिनव प्रशिक्षणों के माध्यम से नवीन जानकारी प्राप्त करना होगा।

आज सिद्धान्त बदल रहे हैं, ऐसे में शिक्षक का कार्य ज्ञान का केवल रखरखाव करना नहीं हो सकता है। वह पूरे समय छात्रों से सम्बन्धित रहने वाला साथी है, बदलते जीवन मूल्यों के कारण शिक्षक की भूमिका ही बदल रही है। जिस तरह डॉक्टर, मानव शरीर में आये विकारों को शल्य क्रिया का इलाज द्वारा उसे नया जीवन देता है, ठीक वैसे ही शिक्षा में डॉक्टर का शिक्षक को भी शिक्षा में उत्पन्न विकृतियों का पता लगा कर उसे पुनः प्राणवान बनाना है।

बालक कोरी स्लेट नहीं, जिस पर अध्यापक सभ्यता का पास अंकित कर ले। वह एक क्रियाशील सचेतन प्राणी है, स्कूल में प्रवेश

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

के समय वह चार बुनियादी संवेग लेकर आता है, संवाद करना/निर्माण करना/प्रश्न पूछना तथा स्वयं को अभिव्यक्त करना। प्राणवान शिक्षा वही होगी, जो इन संवेगों को उपयुक्त दिशा प्रदान करें। वर्तमान समय में शिक्षा में एक मात्र लिखना, पढ़ना गणना आकृतियाँ बनाना, तथ्यों विषय में दूसरों के मतों को याद करना व कंठस्थ करना मात्र नहीं है, वरन सीखता है जो कि एक सक्रिय प्रक्रिया है एवं शिक्षा को प्राणवान बनाए रखने का एक अचूक हथियार भी।

एक चीनी कहावत है–'किसी को भोजन देने के बदले, भोजन बनाना' सिखाये और हो सके तो भोजन बनाने के उपकरण बनाना सिखा दें। क्योंकि पकी–पकायी खाने की प्रकृति प्रमाद का द्योतक है, ठीक ही कहा गया है। एक औसत दर्जे का शिक्षक बताता है, अच्छा शिक्षक समझाता है और उससे भी अच्छा शिक्षक प्रदर्शित करता है और ये ही शिक्षा को प्राणवान बनाये रखने का मंत्र है।

केवल पाठ्यक्रम के समुद्र में छात्रों का नहलाना ही पर्याप्त नहीं है। एक सफल शिक्षक बालक की हर गतिविधि के साथ सक्रिय भूमिका निभा कर एक निष्क्रिय बालक को गतिशीलता से भरता है ताकि वह अनवरत गति से समय के साथ चलता रहे। शिक्षा को प्राणवान बनाये रखने का एक और गुण है–प्रशंसा, तभी तो अच्छा शिक्षक तारीफ में कंजूसी नहीं करता, क्योंकि तारीफ पाकर बालक दुगुने उत्साह एवं जोश से कार्य कर सकता है। तनाव व थकान से दूर रहता है।

प्राणवान शिक्षा का एक और पहलू है पाठ्य सहगामी क्रियाएं जैसे उत्सव पर्वों की प्रवृत्ति, आजकल गुमनामी में अंधेरे में खोती जा रही है। जैसे महाकाव्यों के प्रणेताओं ने उर्मिला जैसे पात्रों को उपेक्षा में तारघर में डाले रखा, उसी तरल किसी समय का यह नवाचार भी विद्यालय में आज लापरवाही का शिकार हो रहा है। जो शिक्षा को चेतनाशून्य कर रहा है। कुछ सामयिक प्रश्न शिक्षक के मस्तिष्क में उठने चाहिए जैसे कक्षा के कोने में चुपचाप खोया बालक सुकरात बन सकता है, हाथों व उंगलियों को नचाने वाली कोई बालिका नर्तकी, मनन विचारों में डूबा कोई विवेकानन्द बन सकता है। खिड़की के बाहर झाँकता प्रकृति के अद्भुत रहस्यों में उलझा जगदीश चन्द्र या तेज भागता कोई मिलखा सिंह बन सकता है, से अनन्त संभावनाओं को जुटाता है विद्यालय और सूत्रधार बनना होगा शिक्षक को। बालकों को उड़ान भरने के इच्छुक नन्हें परिन्दों के रूप में देखना चाहिए, उन्हें खुली हवा व मुक्त गगन देना ही शिक्षक का सार्थक प्रयास होगा।

प्राणवान शिक्षा और समाज

यह मानना गलत है कि बालक कोरे कागज हैं उनमें भिन्नताएँ होती हैं, शरीर का ढांचा वंशानुगत है, परन्तु शेष वातावरण व परिस्थितियों पर निर्भर होता है। परिस्थिति निर्माण में सहायक हैं पूरा समाज, जिसमें शिक्षक भी है अभिभावक भी व प्रशासन तंत्र भी, नैतिक मूल्यों की शिक्षा बालक इसी समाज से प्राप्त करता है। आज बालक समाज में कई प्रकार के प्रदूषित विचारों से ग्रसित है, जिसका प्रमुख कारण जीवन मूल्यों में कमी है।

बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षक, समाज एवं अभिभावक तीनों ही महत्वपूर्ण घटक हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षक एवं अभिभावकों का दायित्व है बदलते परिवेश में बालकों को शिक्षा के अवसर प्रदान करावें तथा उन्हें सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करने में सार्थक बने, जिससे वे अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो सके।

शिक्षक को बालक को आधे भरे पानी में गिलास के समक्ष देखना होगा, खाली नहीं। प्रत्येक पल कक्षा में शिक्षक द्वारा बालकों को स्नेह, प्रोत्साहन व सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

शिक्षक के लिए कहा भी गया है, गुरु नहीं तुम मित्र बनों अब, 'नन्हे–मुन्नों को मुक्त करो अब।'

प्रेरक वातावरण बनाओ–भय–तनाव से मुक्ति दिलाओ। बाल–मन मानवीयता एवं नवीनता चाहता है। वह बहुत जल्दी किसी से ऊब जाता है, उस चंचल मन को चाहिए, कुछ नयापन। चाहे खेल का मैदान हो, प्रार्थना सभी का मंच हो, स्काउट हो या शिविर, बस उसे तो अवसर दो। इन्ही अवसरों से वह अपनी प्रतिभाओं को मूर्त रूप देगा।

शिक्षक अपने पद से नहीं ज्ञान से होता है, उसे निरन्तर ज्ञान की वृद्धि कर योग्यता बढ़ाना है, उसका परम दायित्व होगा।

आज समय आ गया है, कि शिक्षक अपने ज्ञानवान होने का दंभ नहीं पाले, वह ज्ञान मार्ग को पाये है तभी तो वह एक फेसीलिटेटर के रूप में दायित्व का वहन कर सकेगा। अन्त में हम इस संदेश के माध्यम से शिक्षा को जीवन्त बनाये रखने हेतु एक नूतन, विचार प्रस्तुत कर सकते हैं–

'गंगा प्रदूषित हो सकती है पर गंगोत्री को तो पवित्र रहना होगा, मैली गंगा का प्रदूषण तो देर–सबेर दूर हो ही जायेगा, लेकिन गंगोत्री ही यदि प्रदूषित हो गई तो कोई उपचार नहीं होगा, अतः पहली आवश्यकता है, गंगोत्री को पवित्र रखना, ताकि गंगा की प्राणवत्ता बनी रहें एवं अनवरत गति से जीवन्त का संचार करती रहें।

यहीं प्राणवान शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होगा। आइये हम गुणगान करें। 'बच्चे तो फूल हैं, जिन्हें एहसास नहीं है, गलत सही का, शिक्षक को ही माली बनकर, इस उपवन को महकाना है।'

–सेवानिवृत्त, प्रधानाचार्य,
15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स, हिरणमगरी,
सेक्टर–4, वैशाली अपार्टमेन्ट के आगे,
मनवाखेडा रोड, उदयपुर (राज.)
मो. 9982045522

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

कंठ प्रदेश के गौरवशाली अतीत का साक्षी : प्रतापगढ़

❒ प्रकाश पंड्या

मेवाड़ के पराक्रम और यश, वागड़ के नैसर्गिक सौन्दर्य तथा कांठल की गंगो जमनी तहजीब प्रदेश के 33वें जिले के रूप में 25 जनवरी, 2008 को अस्तित्व में आये प्रतापगढ़ की अमिट पहचान बन चुकी है। राजस्थान में भौगोलिक रूप से यह जिला पड़ौसी राज्य मध्यप्रदेश की संस्कृति को भी अपने में समाहित किये हुए है। उदयपुर का शौर्य, त्याग और बलिदान, चित्तौड़गढ़ की भक्ति परायणता और बांसवाड़ा की अध्यात्म सरिता प्रतापगढ़ जिले को अपने पड़ौसी धर्म निर्वाह के साथ इसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का प्रशस्ति गान करती है तो सीमावर्ती मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले के विश्वविख्यात पशुपतिनाथ की वंदना के स्वर कांठल के कंठ से अहर्निश गूंजते सुने जा सकते हैं।

राजस्थान के मानचित्र पर 33वें जिले का गौरव अर्जित करने वाला प्रतापगढ़ की अवस्थिति पूर्व में उदयपुर, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ जिलों में समाहित क्षेत्रों से निर्मित हुआ है। नवसृजित प्रतापगढ़ जिले के तहत चित्तौड़गढ़ जिले की अरनोद, प्रतापगढ़ एवं छोटी सादड़ी, उदयपुर जिले की धरियावाद एवं बांसवाड़ा जिले की पीपलखूंट तहसील क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। बांसवाड़ा की प्रजा शक्ति के साथ वनस्पति जगत की प्राणाधार माही अब प्रतापगढ़ की सीमा रेखा तय करती है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रतापगढ़

वर्तमान प्रतापगढ़ रियासत काल से ही कांठल नगरी के नाम से जाना जाता है। भूतपूर्व प्रतापगढ़ रियासत की स्थापना (वर्तमान प्रतापगढ़ नगर) 1699 में महारावत प्रतापसिंह ने की थी। जब औरंगजेब की सेना ने मेवाड़ पर चढ़ाई की थी, तक रावत ने शाही सेना की सहायता की थी। उसी समय प्रतापसिंह ने डोडियार का खेड़ा नामक स्थान पर अपने नाम पर प्रतापगढ़ नगर बसाया था जिसका कालान्तर में मुख्यालय देवलिया से हटाकर प्रतापगढ़ में स्थापित कर दिया गया था। ऐतिहासिक दृष्टि से

यहाँ मेवाड़ राजवंश के राजाओं का आधिपत्य रहा है जो इतिहास में देवलिया राज्य के नाम से सुविख्यात रहा है जिसकी राजधानी प्रतापगढ़ से पश्चिम की ओर 10 किमी दूर अवस्थित देवलिया कस्बा रही। जिले की उपतहसील देवगढ़ में प्राचीन किला अवस्थित है जिसकी छत पर सूर्य की रोशनी से समय दर्शाने वाली घड़ी विद्यमान है। इस किले में प्राचीन राजघराने के ऐतिहासिक अवशेष अब भी उपलब्ध है।

स्वतंत्र राजस्थान में देवगढ़ के तत्कालीन शासक महारावल प्रतापसिंह ने अपने नाम से 'प्रतापगढ़' नगर की स्थापना की सुरक्षा के साथ अपने अतीत की गौरवगाथा सुनाता परकोटा निर्मित है। परकोटे के अन्दर अवस्थित प्रतापगढ़ नगर में 56 गलियाँ व 6 प्रमुख नगर द्वार हैं जो इसकी भव्यता एवं नागरिक जीवनशैली का परिचायक है।

तहसील के रियासत कालीन ठिकानों में बरोल, सेमरडा, अम्बावली, गागरोल, पीलीखेड़ा, भैरवी, जलोदा जागीर, धामनिया जागीर तथा कारूण्डा मेवाड़ रियासत के अन्तर्गत थे। यहां के सेनानी स्वतन्त्रता के लिए जन-जागरण एवं प्रसार का कार्य रात्रि में छिप कर किया करते थे।

श्री गुलाबचन्द्र मेवाड़ी स्वतन्त्रता सेनानी के नाम से ही गुलाबचन्द्र मेवाड़ी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय छोटी सादड़ी रखा गया है। जयचन्द मोहिल के नाम से स्वास्थ्य केन्द्र छोटी सादड़ी रखा गया है। भले ही प्रतापगढ़ स्वतंत्र राजस्थान में 33वें जिले के रूप में अस्तित्व में आने के कारण जिले के निर्माण की आयु में अल्पवय हो लेकिन स्वतंत्रता संग्राम और सांस्कृतिक धरोहर में यह जिला अपनी पूर्ण प्रौढ़ावस्था के साथ परिपक्वता का धनी है।

देश की जुबां पर छाया यहां का जायका

प्रतापगढ़ जिले का नाम आते ही जन-जन की जुबां पर यहा के बेहद लजीज आम के पापड़, आम का आचार और जीरा लूण का जायका याद आ जाता है। आमों खास की भोजन की थाली में खाने के साथ इन तीन चीजों की मौजूदगी पर प्रतापगढ़ की मुहर न लगी हो तो यों माने कि भोजन का स्वाद आधा अधूरा है। प्रतापगढ़ जिले के गरम मसाले और यहा विशेष प्रकार से बनाया जाने वाला जीरा लूण सात समन्दर पार खाड़ी देशों तक पहुंचता है। जीरा लूण वो खाद्य पदार्थ है जो बिना सब्जी के रोटी के जायके को पूर्ण बना देता है।

इसी प्रकार यहाँ कुटीर एवं लघु उद्योग के रूप में प्रचलित आम पापड़ भी राज्य के साथ-साथ देश के अन्य हिस्सों में अपनी धाक जमाये हुए है। आबाल वृद्ध के कानो में जब भी हींग लगे न फिटकरी कहावत सुनाई पड़ती है तो प्रतापगढ़ का नाम स्वत: जहन में कौंध जाता है। यहाँ के हींग की मांग देश-प्रदेश के कई हिस्सो में है।

ऐसा नहीं कि प्रतापगढ़ केवल जायके के लिए मशहूर हो यहां का कला जगत भी समृद्ध है। विश्व कला मंच पर यहां की थेवा कला अपनी खास पहचान रखती है।

थेवा कला में कांच पर सोने की नक्काशी की जाती है जिसमें विविध रंग यथा-हरा, लाल, पीला, नीला आदि प्रयुक्त किए जाते हैं।

यहां काष्ठ व कांच के अद्भुत एवं सजीव खिलौने बनाने वाले कारीगरो का कौशल मुंह बोलता हैं।

जीवन रेखा है जाखम बांध

आधुनिक तीर्थ कहे जाने वाले बांध इस

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

युग की जीवनरेखा साबित हो चुके है। प्रतापगढ़ जिले का जाखम बांध भी अपने आप में यहाँ की जीवनरेखा है। जाखम बांध सबसे वृहद बांध है जिसकी जल भराव क्षमता 5015 एमसीएफटी है। इसकी उचाई 81 मीटर है।

जाखम बांध स्थल ग्राम अनुपपुरा तहसील प्रतापगढ़ जिला प्रतापगढ़ में है जो कि धरियावाद मुख्यालय से 32 किमी. एवं जिला मुख्यालय से 35 किमी. की दूरी पर स्थित हैं। जाखम बांध जाखम नदी पर बना है जिसका उद्गम ग्राम जाखम में तहसील छोटी सादड़ी के पास है एवं यह माही नदी की सहायक नदी है।

इस परियोजना का शिलान्यास 14 मई 1968 को किया गया था परन्तु परियोजना का प्रारम्भिक वर्ष 1969-70 में शुरू किया गया। पूर्व स्वीकृत योजनानुसार 4000 एम.सी. एफ.टी. जल ग्रहण 32800 एकड़ क्षेत्र में सिंचाई करने की योजना प्रस्तावित थी जिसे बाद में संशोधित कर 5015 एम.सी.एफ.टी. जल ग्रहण 52354 एकड क्षेत्र में सिंचाई लाभ प्रस्तावित किया गया। पूर्ण रूप से मानव निर्मित जाखम बांध की कुल भराव क्षमता 5015 एम.सी.एफ.टी. है एवं उपयोगी भराव क्षमता 4671 एम.सी.एफ.टी. है।

बांध के पास का क्षेत्र पहाड़ी एवं पथरीला होने से सिंचाई के लिये उपयुक्त नहीं होने के कारण बांध स्थल से 13 किमी. दूरी पर नागलिया पीक-अप वियर बनाकर उससे सिंचाई हेतु बाईं मुख्य नहर (39.00 किमी.) एवं दाईं मुख्य नहर (34.12 किमी.) निकाली गई है। मुख्य नहरों, वितरिकाओं एंव माईनरों के माध्यम से धरियावाद तहसील के 11822332 हेक्टेयर एवं प्रतापगढ़ तहसील के 31436 हेक्टेयर गाँवों में रबी एवं खरीफ की फसल हेतु 23505 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है। पवन चक्की व सौर ऊर्जा संयन्त्रों से विद्युत उत्पादन की तकनीक में अग्रणी प्रतापगढ़ जिला अन्य सभी के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत है। काला सोना उत्पादन की दृष्टि से भी प्रतापगढ़ को कौन नहीं जानता?

सांस्कृतिक धरोहर में सानी नहीं

सांस्कृतिक विरासत में यहाँ हिन्दू एवं जैन मतावलम्बियों के प्राचीन मन्दिरों का बाहुल्य है। साम्प्रदायिक सौहार्द की प्रतीक काका साहब की दरगाह बोहरा समाज की आस्था का केन्द्र ही नहीं अपितु सर्वसमाज की श्रद्धा का केन्द्र है। प्रतापगढ़ से मात्र 4 किमी. की दूरी पर अवस्थित अम्बा माता प्रमुख शक्तिपीठ है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से क्षेत्र में गोतमेश्वर तीर्थस्थल, स्वामी नारायण मंदिर धरियावाद जन आस्था का प्रमुख केन्द्र है। इसके साथ नीलकण्ठ महादेव, सालमगढ़ का शिव मन्दिर, प्रौगेतिहासिक कमलेश्वर महोदव, अवलेश्वर ग्राम जहां कनिष्क कालीन शिलालेख पाये गये है। घोटारसी का सूर्य मन्दिर, जूनागढ़ का पुरातन किला, सीता माता अभ्यारण्य में उडन गिलहरी, छोटीसादडी का भंवरमाता शक्तिपीठ भी इस क्षेत्र के पुरातन दर्शनीय स्थल हैं।

अरनोद देवालयों की नगरी है। यहां हनुमानजी, माताजी, गोरेश्वर महादेव, रामकुण्ड स्थित मंदिर सहित कई अन्य मंदिर दर्शनीय है। अरनोद से 3 किमी. दूर कांठल का हरिद्वार माने जाने वाला गौतमेश्वर नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ स्थल है। यह मंदिर मेवाड़, मालवा एंव वागड की आस्था का मुख्य केन्द्र है। यहां प्रति वर्ष वैशाखी पूर्णिमा का विशाल मेला भरता है।

इस मेले में नियत राशि मंदिर मण्डल द्वारा ली जाकर एक विशेष प्रकार की मान्यता दी जाती है जो श्रद्धालुओं में आस्था को प्रगाढ तो बनाती ही है साथ ही परोपकार में जीवन निर्वाह तथा व्यसन मुक्त जीवन जीने का कालजयी संदेश भी देती है। यह मान्यता इहलोक में सत्कर्म के माध्यम से परलोक सुधारने का शाश्वत पाठ पढ़ाती है। शिव भक्ति मेला (मार्च माह से), हरियाली अमावस्या पर भँवर माता मेला, रामदेवजी का मेला (स्वरूपगंज), भादवी बीज पर भरता है जिसमें मेलार्थियों का ज्वार उमड़ता है। सांस्कृतिक छटा के दर्शन विभिन्न त्योहारों एवं पर्वो पर यहां की परम्परागत कलाओं में आर्य-वीर दल-दंगल प्रतियोगिताएँ जलझूलनी एकादशी पर रथयात्रा एवं अखाड़ा का प्रदर्शन एवं विजयादशमी पर शोभायात्रा के दौरान किये जा सकते है। रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, नवरात्री महोत्सव, दीपावली, ईद, रंगतेरस, शिवरात्रि आदि सांस्कृतिक महोत्सव श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाये जाते हैं।

-6/314 प्रगति नगर कॉलेज रोड, बांसवाड़ा
मो. 9414101857

चिन्तन

युवा पीढ़ी को सहेजना

❒ डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत

विद्यार्थियों का भविष्य बनाने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान युवा पीढ़ी को हम किस मानसिकता से देखते हैं, यह हमारी समझ पर निर्भर करता है। वर्तमान युवा पीढ़ी का भविष्य तय करने में उनकी रुचि के साथ उनके घर की परिस्थितियों पर भी ध्यान रखना अति आवश्यक है। वह उनसे यथासंभव भविष्य निर्धारण में सहयोग की अपेक्षा करता है। ऐसे समय-समय में एक शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थी के बारे में चिन्तन-मनन करने का समय भी निकाले।

एक शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों के बारे में उनकी व्यक्तिगत समस्याओं व सुविधाओं का पता लगाकर मार्गदर्शन करें। यदि उनमें महत्वांकाक्षाएं हों तो उनका मदन न कर उनको सही दिशा प्रदान करें। वर्तमान में हर कोई बच्चों के बारे में नकारात्मक टिप्पणी करने से नहीं चूकते। टेलीविजन, मोबाइल, इन्टरनेट आदि का नाम से लेकर कहते रहते हैं। इन्होंने बच्चों को गुमराह कर दिया है। ऐसा कह कर हम अपने दायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। युवा पीढ़ी सदा देश का भविष्य रही है और रहेगी। एक शिक्षक का दायित्व है कि वह नियमित रूप से कक्षा में जावे, बच्चों के गृह कार्य की सराहना करें। शिक्षक के दौरान अपने मोबाइल का प्रयोग न करें। विद्यालय परिसर में रहते हुए अपने घर के तनावों से मुक्त रहे। वर्तमान के बदलते परिवेश को समझे। बच्चों को सरकारी नौकरी के मोहजाल से परिचित करावें। आत्मनिर्भरता वाले व्यवसायों को समझावें ताकि उनका गलत प्रभाव उनकी मानसिकता को प्रभावित करें। बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों में अपने अस्तित्व को बचाये रखने के उपायों पर सोचने का अवसर दें तथा अपनी राय भी व्यक्त करें। बदलते विश्व परिसर की अवधारणा को स्थापित कर चिन्तन मनन करें।

-श्री सर्वेश्वर भवन,
नाँगल जैसा बोहरा, वाया-झोटवाड़ा, जयपुर

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शिक्षा मनोविज्ञान

अवचेतन मन की शक्ति का शिक्षा में उपयोग

❒ सुमन सिंह

विकसित मस्तिष्क का स्वामी होने के कारण मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा जाता है। संसार का हर छोटा बड़ा मनुष्य अपनी तरह से इस मस्तिष्क का सदा उपयोग करता हैं। यह हमेशा मनुष्य के साथ रहता हैं। मानव मस्तिष्क के दो स्तर हैं, चेतन मन और अवचेतन मन। अमेरिकन मनोविज्ञान के जनक विलियम जोन्स ने कहा है-''आपके अवचेतन मन में दुनिया को हिलाने की शक्ति है। इसमें असीमित ज्ञान और बुद्धिमत्ता हैं। जीवन में अवचेतन मन की चमत्कारी शक्ति का उपयोग करने से न केवल विद्यालयी जीवन सफल होगा अपितु देश को सुनागरिक भी प्राप्त होंगे।''

चेतन व अवचेतन मन की कार्यप्रणाली डॉ. जोसेफ मर्फी के अनुसार निम्नानुसार है-''चेतन व अवचेतन दो मस्तिष्क नहीं है। वे एक मस्तिष्क में होने वाली गतिविधि के दो क्षेत्र है।'' चेतन मन से मनुष्य विचार करता है। मनुष्य की कर्मेन्द्रियां व ज्ञानेन्द्रियां मस्तिष्क में सूचना पहुंचाने का कार्य करती हैं। चेतन मन मनुष्य के प्रहरी रक्षक के रूप में कार्य करता है। चेतन मन तर्क-वितर्क करता है, सोचता है। इन क्रियाओं से गुजरते मानव मस्तिष्क में एक दिन में तीस हजार से साठ हजार विचार, एक मिनट में 20-30 विचार उत्पन्न होते हैं।

विचारों की यह गति और प्रवाह सकारात्मक, नकारात्मक, आवश्यक, अनावश्यक, उपयोगी-अनुपयोगी व्यर्थ अनेक प्रकार होता है। जो विचार चेतन मन में आते हैं। अवचेतन मन उसी के अनुरूप कार्य व प्रतिक्रिया करने लगता है। यहीं से मनुष्य जीवन में घटनाएं, परिस्थितियां, सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी, सफलता-असफलता, प्रेम-घृणा का जन्म होता है। अन्तर्मनः अर्थात अवचेतन मन में वही विचार बस जाते हैं।

इस प्रकार मनुष्य काफी हद तक अपनी जिन्दगी का खुद निर्माता कहा जाता है। यहां हम विद्यालयी जीवन में अवचेतन मन शक्तियों के सदुपयोग द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को केन्द्र बिन्दु बनाकर इसके महत्त्व को प्रतिपादित करना चाहेंगे।

विद्यार्थियों को सुझाव

कभी-कभी आपने अनुभव किया होगा कि जो आप सोचते हैं, वह तुरंत घटित हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि अवचेतन मन पर जो भी छाप आप छोड़ते हैं जिसमें आप दृढ़ता से विश्वास व आस्था करते हैं, अवचेतन मन उसे स्वीकार कर लेता है। बस जो आपने गहराई में सोचा, बार-बार सोचा वह पूरा हो जाता है। यदि डर व भय के विचार मन को देंगे तो वे आपके जीवन में प्रवेश कर लेंगे।

परीक्षा में सफल होने के साथ शिक्षा का उद्देश्य तो जीवन की हर परीक्षा में उत्तीर्ण होना है। फिर भी विद्यार्थी जीवन में सफल होना यह विचार अवचेतन मन में यदि गहराई से चला गया तो आप उत्तीर्ण अवश्य होंगे। उत्तीर्ण होना अच्छा विचार है। अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना उससे भी अच्छा, वरीयता सूची में आना सर्वश्रेष्ठ विचार है। तो क्यों न सर्वश्रेष्ठ विचार करें और उसके अनुरूप प्रयासरत हो जाएं। इन सुझावों की पालना करें।

- अपने आप में विश्वास रखें।
- विश्वास के अनुरूप पर्याप्त समय पढ़ाई को दें।
- एकाग्रता का अभ्यास करें।
- शिक्षक के मार्गदर्शन को स्वीकार करें।
- माता-पिता अभिभावक के परामर्श को अपनाएं।
- अनुशासित व संयमित जीवन जिएं।
- शांति से कर्म करें क्योंकि शांत मस्तिष्क शक्ति देता है।
- विचारों के प्रकार को जांचते रहें कि यह सकारात्मक है अथवा नहीं। यदि विचार नकारात्मक है तो उसे सकारात्मक में बदल कर शांति से अवचेतन तक पहुंचाए।
- एक दूसरे साथी से ईर्ष्या न करें।
- अन्य साथी को सफलता की शुभकामनाएं अवश्य दें। आप अपने आप सफल हो जाओगे।

असफलता के नकारात्मक भाव, भय, डर, आशंका मन से निकाल दें। विद्यार्थियों में सफलता संबंधी नकारात्मक चिन्तन के उदाहरण हैं-कहीं मैं फेल न हो जाऊं, मुझे कुछ नहीं आता, मेरा दिमाग काम नहीं करता, मुझे कुछ याद नहीं आता, गणित, अंग्रेजी बहुत कठिन लगते हैं। इसके स्थान पर पढ़ाई पर पर्याप्त ध्यान देते हुए सकारात्मक सोचें। मैं पास जरूर हो जाऊंगा, मुझे सब कुछ आता है, मेरा दिमाग खूब काम करता है, मुझे सब कुछ याद होता है, कठिन लगने वाले विषयों में मैं अध्यापक से और समझ लूंगा, फिर सब आसान होगा आदि-आदि। इनको सुबह-शाम बार-बार शांति से बैठ कर दोहराएं, विचार अवचेतन में छप जाएंगे और जैसा चाहते हैं वैसा परिणाम प्राप्त होगा।

वास्तव में अपने बारे में ये सकारात्मक विचार अध्यात्म की भाषा में प्रार्थना हैं, इसे शुभ भावना भी कहते हैं। आपको अवचेतन मन महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के नियमानुसार क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य करेगा। संसार में क्रिया की प्रतिक्रिया चाहो, अच्छे विचार हो या बुरे विचार अवश्य घटती रहती है इसलिए इसका सकारात्मक उपयोग कर फायदा लेना है।

नकारात्मक विचारों से बचने का माध्यम है, अच्छे मित्रों का साथ, अच्छे साहित्य का अध्ययन और अध्यात्म। टी.वी., मोबाइल, फोन, अखबार की नकारात्मक खबरों पर ध्यान केंद्रित नहीं करें। जो भी ईश्वर ने दिया है उसके प्रति ईश्वर का आभार, धन्यवाद दिन में अनेक बार करें। अपने सद्गुणों के बारें में चिन्तन कर अहंकारित न हो जाएं।

रात को सोते समय ईश्वर को याद करते हुए दिन में घटित अच्छी घटनाओं के बारे में भगवान को सब कुछ बता दें, गलतियों के लिए क्षमा प्रार्थना करें। सुबह उठते समय ईश्वर की याद अवश्य आएगी क्योंकि रात को मस्तिष्क में पहुंचे अन्तिम विचार ही, दिन के पहले विचार बनते हैं। ऐसा करने पर दिन का आरंभ शुभ होगा।

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शिक्षकों को सुझाव

शिक्षाशास्त्री जॉन जी हिबम के अनुसार-''शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है।'' बहुत सत्य व सार्थक कथन है। इस रूप में आदर्श शिक्षक सदा विद्यार्थियों के साथ ही रहता है। प्रत्येक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणों में इसीलिए मनोविज्ञान विषय विस्तार से पढ़ाया जाता है, जिससे शिक्षक अपने शिक्षणकाल मनोविज्ञान के दौरान उसका पर्याप्त व सही उपयोग निरन्तर कर सकें। शिक्षक के लिए शिक्षणकाल विषय के सैद्धान्तिक ज्ञान को व्यावहारिक व प्रयोगात्मक रूप में बदलने का श्रेष्ठ साधन है।

मनोविज्ञान के अनुसार अवचेतन मन की शक्ति, कार्यशैली का सही उपयोग विद्यार्थियों को सिखा कर शिक्षक जैसा परिणाम चाहते हैं प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षक की भावना छात्रों में सुधार करने की होती है। पर जाने-अनजाने नकारात्मक शब्दावली का उपयोग करने से विद्यार्थी का मनोबल दुर्बल हो जाता है। अतः शिक्षक को निम्न सुझाव अपनाने चाहिए-

- कक्षा में विद्यार्थी की कभी भी एक दूसरे से तुलना न करें क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी की बुद्धिलब्धि और भावनात्मक बुद्धि लब्धि समान नहीं होती।
- विद्यार्थियों को भावनात्मक सम्बल प्रदान करें।
- विद्यार्थियों को कभी भी प्रताड़ित न करें, ऐसा करने पर अनेक प्रकार की कुंठा से ग्रस्त हो जाते हैं।
- विद्यार्थियों को कभी भी, किसी भी स्थिति में शारीरिक दण्ड व आर्थिक दण्ड न दें।
- विद्यार्थियों के प्रति किसी भी प्रकार की धारणा न पनपाएं। प्रोत्साहन करने वाले शब्दों का चयन कर बोलें।
- पुनर्बल का हमेशा प्रयोग करें।

विद्यार्थियों को नकारात्मक भाषा में प्रताड़ित करने के निम्न उदाहरणों से बचें-

- तुम बुद्धू हो, तुम कुछ नहीं कर सकते, तुम फेल हो जाओगे, तुम कभी कुछ नही कर सकते, तुम बहुत बहाने बनाते हो, अब कोशिश करने का क्या फायदा, स्थिति तुम्हारे हाथ से निकल चुकी है। इसके स्थान पर आशा, खुशी, प्रोत्साहित कर मनोबल बढ़ाने वाले विचारों से शिक्षार्थी को भर दें।
- लिंगभेद ध्यान में रखें, अर्थात् छात्र-छात्राओं से समान व्यवहार करें।
- शिक्षार्थियों में अनेक प्रकार की प्रतिमाएं पहचानें और उनकी प्रशंसा करें।
- शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत जीवन के बारे में गहन जानकारी रखें।
- अन्य शिक्षकों से विद्यार्थियों की विशेषताओं के बारें में बात करें, कमजोरियों के बारे में नहीं।
- विद्यार्थियों के बारे में उनके साथियों से बात करें।
- विद्यार्थियों की रुचि, अभिरुचि को समझ बढ़ावा दें।
- विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का ध्यान रखें, माता-पिता व अभिभावकों से हमेशा संबंध, सम्पर्क बनाए रखें।
- सभी प्रकार व्यक्तिगत, व्यावसायिक निर्देशन विद्यार्थियों को समय पर प्रदान करें।
- विद्यार्थियों की अनेक प्रकार की समस्याओं को हल करने में सहयोग प्रदान करें। छात्रों के प्रति संवेदनशील रहें।
- संसार की सबसे बड़ी शक्ति प्रेम को काम लें।
- विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्तियों को बढ़ाने का हर संभव उपाय करें।

ऊपरलिखित शिक्षार्थियों को सुझाव का पूर्ण उपयोग करे व करवाएं।

माता-पिता, अभिभावकों को सुझाव

माता-पिता व अभिभावक अपने बच्चों को जैसा चाहें वैसा बना सकते हैं। सफल या असफल, आशावादी या निराशावादी, सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण युक्त, प्रगतिशील या कुंठित। माता-पिता का एक-एक शब्द बच्चों के लिए बहुत प्रभावशाली होता है। आप अपने बच्चे से जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही उसका व्यक्तित्व निर्माण हो जाएगा। बच्चे के साथ बार-बार किया गया व्यवहार, व्यवहार की भाषा बच्चे के चेतन मन से अवचेतन में पहुंच कर वैसा ही व्यक्तित्व निर्माण करती है जैसे शब्द व भाव होते है। इसलिए-सोच समझकर भाषा का चयन व उपयोग करें।

- अपने बालक व बालिका का उचित व समान पालन पोषण करें।
- छात्र अभिभावक बैठकों में भाग लेकर अपने बच्चे के बारे में जानकारी लें।
- बच्चों की प्रगति में सहयोग प्रदान करें। विद्यालय में बुलाए जाने पर अवश्य जाएं।
- बच्चों से प्रेम पूर्ण व्यवहार करें क्योंकि बच्चा प्रेम की भाषा को आसानी से समझता है।
- बच्चों पर दबाव न बनाएं, खुलकर बात करें निर्णय करें।
- शिष्ट व सकारात्मक भाषा का बच्चों के साथ प्रयोग करें। प्रायः अनुभव किया जाता है कि माता-पिता अपशब्दों व गाली का प्रयोग बातचीत में करते हैं जो बच्चा तुरंत अपना लेता है। जैसे-तुम बेकार हो, निकम्मे हो, बेवकूफ हो, कहीं डूब मरो। इस नकारात्मक भाषा के प्रयोग का असर अवचेतन प्रमाणित करने में लग जाते है, बच्चा उसी के अनुसार कार्य करने लगता है। बच्चे का जीवन बर्बाद हो जाता है, दुर्घटनाएं हो जाती है। ऐसी भाषा से बच्चे सुधरते नहीं हैं। इसलिए सकारात्मक व्यक्तित्व गठन के लिए सकारात्मक विचार देकर मानसिक प्रक्रिया को उलट दें। तुम बहुत अच्छे हो, तुम बहुत बुद्धिवान हो, मेहनत करो, अच्छा सोचो, हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं, कारण नकारात्मकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि बच्चे में बहुत से प्रशंसनीय गुण होते हैं उन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
- बच्चों को पर्याप्त समय दें बात करें।
- बच्चे की आदतों का, संगत का ध्यान रखें।

अधिकांश माता-पिता अवचेतन मन के इस रहस्य को नहीं जानते। व्यक्तित्व निर्माण की जिम्मेदारी व भार अध्यापक पर डालते हैं। सच तो यह है कि माता-पिता व शिक्षक दोनों ही व्यक्तित्व निर्माण में सहभागी हैं शिक्षित होने के कारण शिक्षक का दायित्व फिर भी अधिक माना जाता है। अतः लेख के विचारों की माता-पिता को जानकारी देना उपयोगी होगा।

ई-53, कांता खतूरिया कॉलोनी,
बीकानेर-334001
मो. 9413725779

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

नैतिक शिक्षा

पहले जरूरी है संस्कार

❒ शंभूलाल अग्रवाल

आज जब देश और समाज में भ्रष्टाचार, बेईमानी, कर्त्तव्यहीनता, झूठ, फरेब आदि बुरी तरह व्याप्त हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि जो पीढ़ी विद्यालयों में अध्ययनरत है उसमें ऐसे गुणों का समावेश किया जावे जिससे उसमें नैतिकता आवे, वह ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ बने। विद्यार्थियों को नैतिक गुण देने के लिए जरूरी है कि विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षक इस कार्य को बेगार समझ कर टालने की प्रवृति से न करके ईमानदारी से करें। औपचारिकता निभाने के लिए प्रतिदिन प्रार्थना सभा में भाषण या वार्ता देकर अपने इस देश हित कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर लें।

देश की आज की बुरी दशा और लोगों की चरित्रहीनता को देखते हुए, तो ऐसा लगता है कि मात्र दस मिनट नैतिक शिक्षा पर वार्ता देने से कुछ भला नहीं होने वाला है। देश हित और व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाने के लिए आज नैतिक शिक्षा, हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि विषयों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण और जरूरी है। पूरी सोच और योजनाबद्ध तरीके यदि नैतिक शिक्षा दी जाती है तो हमारी भावी पीढ़ी जरूर अच्छी बनेगी। इस शिक्षा को पूरा एक पीरियड दिया जाना चाहिए। गणित के फार्मूले याद करने और रटने की अपेक्षा व्यक्ति के चरित्र का घड़ना और उसे अच्छे नागरिक बनाना ज्यादी जरूरी है। नैतिक शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी चरित्रवान नागरिक बन जाते हैं, तैयार हो जाते हैं तो देश की कई बुराइयाँ और समस्याएँ खुद-ब-खुद मिट जायेगी।

ऐसा भी नहीं है कि देश में सभी भ्रष्ट, बेईमान और अनैतिक हैं। देश में आज भी बहुत से ऐसे व्यक्ति मिल जाएंगे जो अपने सिद्धांतों के पक्के हैं, पूरे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ हैं।

नैतिक शिक्षा के पाठ को उदाहरणों और दृष्टांतों से बताने और उनका मूल्यांकन कर यह जान लेना ही पर्याप्त नहीं होगा कि विद्यार्थी को बताई गई कितनी नैतिक बातें याद हैं। विद्यार्थी को समय-समय पर उन्हें दी गई नैतिक शिक्षा का जायजा उनके दैनिक आचरण से भी लेना होगा। यह देखना होगा कि उन्हें सच बोलने की शिक्षा दी गई थी उसका वह अपने जीवन में कितना उपयोग करता है। यदि नैतिक शिक्षा ने एक विद्यार्थी को दी हुई नैतिक शिक्षा के अनुकूल बना दिया है तो ऐसी नैतिक शिक्षा कामयाब मानी जायेगी। नैतिक शिक्षा के कारण जिन विद्यार्थियों में अच्छे गुणों का समावेश हो गया है तथा वे उन गुणों के अनुसार आचरण करते हैं तो ऐसे विद्यार्थियों की खूबियां बताते हुए उन्हें प्रार्थना सभा या अन्य अवसरों पर सम्मानित किया जाना चाहिए। इस प्रकार के कृत्य से अच्छे नैतिक गुणयुक्त विद्यार्थियों को तो प्रोत्साहन मिलेगा ही अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी। नैतिक शिक्षा में इन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए-

संतोष : संतोष ऐसा धन है जिसके आगे सभी धन महत्त्वहीन हैं। इसीलिए कहा गया है- जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान।' संतोष के लिए जरूरी है कि व्यक्ति आवश्यकताएँ वो ही हों जो जरूरी हैं। गैर वाजिब आवश्यकताओं को पालकर परेशानी में नहीं पड़े। मनुष्य को जितनी ईमानदारी से जितना मिलता है उससे अपना काम चलावे और यदि उसकी आवश्यक आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती तो अतिरिक्त मेहनत करके कुछ कमाएँ पर किसी भी दशा में पैसा प्राप्त करने के लिए बेईमानी का सहारा लेकर अपने को कलंकित नहीं करें। महावीर स्वामी ने अपरिग्रह का सिद्धांत बताया है जिसमें आवश्यकता से अधिक संचय निषिद्ध है। लोगों की देखा देखी अपनी जरूरतों को बढ़ाना व्यक्ति को गलत रास्ते पर ले जाते हैं। इसके लिए शिक्षकों को ऐसे संतोषी व्यक्तियों का उदाहरणों के माध्यम से जीवन वृतांत बताना होगा, जो जितना मिलता था उसी में खुश, बहुत खुश थे।

भारतीयता : हमारे देश में ऐसे अनेक लोग मिल जाएंगे, जिन्होनें भारत में जन्म लिया है, इसकी मिट्टी में खेले हैं, रोजी रोटी कमाते हैं और बखूबी अपने जीवन का निर्वाह करते है। इसके बावजूद भी वे अपने देश भारत के प्रति वफादार नहीं हैं। अतः जरूरी है कि ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को जो भारत में पला है, बड़ा हुआ है, रोजी रोटी कमाता है, चाहे वह कोई भी हो, हिन्दू हो, मुसलमान, सिक्ख ईसाई हो अपने आपको पहले भारतीय माने तथा भारत के प्रति वफादार हो। उसके जीवन में अपना देश भारत प्रथम हो बाकी सब गौण। विद्यार्थियों में भारतीयता का गुण भरने, अपने देश के प्रति वफादार रहने और उसकी रक्षा के लिए सर्वस्व त्यागने का गुण उत्पन्न करने के लिए देश के महान देश भक्तों के जीवन चरित्र को उन्हें बताना होगा।

प्रकृति का संरक्षण : विद्यार्थियों में प्रकृति के सम्मान और उनके संरक्षण की भावना विकसित करने की शिक्षा दी जावे। प्रकृति में पृथ्वी, हवा, जल, नदियाँ, समुद्र, जंगल आदि आते हैं। ये सभी प्राणियों के जीवन के आधार है अतः विद्यार्थियों को विभिन्न उदाहरणों द्वारा यह ज्ञान कराया जावे कि इनका दुरुपयोग प्राणी जगत के लिए अहितकारी होगा। वायु, जल, नदी प्रदूषण, जंगल संरक्षण की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित कर इनको प्रदूषित होने से बचाया जावे तथा जल और जंगल की रक्षा के लिए उन्हें प्रेरित किया जावे।

नैतिक शिक्षा बड़ी कक्षाओं में भी दी जावे : विद्यालय के विद्यार्थियों को समाज और देश की बागडोर संभालने में कुछ समय लग सकता है। इससे पहले कॉलेज के विद्यार्थी समाज और देश की बागडोर संभालने की स्थिति में रहते हैं।

नैतिक शिक्षा में विद्यालय और कॉलेज स्तर पर पास होना आज की परिस्थितयों को देखते हुए अनिवार्य किया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा में सैद्धांतिक परीक्षा के साथ आचरण की परीक्षा भी हो और दोनों में सफल होना अनिवार्य रखा जावे। प्रमाण पत्र में नैतिक शिक्षा का उल्लेख किया जावे।

नौकरी के समय उम्मीदवार के नैतिक शिक्षा संबंधी ज्ञान और आचरण की परख की जावे और नैतिक शिक्षा देने और उसके पश्चात् व्यक्ति कितना उसके अनुसार आचरण करता है।

अतः शिक्षा विभाग को भारत की आज की दुर्दशा को देखते हुए नैतिक शिक्षा देना अनिवार्य तो करना ही है साथ मैं यह जरूरी है कि नैतिक शिक्षा देने वाले और लेने वाले दोनों का आचरण नैतिक शिक्षा के अनुकूल हो तब ही देश को और समाज को लाभ होगा।

-से.नि. उपप्रधानाचार्य
मार्फत : कमला प्रिंटिंग प्रेस, आबू रोड

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

शाला प्रांगण से

उदयपुर : जिले के 12 सरकारी विद्यालयों का 'प्रोजेक्ट उत्कर्ष' अब राज्य के 6500 सरकारी विद्यालयों में भी शुरू होगा। माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने उदयपुर दौरे में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरवाड़ा में विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट उत्कर्ष पर पहेलियां हल करते हुए देखा। वे सॉफ्टवेयर से अपनी पढ़ाई कर रहे थे। यह देख उन्होंने शिक्षा सचिव से प्रोजेक्ट की डिटेल समझने के लिए कहा । उन्होंने प्रोजेक्ट रिपोर्ट मांगने के साथ ही राज्य के अन्य सरकारी विद्यालयों में लागू करने की मंशा जताई। 25 अगस्त 2014 को संभाग के सभी जिला कलेक्टर्स की प्रेजैन्टेशन में 'प्रोजेक्ट उत्कर्ष' को भी शामिल किया।

जयपुर : राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (नवीन) गांधीनगर, जयपुर में 19 अगस्त 2014 को सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक श्रीमती शिवरानी के मुख्य आतिथ्य में वृक्षारोपण किया गया। मुख्य अतिथि ने बालिकाओं को 2 बालिका एक पौधे का संकल्प दिलवाया। प्रधानाचार्य डॉ. सीमा पराशर से बताया कि प्रत्येक कक्षा से 6 कुल छत्तीस पौधे इस कार्यक्रम में लगाए गए। दो छात्राओं को एक पौधे की सार संभाल का जिम्मा दिया गया। उनके नाम की पट्टिका भी पौधे के साथ लगायी गयी। कार्यक्रम प्रभारी श्रीमती शकुन्तला गोयल ने बताया कि उत्कृष्ट सार संभाल करने वाली छात्रा को आगामी बसंत पंचमी के दिन पुरस्कृत किया जाएगा।

अजमेर : राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, दादिया के प्रांगण में ग्राम दादिया के समस्त राजकीय विद्यालयों द्वारा स्वतंत्र भारत का 68वां स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। गांव के सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट किया एवं पी.टी. कार्यक्रम प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत भाषण, नाटक एवं गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी । श्री प्रेमचन्द अजमेरा प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दादिया ने बताया कि इस पावन राष्ट्रीय पर्व पर प्रत्येक भारतीय को ईमानदारी, मेहनत, त्याग एवं सेवा की शपथ लेनी चाहिए। इन गुणों को व्यवहार में अपनाने पर ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। श्री अजमेरा की प्रेरणा से भामाशाहों ने 10,000 रुपये, रा.बा. माध्यमिक विद्यालय, दादिया के लिए 40 सैट टेबल स्टूल भेंट किये। श्री रूपचन्द सांखला ने अपने पिता की स्मृति में शुद्ध पेयजल के लिए एक आर.ओ. भेंट किया।

राजकीय उमावि किशनगढ़ में 5 अगस्त 2014 को विज्ञान क्लब संचालित विद्यालयों की जिलास्तरीय विज्ञान क्लब आमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संबंधित विद्यालयों के संस्था प्रधानों एवं विज्ञान क्लब प्रभारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ.एस.बी. सिंह थे, जिन्हें इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में राष्ट्रपति द्वारा तथा इंडिया-यूरोपियन स्किल डवलपमेन्ट प्रोजेक्ट के लिए एनसीटीई में निमित्त किया गया था। इन्होंने संभागियों को विज्ञान क्लब द्वारा छोटे-छोटे प्रयोग नवाचार छात्रों की खोज प्रतिभा को जागृत करने और सकारात्मक सोच विकसित करने की प्रेरणा दी। डॉ. सिंह ने संभागियों से न्यूटन की गति के तीसरे नियम की व्याख्या प्रश्नोत्तर द्वारा करके वार्ता को रोचक बनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा अजमेर मंडल श्रीमती कमला पारीक ने संस्था प्रधानों व विज्ञान क्लब प्रभारियों को विज्ञान क्लब की गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने तथा नवाचार व नवीनतम विधाओं से शिक्षण कार्य करने साथ ही विज्ञान शिक्षण को सरल व रुचिकर बनाने पर जोर दिया। खुला प्रश्नमंत्र सत्र में सभी संभागियों ने विज्ञान क्लब के संचालन में आने वाली कठिनाईयों से संबंधित प्रश्न किए जिनका समाधान आमुखिकरण में उपस्थित उच्चाधिकारियों द्वारा किया गया। राबाउमावि पुष्कर की प्रभारी श्रीमती चंचल तथा राउमावि किशनगढ़ के श्री सुरेन्द्र गंगवाल ने अपने अनुभव को बताते हुए सभी को लाभान्वित किया।

सवाई माधोपुर : राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बंधा में बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता पर जोर दिया। उपस्थित अभिभावकों ने अपने परिवार की बालिकाओं को शिक्षित करने का प्रण लिया। इस अवसर पर राज्यस्तरीय पुरस्कृत शिक्षक श्री बाबूलाल बैरवा प्रधानाध्यापक राज0उ.प्रा.वि.सिनोली ने बताया कि एक बेटी शिक्षित होने पर दो परिवार शिक्षित एवं संस्कारित होते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे समाज एवं राष्ट्र का विकास शिक्षा से है। अन्य वक्ताओं ने भी ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश दिलवाने पर जोर दिया। कार्यक्रम के तहत श्री बैरवा द्वारा 25 बालिकाओं को स्कूल बैग, रूलर, रबर, कापियां आदि का नि:शुल्क वितरण किया गया।

चूरू : राजकीय बागला उच्च माध्यमिक विद्यालय 21 अगस्त 2014 को दो दिवसीय जिलास्तरीय इंस्पायर एवार्ड प्रदर्शनी का शुभारंभ हुआ। श्री महावीर प्रसाद पूनिया उप निदेशक माध्यमिक की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत करने एवं बाल वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने के प्रयास की सराहना की गयी। इस प्रदर्शनी में पांच हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने स्वनिर्मित विज्ञान मॉडल का प्रदर्शन किया।

श्रीमाधोपुर : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 68 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह जोश एवं उल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. नरेन्द्र थोरी, उपखण्ड अधिकारी ने झण्डारोहण कर मार्चपास्ट की सलामी ली। समारोह में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने देशभक्ति भावना से लबरेज गीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुति दी।

बीकानेर : राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सुजानदेसर में शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा करने के लिए शिक्षक अभिभावक सम्मेलन 23 अगस्त 2014 को आयोजित किया गया। अभिभावकों ने विद्यालय में हुए विकास कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विद्यालय के विकास में हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। इस अवसर पर इसी माह सेवानिवृत्त हो रहे प्रधानाध्यापक श्री जेठमल सांखला का नागरिक अभिनन्दन कर उनकी सेवाओं की सराहना की गयी।

-सुनीता चावला
सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
राजस्थान, बीकानेर

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

शिविरा विचार मंच

मेरे सपनों का शिक्षक

इस माह 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस है। शिक्षक दिवस यानी महान शिक्षक और भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन् का जन्मदिन। यह दिन शिक्षकों के सम्मान एवं आत्म विश्लेषण का दिन है। समाज, सरकार व शिष्य सम्मान करें तथा स्वयं शिक्षक अपना आत्म विश्लेषण करें, यही चाहता है शिक्षक दिवस। इस अवसर पर मेरी कल्पना/मेरे सपनों का शिक्षक विषय पर प्राप्त विचार शिविरा विचार मंच के अन्तर्गत यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं।

-वरिष्ठ संपादक

दृश्य रूप में शिक्षक का काम शिक्षा देना हैं। यह कार्य उसे करने वाले की प्रकृति पर निर्भर करता है। साथ ही यह बहुत कुछ उस कर्म पर निर्भर करता है जो उसे करना होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक (कर्ता) को जो काम (शिक्षा) करना है, उसकी महिमा व प्रकृति क्या है? इस पर पहले ध्यान दिया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कहा स्मरण हो रहा है जो उन्होंने हरिजन (1 दिसम्बर 1933) में लिखा था। उन्होंने कहा था, **''सही शिक्षा का काम तो छात्र-छात्राओं में अन्तर्निहित सर्वोत्तम गुणों को प्रकाशित करना है। केवल अव्यवस्थित और अवांछित जानकारी तो उनके मन पर निष्प्राण बनकर उनकी समग्र मौलिकता को नष्ट कर देती है और उन्हें यंत्रवत बना देती है।''**

इस प्रकार शिक्षा का काम व्यक्ति में छिपे उत्तम मानवीय गुणों का विकास करना है । शिक्षा के इस वृहत्त उद्देश्य को प्राप्त कर व्यक्ति को आदर्श संस्कारित जीवन जीने की कला सिखाना शिक्षक का काम है।

अत: शिक्षक का चरित्र इस प्रकार का होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों को सच्चाई, सहयोग, सहिष्णुता, समन्वय, सहकारिता जैसे उत्तम गुणों के संस्कार अपने विद्यार्थियों के दिल में स्थापित कर सके। शिक्षक ऐसा कर पाता है तो उसे शिक्षक कहलाने का सही मायने में अधिकार है। आज की पीढ़ी के शिक्षक भाई-बहनों को ऐसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

-विजय शंकर आचार्य
संयुक्त निदेशक (का)
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है, इसका वास्तविक उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इस सर्वांगीण विकास एवं सृजनात्मकता के गुण विकसित करने में शिक्षक की महत्ती भूमिका होती है। एक श्रेष्ठ और योग्य शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके विद्यार्थियों पर प्रतिबिम्बित होता है। एक शिक्षक बालक के जीवन को जहाँ मार्गदर्शित करता है, वहीं उसके विचारों में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाता है।

मेरा मानना है कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ शिक्षक को नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित वार्तालाप निरन्तर विद्यार्थियों से करते रहना चाहिए। वर्तमान वातावरण में जो उच्छंखलता, नैतिकताविहीन आचरण देखने को मिलता है उससे लगता है कि कही न कही इन तत्वों की कमी है बालक का पूर्ण विकास नैतिक मानवीय मूल्यों का उसके व्यक्तित्व में पदार्पण करने से होता है। सही गलत की पहचान एवं सहनशीलता का गुण इस दौर में अत्यन्त आवश्यक है। यह सब एक शिक्षक ही बालक को दे सकता है।

यह सत्य है कि एक शिक्षक ही बालक को संस्कारित शिक्षा देते हुए व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकता है। संस्कार, शिक्षा कोई पुस्तकीय विषय नहीं है, संस्कार शिक्षा का आधार स्वयं शिक्षक का आचरण है एवं उसके द्वारा प्रस्तुत आदर्श है। शिक्षक की सोच एवं अध्यापन का तरीका प्राय: विद्यार्थियों में सन्निहित सृजना को परिमार्जित कर सकता है। हंस मुख एवं चेहरे पर आत्मविश्वास लिए एक शिक्षक जब बच्चों के साथ एकात्म रूप से तादात्म्य स्थापित कर लेता है तो वह सफलता की पहली सीढ़ी पार कर लेता है। शिक्षक अदम्य उत्साह व अपने ज्ञान भण्डार के साथ बालकों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत हो कि विद्यार्थी भी उसके साथ उसी ज्ञान स्त्रोत में बहने लगे। सर्वपल्लि डॉ. राधाकृष्णन का कथन यहां दृष्टव्य है कि-**''समाज में अध्यापक का स्थान महत्वपूर्ण हैं, वह एक ऐसा केन्द्र बिन्दु है जहां से बौद्धिक परम्पराएं तथा तकनीकी कुशलताएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संचारित होती है। वह सभ्यता के दीप को प्रज्वलित रखने में सहायक है वह केवल व्यक्तित्व का मार्गदर्शन ही नहीं करता वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र के भाग्य का निर्माण करता है।''**

अत: हम कह सकते हैं कि शिक्षक वह दर्पण है जिसे देखकर बालक अपने आप को प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। शिक्षक छात्र के पूर्ण विकास का आधार है। शिक्षक का अध्ययनशील होना आवश्यक है स्वाध्याय शिक्षक का प्रथम गुण होना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक को विद्यार्थियों में स्वाध्याय की प्रवृति को विकसित करना चाहिए जिससे आज के इन्टरनेट, प्रतियोगी परीक्षाओं के स्पर्धा भरे जमाने में स्वाध्याय की घूरती प्रवृति से विमुख होकर स्वाध्याय की ओर अग्रसर हो सकें। अपना ज्ञान विस्तृत व स्थायी बना सकें। इस प्रवृति से विद्यार्थियों में एकाग्रता का गुण भी विकसित हो सकेगा। शिक्षक को प्रत्येक बालक की ओर व्यक्तिश: ध्यान देते हुए मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार द्वारा वातावरण को सरस बनाते हुए इस प्रकार निर्मित करें कि विद्यार्थी अपनी बात बेहिचक कह सके। विद्यार्थियों के मनोभावों को समझना..., उनकी समस्याओं का समाधान करना और उचित अनुचित का ज्ञान करवाते हुए

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

सकारात्मक विचारपूर्ण निर्णय लेने की प्रवृति को विकसित करना आदि बाते शिक्षक के व्यक्तित्व का हिस्सा होनी चाहिए। पूर्ण मनुष्य बनने के लिए मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक योग्यता आवश्यक है। वह केवल सच्ची शिक्षा व अच्छे शिक्षक द्वारा ही प्राप्त ही जा सकती है। स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था–''हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिसमें चरित्र निर्माण हो, मन: शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार और व्यक्ति अपने पैरो पर खड़ा हो सके।''

यह सत्य है शिक्षा व्यक्ति में चरित्र निर्माण की दृढ़ता और आत्म जागरण पैदा करती है इस कार्य में अग्रिम भूमिका एक शिक्षक ही निभाता है। जो कुछ भी विद्यार्थियों में अप्रकट है, अप्रत्यक्ष है, छिपा हुआ है उसको शिक्षक ही प्रकट करके मूर्त रूप देता है। शिक्षक संभावनाओं को वास्तविकता में तथा अव्यक्त को व्यक्त करता है। वह केवल सूचना व ज्ञान का हस्तांतरण ही नहीं करता वरन वह विद्यार्थियों के साथ ताउम्र का नैतिक, चरित्रिक संबंध स्थापित कर लेता है। स्वामी विवेकानंद का एक और विचार यहा दृष्टव्य है की ''चारित्रिक हीनता और संस्कार विहीनता राष्ट्र की मृत्यु का कारण होते है। किसी भी देश की मृत्यु का चिह्न अपवित्रता या चरित्रहीनता के भीतर से होकर आता है...। इन सब मूल्यविहीन अनैतिक बातों को दरकिनार कर उच्च मानसिक नैतिक स्तर व पवित्र आचरण की प्रेरणा देते हुए एक शिक्षक ही विद्यार्थियों/बालकों को संस्कारित कर सकता है। बालक शिक्षक की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है उस जिम्मेदारी का निर्वाह उसे बेहद सुलझे, संयमित रहते हुए ईश्वर की सच्ची आराधना समझकर करना चाहिए क्योंकि उसी परदेश समाज का भविष्य निर्भर है।

–कीर्ति शर्मा (व.अ. हिन्दी)
रा.उ.मा.वि., 22 एन.टी.आर., नोहर (हनुमानगढ़)

सपनों की दुनिया से जब हम यथार्थ की तरफ आते हैं तो यथार्थ से सामना होते ही सपने सुहाने तो लगते हैं लेकिन विचार कौंधता है कि काश! ये सपना ना होकर यथार्थ होता। जिस तरह किसी सुन्दर भवन के निर्माण से पहले कागज पर उकेरा नक्शा उस भवन का प्राथमिक बिन्दु होता है, ठीक उसी तरह किसी भी सन्दर्भ में देखे गये सपने हकीकत के आधार बिन्दु कहे जायें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। मेरे सपनों के संसार में भी एक 'शिक्षक' रहता है। मेरे सपनों का शिक्षक वास्तविक संसार में आकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें तो कितना बेहतर हो।

चूंकि मेरे सपनों का शिक्षक प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली से शिक्षित है तो जाहिर है कि वह उच्च नैतिक मूल्यों से संस्कारित है। वर्तमान समय में सिर्फ नैतिकता पढ़ने में मिली है। व्यवहार से नैतिक मूल्य गायब है इसलिए मेरा सपनों का शिक्षक विद्यालय में विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा से संस्कारित करता है। मेरे सपनों का शिक्षक भली–भांति जानता है कि दिखने में प्रगति की चकाचौंध के बीच विज्ञान के चमत्कारों के साथ ही मानव ने सम्पूर्ण विश्व को 'ग्लोबल विलेज' में तब्दील कर दिया है।

लेकिन साथ ही साथ ''नैतिकता'' रूपी संस्कार से विहीन मानव मशीनी मानव बनता जा रहा है इसलिए मेरे सपनों का शिक्षक विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय चाहता है। मेरे सपनों का शिक्षक चाहता है कि डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, अध्यापक बनने के साथ ही आपका विद्यार्थी एक जिम्मेदार सामाजिक प्राणी भी बने जिसके ज़ेहन में केवल भौतिकवाद ना होकर घर परिवार माता–पिता हो। सामाजिक रिश्ते हो, बुजुर्गों की सेवा की भावना भी हो।

मेरे सपनों का शिक्षक यह मानता है कि जो स्वयं रोज पढ़ता है वही रोज पढ़ाने का अधिकारी है अतः स्वाध्याय मेरे सपनों के शिक्षक का मूल मंत्र है।

मेरे सपनों का शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को सीधा प्रकृति से संवाद करवाता है। क्योंकि मेरे सपनों का शिक्षक ये मानता है कि प्रकृति स्वयं एक महान शिक्षक है। भले ही हम प्रकृति के रहस्यों को पूर्ण रूपेण समझ ना पाएं तथापि ये भी सत्य है कि प्रकृति से निकटता हमें विचारवान बनाती है। प्रकृति के करीब रहने वाला व्यक्ति कृत्रिमता और वास्तविकता के अन्तर को सहजता से सझम पाने में सक्षम हो जाता है।

मेरे सपनों का शिक्षक अपने विद्यार्थियों को मात्र 'शब्द ज्ञान', करवाकर कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं करना चाहता अपितु उन्हें 'शब्द शक्ति' से परिचित करवाकर एक ऐसा सुशिक्षित, सुसंस्कारित जागरूक नागरिक बनाने की दिशा में प्रवृत्त करना चाहता है जहां मेरे सपनों के शिक्षक का विद्यार्थी अशिक्षा को एक दंश और महापाप समझे तथा शिक्षा रूपी हथियार में गरीबी, पिछड़ापन, सामाजिक बुराइयों, वैमनस्यता, नफरत, बीमारियों, कुपोषण, सामाजिक अव्यवस्था, विद्रुपताओं, शोषण, दमन, उत्पीड़न आदि का संहार कर सके तथा सामाजिक समरसता, सौहार्द्र भाईचारा स्थापित करते हुए तीव्र सामाजिक विकास के साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन कर सके।

मेरे सपनों का शिक्षक चाहता है कि विद्यालय हकीकत में शिक्षा के मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित हो। जब हम शिक्षा के मंदिर के रूप में विद्यालयों को देखते है तो हमारा अभिप्राय ये होता है कि जिस तरह मंदिर में रूहानी सुकुन के साथ भक्त शान्त चिन्त से अपने आराध्य के चिन्तन में लीन होकर दुनियादारी से कुछ समय के लिए विमुख होता है ठीक उसी तर्ज़ पर मेरे सपनों का शिक्षक ऐसा वातावरण निर्मित करता है कि विद्यार्थी शांति और सुकुन के साथ पढ़ाई इबादत की तरह करते है।

मेरे सपनों का शिक्षक चूंकि प्राचीन ऋषि परम्परा और आध्यात्मिकता से प्रभावित है। अतः वह अपने विद्यार्थियों को आधुनिक जीवन शैली के तनावों से बचाना चाहता हैं तनावमुक्त जीवन शैली के लिए मेरे सपनों का शिक्षक विद्यार्थियों को समग्र भोग और प्राणायाम की शिक्षा देता है। ना केवल शिक्षा देता है वरन् प्रशिक्षित करके व्यावहारिक जीवन में योग प्राणायाम को अपनाकर दिनचर्या का हिस्सा बनाना है। इसी बात की प्रेरणा मेरे सपनों का शिक्षक प्रतिदिन अपने विद्यार्थियों को देता है।

मेरे सपनों का शिक्षक अपने विद्यार्थियों का बेहतर शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण करता है उन्हें प्रारम्भ से ही सतत् आत्म मूल्यांकन के लिए दीक्षित करते हुए कैरियर निर्माण की ओर अग्रसर करता है।

मेरे सपनों का शिक्षक अपने धर्म का पालन करने वाला लेकिन विश्व के अन्य तमाम धर्मो का समान आदर करने वाला है। तो निश्चित ही हम यह उम्मीद कर सकते है कि मेरे सपनों के शिक्षक के विद्यार्थी भी धार्मिक

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

कट्टरता से मुक्त होंगे।

मेरे सपनों के शिक्षक की यह स्पष्ट मान्यता है कि धर्म एक व्यक्तिगत विषय है। मेरे सपनों का शिक्षक यह मानता है कि धार्मिक होना बुरी बात नहीं लेकिन धर्मान्धता बेहद बुरी बात है।

मेरे सपनों का शिक्षक अपने विद्यार्थियों को मानव धर्म शिक्षा देता है। मेरे सपनों का शिक्षक यद्यपि अत्याधुनिक सूचना तकनीकी का पक्षधर है कि लेकिन साथ ही वह यह भी चाहता है कि इंटरनेरट, फेसबुक, व्हाट्सअप बच्चों का बचपन ना छीन ले। बच्चों को फुटबॉल, बॉलीबाल कबड्डी, कुश्ती से परिचित करवाना चाहता है। अपने विद्यार्थियों को शारीरिक रूप से हष्ट पुष्ट बनाने के साथ ही बुद्धि विकास में सहायक मानसिक खेलों में भी पारगंत बनाना मेरे सपनों के शिक्षक का लक्ष्य है।

सपने ही वास्तविकता की भावभूमि बनते है। जो सपने देखते हैं वो ही नीड़ का निर्माण भी करते हैं। मेरे सपनों का शिक्षक चाहे पूर्ण रूपेण वास्तविक रूप में ना मिले लेकिन मेरे सपनों का शिक्षक प्रेरणा कुंज का कार्य तो कर ही सकता है।

–नदीम अहमद 'नदीम'

जैनब कॉटेज, बड़ी कर्बला मार्ग, चौखूंटी, बीकानेर

शिक्षक कैसा हो, शिक्षा कैसी हो, शैक्षिक व्यवस्था का स्वरूप कैसा हो...? ये प्रश्न सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक रहे हैं। हम दो समय (युग) की परस्पर तुलना करते हैं और सामान्यत: निष्कर्ष स्वरूप घोषित करते हैं कि वर्तमान की तुलना में पुरातन शिक्षा अच्छी थी, शिक्षक अच्छे थे। इसे शिक्षा का युगीन स्वभाव कह सकते हैं। मगर सचाई यह है कि हर काल की तत्समय आलोचना होती है जो बाद के काल में ठीक प्रतीत होती है। यहाँ पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्चा पर ध्यान देने की जरूरत है। वे समय, देश, काल के अनुसार बदलते रहते हैं। तब वे तत्व कौन से हो सकते हैं जो हर युग में समान रहते हैं। गहराई से विचार करें तो इनमें प्रधान तत्व शिक्षक के रूप में सामने आता है।

शिक्षक अपने विषय व हुनर में प्रवीण हो, उसकी शिक्षण विधा प्रभावी हो, उसके पढ़ाए छात्र–छात्राओं को परीक्षा में उत्तम सफलता मिले, ये कतिपय अपेक्षाएं हैं जिन्हें हम शिक्षकों से करते हैं। शिक्षक का आचार, विचार, व्यवहार ऐसा हो जो सम्पर्क में आने वालों विशेषकर उसके शिष्यों में उत्तम नैतिक गुणों का विकास करें। महात्मा गाँधी ने जोर देकर कहा है कि उन्हें वे सब अब याद नहीं है जो उन्हें शिक्षकों ने किताबों से पढ़ाया था लेकिन वह सब उन्हें अभी भी याद है जो उन्होंने किताबों से परे शिक्षकों के आचरण से सीखा था। अत: शिक्षक ऐसा हो जो अपने आचरण के आदर्श शिष्यों में रोपित कर दें, बीज की तरह। ये आदर्श चरित्र वृक्ष बनकर उसे समाज में महिमावान बनाने में मददगार बनेंगे। शिक्षक के उत्तम गुण शिष्य के चरित्र के अंग बन जाए। इसी में शिक्षक होने की सार्थकता है।

–अन्नपूर्णा ओझा, एम.ए., बी.एड.

जयपुर–302001

शिक्षा और शिक्षक के बारे में कुछ भी कहने से पूर्व हमें इतिहास की ओर जाना चाहिए। वैदिक काल, पौराणिक काल, मध्यकाल और वर्तमान काल– इन चार संदर्भो में बात करते हैं। वैदिक काल मे शिक्षाप्रदाता को आचार्य कहते थे। वे आचार्य तपस्वी, साधनानिष्ठ, सच्चे, सरल और परहितेशी होते थे। वे स्वयं को तपाते थे। आचार्य यानी आचरण की दृष्टि से जो सर्वोत्तम हो। जिसका आचरण आदर्श अनुकरणीय हो जिसे अंगीकार कर छात्र भविष्य के उत्तम समाजजन (Socialzen) बन सके। आचरण सिखाने के लिए औपचारिक पाठ्यक्रम और सप्ताह के दिनों तथा दिन के घंटों का हिसाब पर्याप्त नहीं होता। इसके लिए छात्र को गुरु गृह (आश्रम) में रखा जाता था। वहाँ सब कुछ अनौपचारिक होता था। माँ–बाप के साथ निज घर में रहने के सृदश ही गुरु गृह में रहना होता था। वहाँ शिक्षा ग्रहण कर रहे बटूक धनी–निर्धन, बड़े–छोटे का विभेद किए बिना गुरु माता के निर्देशानुसार काम करते थे और (Learning by doing) विधि से थोडे. समय में ही ज्ञानार्जन कर लेते थे। तुलसी बाबा कहते हैं–

गुरु गृह पढ़न गए रघुराई।
अल्पकाल सब विद्या पाई।।

आचार्य के बाद 'गुरु शब्द पर चर्चा करते हैं। गु+रु अर्थात् जो अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर शिष्य में ज्ञान की ताकत का संचार करें। गुरु से आचार्य अधिक वजनदार है। निसंदेह गुरु की महिमा वंदनीय है मगर कहीं दूर इसमें घोंस वाली प्रकृति दिखाई देती है। उदाहरण के लिए...गुरु वाक्यम् जनार्दनम व बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताय। आचार्य विनम्रता व त्याग की पराकाष्ठा होता है। शिष्य एक दृष्टा एवं विश्लेषक भी होता है। अत: गुरु के प्रति अंध आस्था भी उचित नहीं लगती। उसे समीक्षा करनी चाहिए। इसके पश्चात् मध्यकाल व वर्तमान में आचार्य व गुरु शिक्षक एवं सुविधा प्रदाता (Facilitator) की भूमिका में आ गए। अब मशीनवत कलेण्डर एवं कार्यक्रम बनकर बच्चों को पढ़ाया जाने लगा है। निजी क्षेत्र में शिक्षा ऐसे मिल रही है जैसे दुकानों में सामान मिलता है। विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक ग्राहक तथा स्वयं शिक्षक दुकानदार बन गए हैं जो अपनी–अपनी दुकानें सजाकर शिक्षा का कारोबार कर रहे हैं। जैसे घरेलू उपयोग की वस्तुओं की बिक्री के लिए विज्ञापन दिए जाते हैं, प्रलोभनकारी स्कीमें घोषित की जाती है, वैसे ही शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षण संस्थाओं का विज्ञापन किया जाता है। समाचार पत्रों के मुख्यपृष्ठ पर फुल पेज के विज्ञापन सहज ही में देखे जा सकते हैं। नैतिक शिक्षा और उत्तम संस्कार पुस्तकों से पढ़ाने के विषय नहीं हैं। ये तो शिक्षक के हृदय से निकलकर विद्यार्थी के हृदय में हृदयगंम होने वाले विषय हैं जिसके लिए शिक्षक को सही मायने में आचार्य बनना होगा।

–गिरवर प्रसाद बिस्सा, 'शास्त्री'

2 डी, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

'कैसा हो आज का शिक्षक' इस प्रश्न का जवाब जब मैं एक अभिभावक के रूप में खोजता हूँ तो असमंजस में घिर जाता हूँ। किंचित आँखें बन्द करके उसकी झलक देखने का प्रयास करता हूँ। महात्मा कबीर और न जाने कौन–कौन से चरित्र मस्तिष्क में घिर जाते हैं और बीच–बीच में राज, समाज, शिक्षार्थी सब दिखने लगते हैं। खेर, मूल मेरे सपनों का शिक्षक/प्रश्न कैसा हो आज का शिक्षक पर आते हैं।

मेरा मानना है कि वैदिक काल अथवा

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

पौराणिक काल के आचार्य एवं गुरु के चरित्र जैसी अपेक्षा आज के वैश्विक युग (Global Age) में शिक्षक से करना उचित नहीं है। इस धरती पर रहने वाला हर प्राणी अपने वातावरण व परिवेश से अवश्य प्रभावित होता है। उससे टकराना नासमझी होती है। इस आदर्शतम स्वरूप से चलो उसे मुक्त कर देते हैं मगर आज जो शर्मनाक घटनाएं (जिन्हें उदाहरणस्वरूप लिखने में शर्म आती है) शिक्षक महोदय के पेटे उजागर होती है कि जिन्हें जानकर स्कूली व्यवस्था एवं शिक्षकों से मन फट जाता है। उनके प्रति अपेक्षित श्रद्धा एक क्षण में अश्रद्धा, अविश्वास, क्षोभ, घृणा में बदल जाती है। हाँ, यह माना कि आज का युग अर्थ एवं सुविधाओं का युग है और शिक्षक भी इसी समाज का अंग है। मेरा मत यहाँ मध्यम मार्ग अपनाने का है। शिक्षक बनने का फैसला करना एवं संकल्प लेने व उसका व्रती बनने जैसा होता है। अब तो वेतन के रूप में काफी अच्छा पैसा हर माह मिलता है। अवकाश एवं अन्य सुविधाएं भी बेहतर है।

मेरा बस इतना ही कहना है कि शिक्षक कोई भी कार्य करते समय स्वयं के महान परम्परा के उत्तराधिकारी शिक्षक होने को याद कर लें। वह दूसरों को राह दिखाने वाला है। कल को लोग क्या कहेंगे...जैसी बातों पर विचार कर लें तो कोई गलत काम होगा ही नहीं। अपनी ड्यूटी सप्रतिमान बजाते हुए यदि खेती, पशुपालन आदि से वह दो पैसे कमाता है तो किसी को क्या एतराज होगा। एक वाक्य में कहें तो समय की पाबन्दी, वाणी का परिष्कार, सद्चरित्र, संयम, सदाचार, स्वाध्याय, संवेदनशीलता परिश्रम के पथ पर अग्रसर रखना कि, ''मैं शिक्षक हूँ और विद्यालय में पढ़ रहे बच्चे मेरे ही हैं।''

शिक्षकों के महत्व और समाज निर्माण में उनकी भूमिका को रेखांकित करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा है, 'मानव संसाधन के विकास में शिक्षकों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। यह संसाधन हमारी सबसे बड़ी संपदा है। शिक्षक हमें ज्ञान और कौशल देते हैं, हमारे चरित्र को ढालते है और हमारे मस्तिष्क को विमुक्त करते हैं। बचपन में वे हमारे लिए सत्य एवं सद्गुणों को साकार करने वाले आदर्श होते हैं। उन पर बहुत बड़ा दायित्व है। उनके प्रयासों से हमारे लक्ष्य और आकांक्षाएं पूरी हो सकती है।' बस इन विचारों को शिक्षक अपने हृदय में संजो लें, उन्हें आदर्श शिक्षक बनते देर नहीं लगेगी। एक अभिभावक के लिए यही सपनों का शिक्षक है।

–मदनलाल पुरोहित, प्र.अ.
रा.मा.वि., फतेहपुर, तह. संगरिया
(हनुमानगढ़)

माह : सितम्बर, 2014

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.9.2014	सोमवार	उदयपुर	6	विज्ञान	5	पदार्थों का पृथक्करण
2.9.2014	मंगलवार	बीकानेर	9	संस्कृत	11	पर्यावरणम्
3.9.2014	बुधवार	जयपुर	4	हिन्दी	4	सूत का रेशम
5.9.2014	शुक्रवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		शिक्षक दिवस
6.9.2014	शनिवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	6	लोकतान्त्रिक अधिकार
8.9.2014	सोमवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व साक्षरता दिवस
9.9.2014	मंगलवार	जयपुर	9	हिन्दी	2	मेरे संग की औरतें
10.9.2014	बुधवार	जोधपुर	7	हिन्दी	6	रक्त और हमारा शरीर
11.9.2014	गुरुवार	उदयपुर	5	हिन्दी	8	हॉकी का जादूगर
12.9.2014	शुक्रवार	बीकानेर	8	विज्ञान	12	घर्षण
13.9.2014	शनिवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	3	दाँत एवं जीभ
15.9.2014	सोमवार	जोधपुर	5	हिन्दी	5	गवरी का खेल
16.9.2014	मंगलवार	उदयपुर	6	विज्ञान	7	पौद्यों को जानियें
17.9.2014	बुधवार	बीकानेर	7	हिन्दी	11	रहीम के दोहे
18.9.2014	गुरुवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	4	बदला जमाना बदला खाना
19.9.2014	शुक्रवार	जोधपुर	10	सामाजिक विज्ञान	5	औद्योगिकीकरण का युग
20.9.2014	शनिवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	9	फलते-फूलते पेड़ पौधे
22.9.2014	सोमवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		किशोर जागृति दिवस-सामान्य जानकारी
23.9.2014	मंगलवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	2	लोकतंत्र क्या? लोकतंत्र क्यों?
24.9.2014	बुधवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	राष्ट्रीय सेवा योजना		छात्र-छात्राओं के लिए महत्व व आवश्यकता
29.9.2014	सोमवार	उदयपुर	7	हिन्दी	9	चिड़िया की बच्ची
30.9.2014	मंगलवार	बीकानेर	4	हिन्दी	12	केसर की क्यारी

PDF-XChange Viewer
Click to buy NOW!
www.docu-track.com

पुस्तक चर्चा

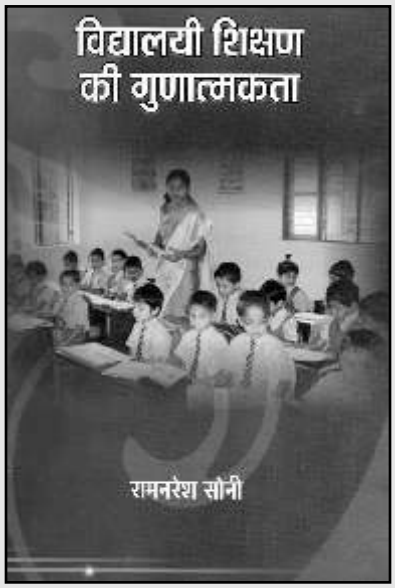

पुस्तक : विद्यालयी शिक्षण की गुणात्मकता
लेखक : रामनरेश सोनी
प्रकाशक : विकास प्रकाशन, जुबली नागरी भण्डार, स्टेशन रोड, बीकानेर-334001
पृष्ठ संख्या : 144
संस्करण : 2014
मूल्य : ₹ 300.00

❒ **ओमप्रकाश सारस्वत**

शिक्षा साहित्य के क्षेत्र में विद्यालयी शिक्षण की गुणात्मकता पुस्तक का पदार्पण शिक्षण कार्य से जुड़े व्यक्तियों के लिए इन दिनों चर्चा का विषय है। जितना खूबसूरत टाइटल है पुस्तक का, उतने ही खूबसूरत आलेख इसमें समाहित है। कथ्य के साथ भाषा, भाव, प्रवाह की दृष्टि से पुस्तक की समृद्धता इसी बात से पुष्ट हो जाती है कि पुस्तक के लेखक श्री रामनरेश सोनी हैं। वे बाल मनोविज्ञान के पारखी हैं। सफल शिक्षक होने के साथ कुशल संपादक एवं सरस लेखक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। वर्षो बरस शिविरा पत्रिका के संपादक रहे श्री सोनी का पसीना शिविरा व नया शिक्षक पत्रिकाओं की सफलता का हेतु है। उनके अनुभवजन्य विचारों का आलेखबद्ध होकर पुस्तक रूप में आना निश्चय ही हर्ष व स्वागत का विषय है। बहरहाल पुस्तक की विषय वस्तु पर चर्चा करते हैं।

पुस्तक में कुछ 28 आलेख दिए गए हैं जिनका विस्तार 144 पृष्ठों में हैं। 'बच्चे को पढ़ने के लिए कब स्कूल भेजें' अभिभावकों का यह यक्ष प्रश्न सार्वभौमिक व सर्वकालिक है। शिक्षाशास्त्रियों एवं बाल मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रश्न का अपने-अपने हिसाब से उत्तर दिया है। विद्वान लेखक श्री रामनरेश सोनी ने अपने पहले आलेख में मूर्धन्य शिक्षाविदों यथा फ्रांसिस पार्कर, प्लेटो, पेस्टोलोजी, जोन केमेनियस, जॉन डीवी, बर्टेण्डरसेल, मेरिया मोंटेसरी, महर्षि अरविन्द, ज्यां पियाजे, बेंजामिन ब्लूम आदि के सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए प्रश्न का उचित समाधान सुझाने का सार्थक प्रयास किया है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप माँ-बाप, विशेषकर माँ की व्यस्तता के कारण छोटे बच्चों को नर्सरी में दाखिल कराने की मजबूरी से उपजी नर्सरियां बाल शिक्षण की आवश्यकता स्वरूप न होकर औद्योगीकरण के तकाजे से जन्मी हैं। वे ऊँची फीस वसूल करती है। इस सच्चाई का बहुत सुन्दर वर्णन हुआ है जो बालमन के पारखी श्री सोनी के मन की व्यथा का चित्रण करता है। दरअसल यह आलेख हर परिवार में उपलब्ध करवाया जाना चाहिए भले ही वह एक फोल्डर के रूप में क्यों न हो । यह शिक्षकों के साथ माता-पिता के लिए पढ़ने योग्य है।

शिक्षा तभी महिमावान हो सकती है जब ज्ञान की सत्ता समाज में सिरे स्थान प्राप्त करे। शिक्षा मानव संसाधन विकास तथा राष्ट्रीय विकास का सशक्त प्लेटफार्म तभी बन सकती है जबकि उसे उचित स्वायत्तता मिले। श्रीमद्भगवद्तगीता (4/38) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है, 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निसंदेह कुछ भी नहीं है।

ज्ञान यदि संसार की सबसे बड़ी ताकत है तो शिक्षा मतोमत ताकतवर सिद्ध होती है क्योंकि शिक्षा को ज्ञान का पर्याय माना जाता है। पुस्तक में लेखक कहते हैं (पृ.15) 'शिक्षा यदि ज्ञान का पर्याय है और ज्ञान की सत्ता को सर्वोपरि स्थान देना है तो शिक्षा को स्वतंत्र, तटस्थ, विवादों से ऊपर रखना होगा। ज्ञान सार्वभौम होता है और उसका प्रयोजन जीवन व जगत के मध्य संतुलन स्थापित करके मनुष्य और उसके परिवेश को सुखी बनाना होता है। सूचनाओं को ज्ञान मान लेने की नादानी पर कलम चलाते श्री सोनी जब यह उद्घाटित करते हैं कि आज की शिक्षा विद्यार्थियों को कर्म-जगत और अपने परिवार से अलग करती है तो एक भयावह सच्चाई आंखों के सामने तैर जाती है जो आह करने को मजबूर कर देती है। आज की विद्यालयी शिक्षा की स्थिति बताते हुए उसमें सुधार की आवश्यकता पर अत्युत्तम विवेचन पुस्तक में (पृ.14-18) किया गया है।

अर्से पहले किसी अखबार में एक लेख पढ़ा था-'शिक्षा और दीक्षा : बीच में कहां से आ गई परीक्षा' शिक्षा का अन्तिम चरण विद्यार्थी को दीक्षित कर समाज का सदस्य बनाना है। मगर इससे पहले परीक्षा। यह कैसी अनिवार्यता, यह कैसा कानून। पुस्तक में 'शिक्षा तंत्र : गुणवत्ता और परीक्षा' में इस विषद विषय पर बहुत सारगर्भित चिन्तन सामग्री दी गई है। वर्तमान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा की जैसे पुष्टि करते हुए लेखक कहते हैं, 'रोजाना नियमित रूप से पढ़ाने वाला शिक्षक अपने बालकों का एक तरह से रोज मूल्यांकन किया करता है। वह जानता है कि कौन बालक कहां-कहां, किन-किन पक्षों में कमजोर या आगे है। ऐसे में स्वयं उसे ही बालकों के साथ अधिक परिश्रम करने की जरूरत पड़ती है। फिर परीक्षा का वर्तमान तंत्र सिर्फ स्मृति की जांच करता है, जो उचित नहीं है।' (पृ.21)

वर्तमान में एक संकट शिक्षक एवं विद्यालय की साख का भी है। यदि शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षण संस्था पर से ही विश्वास उठ जाएगा तो फिर रह ही क्या जाएगा। उपयुक्त दिशा वाली स्पष्ट शिक्षा व उत्तम शिक्षक ही इस साख को बचा सकते हैं। विख्यात शिक्षा शास्त्री प्रो. वी.वी. जॉन ने कितना सटीक कहा था, 'शिक्षा का जो ढर्रा देश में चल रहा है, उसमें सच पूछो तो शिक्षा की आत्मा नहीं,उसका कंकाल भर है। एक खूबसूरत कल की तलाश का भाव तो है, लेकिन भटकाव इतना है कि उससे हमारा आज भी चौपट हो रहा है।' (पृ.26)

जैसे मन्दिर की प्रतिष्ठा पुजारी की सघन व उत्कट आस्था पर निर्भर करती है, ठीक वैसे ही विद्यालयों के प्रति आस्था उत्पन्न करने का

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

काम शिक्षकों का है। जब विद्यालय महिमावान बनेंगे तो शिक्षकों की महिमा स्वत: ही बढ़ जाएगी।

समीक्ष्य पुस्तक में समाहित अनुभव आधारित बाल शिक्षण (पृ.29-41) दरअसल शिक्षा से सम्बद्ध व्यक्तियों के बीच एक संवाद है जो बहुत रोचक और प्रभावशाली है। इसमें अध्यापक, प्रधानाध्यापक, सरपंच, अभिभावक, विद्यालय निरीक्षक सभी हैं। विद्यालयों में पढ़ाई व अन्य प्रवृत्तियों के रूप में होने वाले विभिन्न क्रियाकलापों के सहारे शिक्षकों, अभिभावकों बच्चों, व्यवस्था सभी को बहुत अच्छी सीख दी गई है। गणित, हिन्दी, भूगोल आदि विषयों के सहभागी शिक्षण की विधि बताई गई है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को इसका अवश्य परायण करना चाहिए।

सीखने में मधुरता के पक्षधर लेखक कहते हैं (पृ.45) कि सच्चा स्कूल वह है जहां बच्चों की बचपन की खुशियां गायब न हो जाएं, जहां इस बात की चिन्ता की जाए कि संसार का बोध बच्चों के लिए महज उबाऊ पढ़ाई बन कर ही न रह जाए। शिक्षक का काम मशीन की तरह बच्चों को पढ़ाना भर नहीं है बल्कि उन्हें सीखने के लिए सतत प्रेरित करते हुए उनके व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास करना है। अपेक्षाएं करके तो देखिए, वे अवश्य फलीभूत होती है। प्रसिद्ध मानवशास्त्री रॉबर्ट रोजेंथल ने इसी तथ्य पर सिद्धान्त दिया था कि किसी से अपेक्षाएं की जाती हैं वे तो अवश्य पूरी होती है। शिक्षक एवं बाबू खां छात्र के चरित्रों द्वारा इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त का बहुत सुन्दर विवेचन पुस्तक में किया गया है। (पृ.50)

The Beautiful Tree यह उपमा 1931 में महात्मा गांधी ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को दी थी। महात्माजी ने सन् 1931 में लंदन की एक सभा में कहा था, 'ब्रिटिश शासन में वह खूबसूरत पेड़, अब बरबाद हो चुका है। सौ वर्षो की ब्रिटानी हकूमत में भारतवासी पहले की बजाय कहीं अधिक निरक्षर हुए हैं।' इस विषय पर अठारहवीं शताब्दी की शिक्षा पर पुस्तक में तथ्यपरक जानकारी दी गई है। (पृ.59) इसी प्रकार पुस्तक तोत्तोचान को आधार बनाकर आनन्ददायी शिक्षा का रुचिकर विवेचन किया गया है। जापान में 1937 में स्थापित तोमेय गाकोन स्कूल के संस्थापक शिक्षक सोसाकु कोबायाशी कहते हैं, 'बालकों को तैयार शुदा ढांचे में बंद मत करो। उनको निर्बन्ध प्रकृति में रहने दो। उनकी प्रफुल्ल इच्छाओं को रोंदो मत। उनके सपने हमारे तुम्हारे सपनो से विशाल होते हैं।' (पृ.60-63) शिक्षा से जुड़े इन प्रकाशनों एवं दृष्टांतों से शिक्षकों को अवश्य रू-ब-रू होना चाहिए।

लगभग तीन दशक पूर्व (1981) जिस पुस्तक ने जापान के प्रकाशन इतिहास में तहलका मचा दिया था उस पुस्तक का नाम है- तोत्तोचान। यह शिक्षा पर लिखी एक पुस्तक है जिसने बिक्री के सारे रिकार्ड ध्वस्त कर दिए थे। यह उल्लेखनीय है कि पुस्तक तोत्तोचान की 45 लाख प्रतियां हाथोहाथ बिक गई और अगले एक वर्ष में 5 पेपरबेक संस्करण निकालने पड़े थे। जापानी में तोत्तोचान का अर्थ होता है खिड़की के पास रहने वाली लड़की। असहज व असामान्य बच्चों को भी कैसे पढ़ाया जा सकता है और शिक्षण का वास्तविक दर्शन व आनन्द क्या है यह इस पुस्तक में बहुत सरल एवं रुचिकर तरीके से समझाया गया है। तोत्तोचान पुस्तक की समीक्ष्य पुस्तक कृति विद्यालयी शिक्षण की गुणात्मकता से यह रिश्ता है कि इसमें तोत्तोचान पुस्तक की कहानी अद्भुत तरीके से कही गयी है। (पृ.60-63)

'नानी कहो कहानी' यह जुमला छोटे बच्चों की जबान पर अक्सर रहता है। शरारत करते, धमाचौकड़ी मचा रहे बच्चों के कानों तक 'एक था राजा' पहुंचते ही शरारत न जाने कहां गायब हो जाती है। गिजू भाई से लेकर सभी शिक्षाविदों ने कहानी के महत्व पर लिखा है। बाल शिक्षण में कहानी की भूमिका विषय पर बहुत सुन्दर विवेचन पुस्तक में (पृ. 64-68) किया गया है। श्री रामनरेश सोनी द्वारा लिखी 'कहानी की वह कहानी' प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को अवश्य पढ़नी-सुननी चाहिए। श्री रामनरेश सोनी इतना सरस लिखते हैं कि उनका लिखा पढ़ते समय कभी-कभी मस्तिष्क में यह सवाल उभर आता है कि कुछ पढ़ रहे हैं या किसी के मुंह से सुन रहे हैं। आनन्ददायी शिक्षा के लिए कहानी किसी वातायन से कम नहीं होती।

समीक्ष्य पुस्तक में एक अध्याय गृह कार्य के बारे में है। शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों ही जिसे उबाऊ समझते हैं, उसे सरस सरल व रसीला बनाने के नुस्खे संवाद शैली में पुस्तक की शोभा बढ़ाते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षाविद डॉ. ज्यां पियाजे का नाम सीखने के सिद्धान्त एवं संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के सिलसिले में सहज ही में आता है। डॉ. पियाजे का मानना है कि बुद्धि का विकास जन्म के साथ बंधा हुआ नहीं है। ज्यों-ज्यों शरीर एवं अवयवों का विकास होता है, त्यों-त्यों बुद्धि विकसित होती जाती है। आयु के हिसाब से पियाजे ने चार चरणों में संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया जिन्हें शिक्षा की रूपरेखा बनाते समय प्रत्येक कक्षा के पाठ्यक्रम की निर्मिति में ध्यान में रखना उपयुक्त रहता है। बहुत सुन्दर वर्णन पुस्तक में किया गया है। (पृ.69-77)

अधिगम में सक्रियता की सदैव मान्यता रही है। Law of Practice, Law of Readiness, Law of effect इसी सक्रियता की पुष्टि करते हैं। इनकी बहुतेरी विधियां हैं। मानस मंथन (Brain storming) सिद्धान्त भी अपनी जगह महत्वपूर्ण है। कुल मिलाकर शिक्षा के क्षेत्र में इनका अपूर्व स्थान है। इन सब सिद्धान्तों, विधियों, उप-विधियों का सांगोपांग विवेचन समीक्ष्य पुस्तक की एक और विशेषता है। (पृ. 78-97)

समीक्ष्य पुस्तक में एक आलेख 'शिक्षण में नए प्रयोग' है। यह अध्याय शिक्षण को प्रभावी व आनन्दपूर्ण बनाने की दिशा में बहुत राज की बातें बताने वाला है। जापान के लोकप्रिय सन्त बोको जू के दृष्टान्त के साथ शुरू हुई बात महात्मा गाँधी के फिनिक्स आश्रम तथा टॉलस्टॉय आश्रम से होकर आज की स्कूलों एवं शिक्षकों तक बहुत चतुराई से पहुंचती है। पाठ का सार बताते हुए मनीषि लेखक कहते हैं कि शिक्षण मात्र सूचनाएं पहुंचाना नहीं होकर ज्ञान को स्थानान्तरित कर उसे पचाने और आत्मसात करवाने का नाम है। इसी प्रकार रास्ता इधर है पाठ में लेखक प्रश्न करते हैं कि शिक्षण का मूल प्रयोजन बालकों की बुद्धि जगाना है अथवा चंद तथ्यों को मात्र कंठस्थ कराना। जवाब देते हुए वे कहते हैं कि शिक्षकों को एक ओर जहां बालकों की खोजी वृत्ति को विकसित कर उनमें अन्तर्निहित क्षमताएं विकसित करना है, वहीं

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

अपने उत्तम व्यवहार से उन्हें सदाचारी और नीतिवान भी बनाना है ताकि वे आगे चलकर उत्तम समाज का निर्माण कर सके। (पृ.98-113)

शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों के अनमोल विचार पुस्तक में यथास्थान संजोए गए हैं। डॉ. राधाकृष्णन् की ऋषि दृष्टि अध्याय (पृ.114-116) में आर.के. व्यक्ति के मन व मस्तिष्क में व्याप्त प्रदूषण की चर्चा करते हुए कहते हैं,'दुनिया भर के दंगे और फितूर पहले मनुष्य के मस्तिष्क में पैदा होते हैं और तब वे आकार ग्रहण करते हैं जंग के रूप में, साम्प्रदायिक तनाव के रूप में और आपसी वैमनस्य के रूप में। यदि मस्तिष्क का प्रदूषण ही समाप्त हो जाए तो...। तो फिर न दंगे होंगे, न फसाद, न वैमनस्य होगा और न तनाव। यह आलेख यथावत शिविरा के इसी अंक में दिया जा रहा है।

छात्र अभिभावक संवादिता अध्याय में लेखक अभिभावकों को उनके उत्तरदायित्व को स्मरण कराते हुए कहते हैं कि अब वह समय नहीं रहा कि डाक के डिब्बे में चिट्ठी डालने की तरह अपने बच्चों को स्कूल में डालकर माता-पिता निश्चिंत हो जाए। यह प्रवृत्ति पहले भी गलत थी और आज भी चिन्तनीय है। अगर उनसे यानी बच्चों से आदर्श संतान की अपेक्षा है तो पहले माता-पिता को भी आदर्श आचरण करना होगा।' (पृ. 125-128)

समीक्ष्य पुस्तक के अन्य आलेख बढ़ी आयु में सीखना, प्रखर मनोविज्ञानवेता : वाटसन, वैयक्तिक शिक्षण प्रणाली, स्कूल से बाहर भी है ज्ञान, किसकी कृति है हमारी संस्कृति, रचनाशीलता की दृढ़ भित्ति- अध्यापक अन्वेषण बुद्धि जगाने का आग्रह भी बहुत पठनीय एवं मननीय है।

पुस्तक में प्रयुक्त कागज उच्च गुणवत्ता लिए है। मुद्रण साफ-सुथरा है। प्रूफ सम्बन्धी कतिपय त्रुटियों का आगामी संस्करण में समाधान हो जाएगा, यह अपेक्षा है। आवरण खूबसूरत एवं संदेशापरक है। आशा है कि गुणात्मक शिक्षा एवं शिक्षा की गुणात्मकता में रुचि रखने वाले शिक्षकों एवं अभिभावकों में पुस्तक का स्वागत होगा।

-वरिष्ठ संपादक (शिविरा)

पुस्तक समीक्षा

मंजर

लेखक : राजेन्द्र कुमार **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, करतारपुरा, औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर-06 **संस्करण** : 2013 **पृष्ठ सं.** : 96 **मूल्य** : ₹ 70.00

समीक्ष्य पुस्तक 'मंजर' युवा लेखक कवि श्री राजेन्द्र कुमार का प्रथम प्रकाशित काव्य संग्रह है। इस संग्रह में दोहे, गजलें, गीत, कविताएं, कुन्डलियां एवं क्षणिकाएं सम्मिलित की गई है। पुस्तक का शुभारम्भ विद्या की देवी माँ सरस्वती के नाम प्रार्थना 'माँ शारदे! वरदान दे!' से होता है। इस भावपूर्ण प्रार्थना में कवि ने शिक्षा की महिमा का बहुत सुन्दर चित्रण किया है। पुस्तक में शामिल 25 दोहों में सभी एक से बढ़कर एक है। आज आधुनिकता के दौर में माँ-बाप के प्रति बच्चों की बेरुखी को बताता दोहा कहता है-

पाला पोसा चाव से दी सपनों की पाँख।
बड़ा हुआ दिखला रहा, बाबूजी को आँख।।

एक और दोहा नजर फरमाएं-

गया शहर बेटा लिए आशाओं की पाँख।
दरसन को तरसा करें, अब वो बूढ़ी आँख।।

इंसानियत के गिरते मूल्य का भयावह शब्द चित्र एक दोहे में कवि राजेन्द्र यों प्रस्तुत करते हैं-

दुनिया के बाजार में इन्सां है हैरान।
चीजें महंगी हो गई, सस्ता है ईमान।।

मशहूर शायर निदा फाजली की गजलों की खुशबू राजेन्द्र के काव्य कर्म में आती है। अपनी रचना 'लिख' में वे लिखते हैं-

बड़े-बड़े ग्रंथों का रस आ जाए जिसमें,
सरल सहज और सुन्दर बानी लिख।
तसल्ली बड़ों को जोश जवानों को मिले
छोटे बच्चें की खातिर गुड़धानी लिख।

जहान रचना के अंश देखिए-

वतनपरस्ती झूठा बयान हो गया,
दिल का कोना वीरान हो गया।
कभी छोटे कभी बड़े के पास रहना,
मुखिया था, फालतू सामान हो गया।

कतिपय दिल को छू लेने वाली रचनाओं के अंश इस प्रकार है-

पिता की उम्र की आँखों का हिसाब,
दिवस उनींदे जागी रातें हर निवाले में है।
हो सके तो उसकी कीमत अदा कर देना,
पीड़ा तो माँ के पांवों के छाले में है।

(सियासत)

हिन्दू-मुस्लिम हो या सिक्ख ईसाई,
सभी मनुज मिलकर बैठें ऐसा दर दे मौला।
कुछ है जो गैरों की खातिर कांटों पे चलते हैं,
फूलों से उन सब लोगों की झोली भर दे मौला।

(मौला)

वादे सारे ऐसे लगते ज्यों कड़वी ककड़ी है,
आम आदमी जस का तस बातें बड़ी-बड़ी है।
जिन्दगी की अजब दास्तान तो देखो,
कभी प्यास और कभी बारिश की झड़ी है।

(आम आदमी)

पुस्तक में संजोई क्षणिकाएं, गीत एवं कुण्डलियां भी बहुत सटीक एवं रसभरी है। एक कुण्डली पैसा को ही देखिए-

साईं इस संसार में पैसे का है राज
पैसा है तो सब खुश है वरना है नाराज।
वरना है नाराज कभी मुँह से ना बोलें,
पैसों की है तुला उसी से सबको तोलें।
मोक्ष धर्म और सेवा से क्या करना भाई
बस जीवन में पैसा ही आए साईं।

पुस्तक के प्रस्तोता कवि श्री राजेन्द्र कुमार एक शिक्षक है। सभी रचनाएं भाषा, भाव एवं प्रवाह की दृष्टि से उत्तम तथा शिक्षाप्रदायक है। अत: शिक्षकोचित विनम्रता व संवेदनशीलता उनकी रचनाओं में बोलती है। पुस्तक में प्रयुक्त कागज, कवर पेज, मुद्रण, मुखपृष्ठ सब प्रभावी व गुणवत्तायुक्त है। मूल्य उचित है।

-करणीदान कच्छावा
शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय जिशिअ (प्राशि) बीकानेर

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

मौर्य सम्राट

लेखक : डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर **प्रकाशक** : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली **संस्करण** : 2014 **मूल्य** : ₹500.00 **पृष्ठ संख्या** : 358

'मौर्य सम्राट' चन्द्रगुप्त मौर्य-चाणक्य पर आधृत ऐतिहासिक उपन्यास है। डॉ. भटनागर ने हिन्दी साहित्य का भंडार खूब समृद्ध किया है। उनकी अनेक कालजयी कृतियों ने पाठकों मन-मानस में सदैव विवरण किया है। 'नीले घोड़े का सवार' अमृतघट, ज्योतिर्मय, सत्यमेव जयते, प्रभूति उपन्यास, एक टूकड़ा धूप आई कहानी, संग्रह, सारथिपुत्र आदि तथा रूप विद्याओं में लेखन। उन्हें सशक्त लेखकी की श्रेणी में इसमें समर्थ है।

आलोच्य कृति 'मौर्य सम्राट' इतिहास के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत की गई ह। कवींद्र रवींद्र ने कहा था- 'ऐतिहासिक सम्वत् चला ही रहता है, इसलिए इतिहास की प्रामाणिकता के विषय में अंतिम बात नहीं कही जा सकती। उस अंतिम उपलब्धि की प्रतीक्षा में ऐतिहासिक कथाकार हाथ-पर-हाथ धरे बैठा नही रह सकता। डॉ. भटनागर अपनी पूरी क्षमता से इस ऐतिहासिक कर्म में शुरू से है सम्बद्ध है। वे इतिहास-गंध से भली भाँति परिचित हैं, इसलिए इतिहास रस में डूबकर अमर रचनाएं ले आये हैं।

'मौर्य सम्राट' उपन्यास 56 अध्यायों में विभक्त है। ईसा से 344 वर्ष पूर्व खंडहरों में दफन इतिहास को रटा लेते हुए लेखक को अन्तहीन सम्पदा मिलती है। पहले सम्राट महापद्मनंद से लेकर उस वंश के अंतिम सम्राट घननंद को लेखक ने प्रस्तुत किया है। पर मुख्य कथा इस नंद वंश के विनाश की है। जिसे चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य सम्पन्न करते है। लेखक के शब्दों में यों तो इस इतिहास में असम्बद्धता है, और पाख भी है। साहित्य विश्वास सौंपकर चाहता है। यहां इतिहास और साहित्य एक दूसरे के सामने होते है।

लेखक ने इस उपन्यास में-चन्द्रगुप्त-चाणक्य की मुख्य कथा के साथ-साथ अनेक प्रासंगिक कथाओं की सृष्टि कर तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक षड्यंत्रों को चुना है। सुवासिनी-राक्षस-महाराज घननंद के प्रणम व्यवचारों में उस काल की कई अन्तः कथा और अन्तर्निहित हैं। इस उपन्यास में सुवासिनी का चरित्र जयशंकर प्रसाद के चन्द्रगुप्त से काफी हटकर है। सिकंदर की कथा इस उपन्यास के कथा-प्रवाह मोड़ने में पूरी तरह सक्षम है।

डॉ. भटनागर में इतिहास-रस को पहचानने की पूरी क्षमता हैं वे विविध गौण कथाओं का मुख्य कथा के साथ जोड़कर वस्तु का सुन्दर ताना बाना बुनते हैं कि कहीं भी तथ्य और कल्पना में अन्तर ही नहीं जान पड़ता। वे इस बात को बेबाकी से स्वीकारते हैं कि हमारे पास इतिहास लेखन की न दृष्टि थी और न उसमें रूचि-रूचाव के गहरे होते स्पंदन हमारे पास थे। सम्बन्धों की उष्मा के वे जीवंत हुए जिसे इतिहास ही साहित्य ही पुनर्जीवित कर सकता है। वाकई लेखक ने उन क्षणों को उपन्यास के माध्यम से पुनर्जीवित ही नही किए अपितु उनमें प्राण-प्रतिष्ठा भी की है।

लेखक ने सभी प्रमुख पात्रों की प्रकृति, जीवन शैली, आचार-व्यवहार, गुण-दोष सभी मंथन करने के बाद इसे प्रस्तुत किया है। चाणक्य, चन्द्रगुप्त, राक्षस नंद, आंभीक सिंहरण, सिकंदर, सेल्यूकस, दाण्डयायन, शरकार, वस्तुनि जैसे पुरूषों पात्रों के साथ सुवासिनी, अलका जैसी नारी पात्रों का भी सम्पूर्णता के साथ प्रकट किया है। - चाणक्य जैसे गंभीर व्यक्तित्व के प्रति चंद्रगुप्त का मत देखिए- '' चन्द्रगुप्त मौर्य ने अनुभव किया कि उसके सत्यमेव जो चाणक्य है, वह आचार्य से आंशिक सेनानायक है और उसके लिए इस धरा पर कोई काम कर लेना कठिन नही है। उसकी इच्छा शक्ति के सूत्र सुदृढ़ है और एकता का मंत्र सिद्ध किये हुए है। इस उपन्यास का चाणक्य कठोर है, वह चन्द्रगुप्त की भांति भावुक नही है और नही कहता है 'समझदारी आने पर यौवन चला जाता है।''

प्रारंभ से अंत तक यह उपन्यास पाठकों को बांधे रखता है अनेक रहस्य भी घटनाओं की सृष्टि कथा की जिज्ञासा में अभिवृद्धि करती रहती है। घटना क्रम इस प्रकार है-

1. चन्द्रगुप्त की पराजय व आचार्य चाणक्य के साथ चला गया।
2. पूर्व नीति में आचार्य चाणक्य की वंश का नाश करने की प्रतिज्ञा। चन्द्रगुप्त का मोम के शेर को पिंजरे से बाहर निकालना।
3. तक्षशिला राजकुमारी अलका का चाणक्य से मिलकर अपने भाई आंशीक के वंशद्वार तथा पूर्वाचार्यो तथा अलका द्वारा सांकेतिक नाम की रचना।
4. सिकंदर का पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण मालवा कुमार सिंहरत का हराना एवं सिकंदर का युद्ध। पर्वतेश्वर की पराजय, फिर यहां के लोगो द्वारा पर्वतेश्वर की हत्या।
5. नंद की विलासिता। अहं अमात्य शुक्रस तथा शरकार धन्य सुषा सिनी प्रणय । विभिन्न पर मंत्री का मुगल से सूत्रपात।
6. चन्द्रगुप्त तक्षशिला में सिकंदर द्वारा बंदी बनाया जाना और उसका पलायन। सिकंदर का महात्मा दाण्डयायन के अभ्यास में जुटना।
7. सिकन्दर का लौटना, उसके राज्य होलीकस की कन्या कनिका के सिंह से चन्द्रगुप्त द्वारा बचाना। अलका का तक्षशिला की साम्राज्ञी होना।
8. अंत में घननंद की मृत्यु। चन्द्रगुप्त का सम्राट बनना। कोनिली से विवाह।

अनेक छोटी बड़ी घटनाओं से बनी मुख्य कथा आज के परिवेश तथा संबंधों, युद्ध, शति आतंक, षडयंत्र, राजनीतिक एक पूरक आविर्षा भी निर्भर कराती है। कदम कदम लेखक का शंकराचार्य, वस्तु रचना, शील निरूपण संवाद, परिवेश, शिल्प-वैभव पुरूषों को आत्मा से करता चलता है।

भाषा पर लेखक का कमाल का अधिकार है। सभी प्रकार का चिंता-मनन जीवन की संघर्षशीलता कल्पना और सत्य के समन्वय जीजिविषा जाग्रत करने में सहयोगक है। यह जिजीविषा तथा महत्वाकांक्षा ही व्यक्ति का संभाल है-'वह जानता है कि आकाश नापा नहीं जा सकता। फिर उसके नापने की कल्पना-अल्पना बन उसके मन को मोहने लगती है।

इस कालजयी रचना की पूरी प्रशंसा करना संभव नही है। यह आजकल की दस्तावेज है। जस्टिस ने कहा था-जमीनी ताकत कैसे सम्राट तक का रास्ता तय कराती है, कौन-कौनसी रूकावटों पार करता कैसे-कैसे वह सम्राट के सिंहासन पर विराजमान हो सका। वह कभी सूत्रों का जीवन संबंध ही इतिहास को साहित्य बना है। आज हम इस तथ्य से भलीभांति परिचित है।

लेखक की प्रतिभा एवं विद्वता असाधारण हैं। इनके व्यक्तित्व की तरह कृतित्व भी बहुआयामी है। कहीं नायक के व्यक्तित्व के स्थान की कशमकश है, कहीं आत्मविस्तार की पिपासा, कहीं क्रूर सत्ता से आतंकित मानव आत्मा, कहीं आत्ममंथन है तो कहीं आदर्श परिकल्पनाओं का अभिंदय सुख भी है। कहीं निरंकुश सत्ता का उन्माद है। तो कहीं बंधक स्वाभिमान भी है। सौन्दर्य मिश्रित जीवन फलसफा है तो शैली वैविध्य की जीवतंता भी है।

-डॉ. मदन केवलिया
'प्रतिमा', सी-68, सादुलगंज, बीकानेर
फोन : 0151-2525363

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

भारतीय की अगुवाई में बना फ्लू का टीका

लंदन। एक प्रमुख भारतीय वैज्ञानिक की अगुआई में शोधकर्ताओं ने फ्लू का एक यूनिवर्सल वैक्सीन बनाने की दिशा में एक बड़ी सफलता हासिल की है। उनका दावा है कि यह टीका लोगों को हर किस्म के फ्लू से बचाने में कारगर होगा। शोधकर्ता दल के प्रमुख अजित लालवानी ने कहा कि हमें प्रतिरोधक प्रणाली के सटीक उपसमूह के बारे में पता है। हमने वायरस के अंदर पाये जाने वाले प्रमुख तत्वों की पहचान की है। इन्हें टीके में मिलाया जाना चाहिए। मौसमी यानी सीजनल फ्लू से हर साल 2.5 लाख से पांच लाख लोगों की मौत होती है। जबकि फ्लू के वायरस लगातार अपने प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बना रहे रहे, जिससे उन पर वैक्सीन बेअसर होने लगते है।

इन्फ्लुएजां वायरस टीकों को लगातार अनुपयोगी बनाते जा रहे हैं जिसकी वजह से हर साल नए टीकों की जरूरत होती है। इम्पीरियल कॉलेज, लंदन में कार्यरत प्रोफेसर लालवानी ने कहा कि हमें पता चल चुका है कि वैक्सीन में किन चीजों की जरूरत है और अब हम उसे बना सकते है। इस नई खोज के बारे में 'नेचर' मेडिसीन जर्नल में जानकारी प्रकाशित हुई है। अन्य तरह के टीकों की तुलना में यह टीका ज्यादा स्पष्ट नतीजे देगा। यह टीका प्रतिरोधक प्रणाली को फ्लू के वायरस का मुकाबला करने के लिए एंटीबॉडीज उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करेगा।

प्रयोगशाला में दिल का जीवित ऊतक

वॉशिंगटन। वैज्ञानिको ने पहली बार प्रयोगशाला में दिल के जीवित ऊतकों का निर्माण किया है। दरअसल, दिल की बीमारी से जूझ रहे लोगो के ऊतक कमजोर होकर टूटने लगते है। ऐसे में प्रयोगशाला में तैयार उत्तकजान बचाने में मदद कर सकते है।

वैक्यूम क्लीनर तकनीक से 12 मिनट में ब्रेन स्ट्रोक का इलाज

लंदन। मस्तिष्क घात (ब्रेन स्ट्रोक) जैसी खतरनाक बीमारी से जान बचाने के लिए ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने अत्याधुनिक तकनीक 'इंट्रा आर्टिअल थ्राम्बेक्टॉमी' (धमनी के जरिए रक्त का थक्का निकालने की तकनीक) विकसित की है। इसमें वैक्यूम क्लीनर जैसा यंत्र मस्तिष्क में जमा थक्के को निकाल देता है। वहीं इसमें सिर्फ 12 मिनट में थक्का शरीर से बाहर होता है और वह भी बिना किसी बड़ी सर्जरी के। शोधकर्ताओं का दावा है कि इससे हजारों जिंदगियाँ बचाई जा सकेंगी। शोधकर्ताओं के मुताबिक रक्त में जमे थक्के के चलते मस्तिष्क घात होता है। अभी नसों के जरिए दवा पहुंचा कर इसका इलाज किया जाता हैं।

अंतरिक्ष में यात्रियों की छोटे रोबो डॉक्टर करेंगे सर्जरी

वाशिंगटन: जल्द ही अंतरिक्ष यात्रियों के इलाज के लिये 'छोटा रोबो डॉक्टर' हमेशा उनके साथ होगा। नासा ने वर्जुअल इंसिशन कंपनी के साथ मिलकर यह रोबोट बनाया है। आकार में बेहद छोटे इस रोबोट का वजन मात्रा 400 ग्राम है। रोबोट अभी अपने प्रारंभिक स्वरूप में है।

न्यू साइंटिस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक दो छोटे-छोटे हाथों की मदद से यह रोबोट सर्जरी के लिए चीरे से लेकर टांके तक लगाने में सक्षम होता है। वही इसके सिर में लगा कैमरा धरती पर सर्जरी का लाइव वीडियों भेजता रहेगा। इससे धरती पर स्थित नियंत्रण कक्ष में मौजूद डॉक्टर सर्जरी को नियंत्रित कर सकेंगे। वहीं अंतरिक्ष यात्रियों को भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिससे नियंत्रण कक्ष से संपर्क टूटने पर भी वह अपने साथियों की सर्जरी कर सकें। शून्य गुरूत्वाकर्षण की स्थिति में रोबोट का परीक्षण अगले माह किया जायेगा।

पूरी दुनिया में फ्री इंटरनेट

वॉशिंगटन। हम सब को इंटरनेट की आदत पड़ चुकी, लेकिन हर महीने इसका बिल जेब पर भारी पड़ता है। परेशान मत हों, अगर सब कुछ योजना के अनुसार रहा तो अगले साल जून तक पूरी दुनिया में मुफ्त इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध होगी। यह संभव होगा ग्लोबल वाईफाई नेटवर्क 'आउटरनेट' के जरिए। संचार के क्षेत्र में काम करने वाली अमेरिकी कंपनी मीडिया डेवलपमेंट इंवेस्टमेंट फंड ने यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट तैयार किया है। आउटरनेट के लिए धरती की सबसे निचली कक्षा में सैंकड़ों छोटी-छोटी सेटेलाइटें लांच की जाएगी। ये सेटेलाईटे मिलकर ग्लोबल वाईफाई नेटवर्क का एक जाल बना लेगी। यह इंटरनेट सेवाओं धरती पर मौजूद एमडीआईएफ का सेंटर इन सेटेलाइट का डाटा देगी।

कबाड़ के सामान से बनाया थ्री डी प्रिंटर

कक्षा 11वीं के छात्र नील औंदिया का कमाल, 13 हजार का खर्चा, तीन महीने में किया तैयार

कोटा : 15 साल की उम्र और 11वीं कक्षा यानी स्कूल के दिन, खेलकूद, किताबें, और मस्ती। यही मस्ती अपने जुनून, किताबों, औजारों और मशीनों के साथ हो तो दूसरों से अलग हो जाते है। कुछ ऐसा ही काम किया है बजरंग नगर निवासी नील औंदिया ने। साइंस मैथ्स के इस छात्र ने थ्री डी प्रिंटर तैयार कर दिया। तीन महीने की मेहनत से मात्र 13 हजार रुपए की लागत से यह प्रिंटर के लिए ज्यादातर सामान कबाड़ का काम लिया गया। लकड़ी काटने से लेकर इलैक्ट्रॉनिक सर्किट भी खुद तैयार किए। इसके लिए नील को किसी ने मार्गदर्शन भी नहीं दिया। सारी जानकारी इंटरनेट के जरिए खुद प्राप्त की। घर में ही प्रयोगशाला बनाई। इससे पूर्व कक्षा आठ में ही कॉम्पेक्ट स्पीकर बना चुका है, इसके बाद लेजर ड्रिप वायर तैयार कर चुका है। फायर अलार्म और सफर के लिए मोबाइल चार्जर भी बना चुका है।

कम्प्यूटर लैब बदल दी : माँ वर्षा औंदिया और पिता देवेन्द्र गायत्री विहार में ही ब्राइटलैण्ड स्कूल संचालित करते हे। नील ने अपने जुनून का परिचय यहां भी दिया। स्कूल की कम्प्यूटर लैब में खुद ही नेटवर्किंग कर दी। सर्वर लगा दिया और डेस्कटॉप हटाकर हर मॉनिटर के पास एक बॉक्स लगा दिया। यहां एन नेटवर्किंग काम में ली। थ्री डी प्रिंटर में भी दो कम्प्यूटर को जोड़कर इन्हें टेबलेट से कनेक्ट किया हुआ है।

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

अलवर

रा.उ.मा.वि., डूमरोली में श्री सुबेसिंह यादव से पानी की टंकी गोल फरमों वाली लागत 50,000 रुपये, श्री सत्यवीर सिंह यादव (पूर्व सरपंच) से एक वाटर कूलर लागत 34,000 रुपये। **रा.जैन बालिका उ.मा.वि., कोटकासिम** को एस.बी.बी.जे. शाखा कोटकासिम से आर.ओ. भेंट, कक्षा 12 की छात्राओं द्वारा माइक सेट भेंट, श्री सद्रीक खान से एक दिवार घड़ी, दो रैंक प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., चूला (बानसूर)** को ग्रामीण सहयोग से 125 सैट स्टूल मेज लागत 1,65,000 रुपये और एक तखत लागत 3,000 रुपये, निदेशक सरस्वती ए.वी.एम. चूला से एक अलमारी डबल लॉक लागत 7,000 रुपये, श्री ओम प्रकाश जी से पानी की टंकी (1000 लीटर) एवं नल फीटिंग लागत 1,100 रुपये, डॉ. राजू चौधरी से माइक सैट एक तथा बैटरी लागत 3,100 रुपये, श्री फूलचन्द शर्मा से टीन सेट लागत 6,000 रुपये, निदेशक शेखावत पब्लिक स्कूल रघुनाथपुरा से नकद 1,100 रु.।

श्रीगंगानगर

रा.उ.प्रा.वि., बिरधवाल प.स. सूरतगढ़ को श्री ओम प्रकाश सुधार से एक साइन बोर्ड लागत 2,500 रुपये, श्री लियाकत अली से 15 कुर्सियाँ लागत 5,100 रुपये, श्री राजेन्द्र कुमार भांमू से 25 बेबी चेयर, 8 स्टूल प्लास्टिक लागत-7,100 रुपये, सर्व श्री रामचन्द्र थोरी, लियाकत अली, दुरजाराम सांसी, मनफूल राम थोरी राम कुमार से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1,500 रुपये, श्री पृथ्वी राज थोरी, श्री ख्याली राम थोरी, श्री अमर चन्द थोरी से 5 बेंच छोटे तथा 21 बेबी चेयर लागत 8,000 रुपये, श्री सीमेण्ट लिमिटेड उदयपुर द्वारा टंकी मय स्टेण्ड, ट्री गार्ड, श्री छगनलाल से एक लेजर प्रिण्टर लागत 5,800 रुपये, श्री शीलूराम से 2 बेंच बड़े तथा 10 प्लास्टिक स्टूल लागत 5,000 रुपये, श्री सुगना राम से 6 बेंच बड़े तथा 25 स्टूल प्लास्टिक लागत 15,000 रुपये, श्री लिच्छी राम से 4 बेंच बड़े तथा 20 स्टूल प्लास्टिक लागत 10,000 रुपये, श्री ओम प्रकाश मूण्ड से एक इनवेटर लागत 20,000 रुपये, श्री साहब राम (वार्ड पंच) से कक्षा-कक्ष मेज लागत 1,100 रु., श्री कादर खान (सरपंच) व पृथ्वी राज थोरी से 7-7 बेबी चेयर तथा प्रत्येक की लागत 1,100 रु., श्री आत्माराम थोरी, श्री इन्द्रसिंह राजपूत, श्री धनराज थोरी से 10 कुर्सियाँ लागत 3,000 रु., श्री परमानन्द थोरी, श्री शंकर लाल नायक से 01 एम्पीलीफायर स्पीकर, 2 माईक लागत 11000 रुपये।

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

हमारे भामाशाह

चित्तौड़गढ़

रा.बा.उ.मा.वि., स्टेशन को श्री भँवर लाल नागदा से 1,000 रुपये नकद, श्री देवी लाल लोधा से एक पंखा, श्री हिमांशु चन्द प्रकाश जैन से एक वाटर फिल्टर लागत 5,500 रुपये, श्री नवनीत प्रियंका नागौरी से एक वाटर फिल्टर लागत 5000 रुपये, एस.बी.बी.जे. सैंती चितौड़गढ़ से पाँच पंखे, श्रीमती रूपकँवर राणावत से 11,000 रुपये नकद, हिन्दुस्तान स्पोर्टस से 20 शब्द कोष, श्री चन्द्र प्रकाश जैन से 24 स्वेटर लागत 5,160 रुपये, श्री अनिल मेहता से 21 स्वेटर लागत 4,515 रुपये, श्रीमती उषा हींगड़ से 10 स्वेटर लागत 2,150 रुपये, श्री चाँदमल जी बोकड़िया से 28 स्वेटर लागत 6020 रुपये, श्री राजेन्द्र दोषी से 15 स्वेटर लागत 3,225 रुपये, श्री रघुवीर जैन से 10 स्वेटर लागत 2,150 रुपये, श्री ए.एल. जैन से 7 स्वेटर व 2 कम्बल, श्री जी.एल. पलोड़ से 30 कॉपिया व मोमेन्टो प्राप्त हुए। **रा.उ.प्रा.वि., जावदा-II पं.स. निम्बाहेडा** को जी.एस्ट्रो परिवार सिलवासा महाराष्ट्र शाखा निम्बाहेड़ा से 51 विद्यार्थियों हेतु ऊनी स्वेटर प्राप्त हुए।

हनुमानगढ़

रा.उ.मा.वि., डाबड़ी को अध्यक्ष डाबड़ी विकास फाउंडेशन डाबड़ी से 17 आलमारी स्टील लागत 70,000 रुपये, कुर्सी सोफेवाली नग 10 लागत 15,000 रुपये, 50 कुर्सी प्लास्टिक लागत 27,000 रुपये, 01 इनवेटर बेटरी सहित लागत 14,500 रुपये, एक कम्प्यूटर सैट लागत 28,600 रुपये, 02 लकड़ी की मेज लागत 10,000 रुपये 07 लेक्चर स्टेण्ड लागत 14,000 रुपये, 01 पानी की मोटर लागत 2,500 रुपये, 01 पानी फिल्टर मोटर लागत 10,500 रुपये, सेठ सुरेश कुमार अग्रवाल से 10 ओरियन्ट छत पंखे लागत 13,000 रुपये। **रा.मा.वि. बीड़ भादरा** को श्री रामस्वरूप बंशीलाल और भानीराम सुथार द्वारा 65,000 रुपये की लागत से प्याऊ का निर्माण करवाया गया। **रा.मा.वि., असरजाना नोहर** को ग्राम शिक्षा कमेटी ग्राम असरजाना द्वारा 50 फर्नीचर सेट विद्यार्थियों के लिए लागत 50,000 रुपये 15 कुर्सी लागत 7500 रुपये, अलमीरा 2 नग लागत 14,000 रुपये, 5 मेज सेट कक्षा-कक्ष हेतु लागत 7500 रुपये, 01 मेज कार्यालय हेतु लागत 4500 रुपये, एक कम्प्यूटर मेज लागत 4500 रुपये, 01 फुटबाल मैदान पोलनेट सहित लागत 18000 रुपये, 01 पोल खो-खो लागत 2000 रुपये, भारतीय स्टेट बैंक शाखा नोहर से एक कम्प्यूटर लागत 25000 रुपये, सर्व श्री लालचन्द धेतरवाल, सिद्धकरण कस्वां, भक्ताराम माली, मदन धेतरवाल, मदन गोपाल भाकर से प्रत्येक से वार्षिक व्यवस्था हेतु प्रत्येक से 5100 रुपये प्राप्त हुए, सर्व श्री देवीलाल गोदारा, कुरड़राम गोदारा, मैसर्स राधास्वामी इलैक्ट्रॉनिक्स असर गाना, ईश्वर धेतरवाल, रणसिंह थाकण से प्रत्येक से वार्षिक उत्सव व्यवस्था हेतु प्रत्येक से 2100-2100 रुपये प्राप्त हुए। मैसर्स धेतरवाल बीज भण्डार असरजाना से वार्षिक उत्सव व्यवस्था हेतु 2000 रुपये, श्री हेतराम धेतरवाल से टेन्ट व्यवस्था हेतु 2500 रुपये, श्री राम कुमार व श्री अमरसिंह धेतरवाल से साऊण्ड व्यवस्था हेतु 4000 रुपये, श्री राजकुमार धेतवाल से वार्षिक उत्सव व्यवस्था हेतु 1100 रुपये प्राप्त हुए।

PDF-XChange Viewer Click to buy NOW! www.docu-track.com

प्रतिवर्ष 5 सितम्बर का दिन भारत में एक उत्सव की तरह मनाया जाता है। इस दिन शिक्षक दिवस होता है। शिक्षक दिवस के अवसर पर न केवल विद्यालयों में अपितु समाज, शासन एवं संस्थाओं, सभी के स्तर से शिक्षकों के सम्मान में कार्यक्रम रखे जाते हैं। शिक्षक दिवस मनाए जाने की पृष्ठभूमि में अधिक विस्तार से जाना इसलिए जरूरी नहीं है कि शिविरा के सुधि पाठक भलीभांति जानते हैं कि भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन् ने अपना जन्मदिन, 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के रूप में समर्पित किया। यह बहुत बड़ी बात थी। डॉ. राधाकृष्णन् (1962-1967) की अवधि में हमारे राष्ट्रपति रहे थे। देश के राष्ट्रपति के शीर्ष पद पर रहने के दौरान अपने भीतर बैठे शिक्षक को निरत याद रखना और अपने जन्मदिन को समग्र शिक्षक समाज को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने के लिए राष्ट्र को अर्पित कर देना उन जैसे महान मनीषि का ही काम हो सकता है। उद्भट विद्वान, मौलिक चिन्तक, प्रखरवक्ता, सरस्वती के उपासक, माँ भारती के सपूत और इन सबके साथ एक विनम्र शिक्षक डॉ. राधाकृष्णन् को शिक्षक दिवस के अवसर पर यादकर उन्हें श्रद्धा सुमन भेंट करते हुए आदर्श शिक्षक बनने का संकल्प हमें लेना चाहिए।

शिक्षा के महत्व एवं उद्देश्यों के बारे में विचार करने पर निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि वास्तविक शिक्षा वह है जो जीवनपर्यन्त व्यक्ति के व्यक्तित्व में दिखायी देती रहे। विषय अथवा किसी कला कौशल के पारखी व्यक्ति का मतलब सम्बन्धित विषय अथवा कला कौशल तक ही सीमित रहेगा। मगर व्यवहार, चरित्र, अनुशासन, ईमानदारी, सहयोग की भावना, समन्वय की क्षमता, विनम्रता, नैतिकता, उदारता, सहनशीलता, आत्मविश्वास, सहिष्णुता आदि ऐसे गुण हैं जो सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को प्रभावित करने वाले हैं। विषय अथवा कला के कौशल की पढ़ाई आजीविकोपार्जन के लिए उपयोगी होती है, मगर आदर्श नैतिक गुणों की पढ़ाई हर जगह महिमा दिलाती है। इतना ही नहीं, स्वयं व्यक्ति को सुख व सुकून की अनुभूति कराने वाली होती है। विषय का ज्ञान, जब उसका अभ्यास कम हो जाता है, तब क्षीण पड़ने लगाता है, लेकिन गुणों का ज्ञान सदैव चमचमाता रहता है।

महाकवि कालिदास ने कहा है-

उपदेशंविदुः शुद्धं सन्तस्तमुपदेशिनः।
श्यामायते न युश्मासु यः कांचनमिवाग्निषु।।

(मालविकाग्निमित्र, 2/9)

श्रेष्ठ लोग शिक्षक की उस शिक्षा को ही शुद्ध कहते हैं जो आप लोगों के सम्मुख कभी काली नहीं पड़ती अर्थात दोषयुक्त नहीं पाई जाती जैसे अग्नि में कंचन काला नहीं पड़ता। यहाँ कालिदास कदाचित पुस्तकीय ज्ञान के समान्तर मानवीय गुणों-उत्तम नैतिक मूल्यों एवं सद्संस्कारों को शुद्ध शिक्षा कह रहे हैं जो कभी क्षीण नहीं पड़ती बल्कि दिन-दिन सवाई बढ़ सकती है।

शिक्षक दिवस के सन्दर्भ में बात करें तो आज के दिन भारत में सर्वोच्च स्तर से महामहिम राष्ट्रपति से लेकर राज्यों में महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं उनके मंत्रिगण और ग्राम व विद्यालय स्तर पर छात्र, अभिभावक सब शिक्षकों का यथायोग्य वन्दन-अभिनन्दन कर

प्रतिध्वनि

शिक्षक और शिक्षक दिवस

उन्हें सम्मानित करते हैं। इस सब के पीछे उनके प्रति आभार व अनुग्रह भाव छिपा होता है। शिक्षक वस्तु के नहीं मानव के सर्जक हैं। वे एक अच्छा इंसान रचते हैं और हर माँ-बाप अपने बच्चों को अच्छे इंसान के रूप में देखना चाहते हैं। शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहते हैं। वह यदि राष्ट्र निर्माता है तो व्यक्ति निर्माता पहले हुआ क्योंकि व्यक्तियों से ही राष्ट्र बनता है।

यहाँ मुझे अमरीका के महान राष्ट्रपति एब्राहिम लिंकन और ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल याद आ रहे हैं।चर्चिल ने विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की क्षमता को इस प्रकार व्यक्त किया था-Headmasters have powers at their disposal with which prime ministers have never yet been invested. (My Early Life/Chapter 2)

अर्थात प्रधानाध्यापकों के हाथों में वे शक्तियां हैं जो अभी तक प्रधानमंत्रियों को कभी मिल नहीं पाई है। अब बात राष्ट्रपति लिंकन की। उन्होंने अपने बेटे की स्कूल के प्रधानाध्यापक को एक बहुत ही भावपूर्ण पत्र लिखकर उनसे जो अपेक्षाएं कीं, वे आज भी हर अभिभावक की अभिलाषा है। कालिदास प्रतिपादित शुद्ध शिक्षा अवधारण को ही मान्यता प्रदान करते हुए लिंकन अपने बेटे के स्कूल प्रधानाध्यापक को उसे सत्य का मार्ग अनुसरण कर साधु चरित पुरुषोत्तम बनाने का अनुरोध करते हैं। मुफ्तखोरी से उसे बचाते हुए परिश्रम का पाठ पढ़ाने का कहते हुए लिंकन कहते हैं, 'पसीना बहाकर कमाया हुआ एक पैसा भी फोकट में मिले खजाने से ज्यादा मूल्यवान है।' संयम से रहने, ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहने, प्रकृति से प्रेम करने, आत्म विश्वासी बनाने, बेईमानी से बचने, सूझबूझ से काम लेने, कठिनाईयों से मुकाबला करने, न्याय पथ पर गमन करने, धैर्य व उत्साह को नहीं छोड़ने जैसी शिक्षाएं देने का निवेदन राष्ट्रपति स्कूल के प्रधानाध्यापक से करते हैं। भारत के राष्ट्रपति द्वारा अपना जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाने तथा अमरीका एवं ब्रिटेन के राष्ट्राध्यक्षों के उपर्युक्त बयान शिक्षकों की महिमा बताने के लिए कम नहीं है। ऐसे हजारों उदाहरण वैदिक व पौराणिक काल से लेकर आज तक सुनने देखने को आते हैं।

अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे अपनी उत्तम उच्च स्थिति को सदैव मस्तिष्क में स्थापित रखें। उन्हें अपने अध्ययन को निरन्तर जारी रखना चाहिए। डॉ. राधाकृष्णन् महोदय के कहे अनुसार उन्हें आजीवन विद्यार्थी बने रहना चाहिए। विद्यार्थी बने रहने का भाव उसकी शिक्षकीय प्रवीणता को बढ़ाने वाला होता है। शिक्षक दिवस पर सतत स्वाध्याय एवं शिक्षार्थी बने रहने का संकल्प हमें लेना चाहिए। शिक्षक की महिमा में रघुवीरशरण मिश्र के ये शब्द शिक्षकों को हृदयंगम करने चाहिए-

ऐसे सत्य सिखाना जग को, अनाचार जग से मिट जाए।/मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना, शाश्वत सत्य धरा पर जाए।।/ तुम भू के भगवान, तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं। / तुम अन्तर के माली, तुम से फूल जिन्दगी के खिलते हैं।।/ मैं भूलूँ पर न तुम मुझसे, भूलों पर उदास न होना।/तुम शिक्षक विद्वान, तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना।। तथास्तु, शिवम् भवतु, इत्यलम्। इति शुभम्

-ओमप्रकाश सारस्वत
Opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका मासिक/सितम्बर 2014 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक ओंकार सिंह, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : ओंकार सिंह।

मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 55 | अंक : 3 | सितम्बर, 2014 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

शिविरा, सितम्बर, 2014

चित्र समाचार

बांसवाड़ा

बालिका आत्म रक्षा योजनान्तर्गत राज.पुलिस तथा शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित पोस्टर का विमोचन करती माननीया मुख्यमंत्री।

उदयपुर

स्वाधीनता दिवस के राज्यस्तरीय समारोह में महाराणा भूपाल स्टेडियम में आत्म रक्षा का प्रदर्शन करतीं बांसवाड़ा जिले की छात्राएं।

मण्डावा (झुंझुनू)

विश्व जनसंख्या दिवस (11 जुलाई 2014) पर जागरुकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए प्रधानाचार्य।

नीम का थाना (सीकर)

पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत रा.बा.उ.मा.विद्यालय की गाइड एवं ईको क्लब प्रभारी स्टाफ व छात्राओं सहित पौधारोपण हेतु जाते हुए।

सवाई माधोपुर

रा.उ.मा. विद्यालय, सिनोली में 'बेटी पढ़ावो रे' अभियान चला कर बालिका नामांकन की प्रेरणा देता विद्यालय स्टाफ।

चूरू

लोक संस्कृति शोध संस्थान द्वारा 'सृजन से साक्षात्कार' कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री कुलदीप व्यास का अभिनंदन किया गया।

अब्राहम लिंकन का पत्र प्रधानाध्यापक के नाम

आदरणीय गुरुजी,

सभी आदमी न्यायप्रिय नहीं होते
होते नही सब सत्यनिष्ठ!
मेरा बेटा सीखेगा यह
कभी-न-कभी।
मगर उसे यह भी सिखाइए :
दुनिया में हर बदमाश की तरह
होता है एक साधुचरित पुरूषोत्तम भी।
स्वार्थी राजनैतिक होते हैं दुनिया में जैसे,
होते हैं उसी तरह पूरी जिन्दगी निछावर करने
वाले नेता भी।
होते हैं घात में बैठे दुश्मन अगर
तो मेहरबान मित्र भी होते हैं।

मैं जानता हूँ
सभी बातें झटपट नहीं सिखाते बनतीं....
फिर भी, हो सके तो उसके मन में जमाइए
'पसीना बहाकर कमाया हुआ एक पैसा भी
फोकट में मिले खजाने से ज्यादा मूल्यवान है।'
सिखाइए उसे कैसे झेलते हैं हार
और सिखाइए, जीत की खुशी में संयम।
अगर आपमें ताकत हो तो
सिखाइए उसे
ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहना।
सिखाइए उसे
अपना हर्ष भी संयम से दिखाना।

कहना, गुंडो से मत डर जाना,
क्योंकि सबसे आसान होता है
उन्हें झुकाना।

जितना बन पड़े दिखाया कीजिए उसे किताबों
में छिपा अद्भुत खजाना,
पर साथ-ही-साथ
दीजिए उसके जी को जरा फुरसत
कि सृष्टि की सनातन सुन्दरता महसूस कर पाए।
देख पाए वह

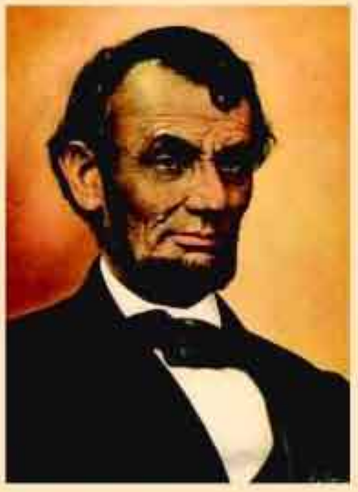

चिड़ियों की ऊँची उड़ान...
सुनहली धूप में मँडराते भौंरे...
और हरीभरी पहाड़ी की ढलान पर
झूमते नन्हें-नन्हें फूल।

पाठशाला में उसे सबक मिले:
'बेईमानी से पाई सफलता से
हजार अच्छी है
असफलता।'

यह सिखाइए कि
अपने विचारों और अपनी सूझ-बूझ पर
पक्का विश्वास रखे,
भले ही सब लोग उसे गलत ठहराएँ।
वह भलों के साथ भलाई बरते और
टेढ़ों को सबक सिखाए।

मेरे बेटे को विश्वास दीजिए कि
विजय के झंडे के नीचे खड़े होने को दौड़ती
भीड़ में
शामिल न होने का साहस जुटाए।
और यह भी समझाइए उसे
कि सुने सबकी, हर एककी....
पर छान ले उसे सत्य की चलनी में,
और छिलका फेंककर
ग्रहण करे विशुद्ध सार।

बन पड़े तो उतारिए उसके मन में:
'हँसते रहो हृदय का दुख दबाकर।'
कहिए कि आँसू बहाते शरमाए नहीं वह...
सिखाइए उसे,
ओछेपन को ओछा मानना
और चाटुकारी से सावधान रहना।

उसे पक्की-पूरी तरह समझाइए कि
खूब कमाई करे ताकत और अक्ल की लागत से,
लेकिन कभी न बेचे अपना हृदय, अपनी आत्मा।
धिक्कारती हुई आती है भीड़ अगर,
तो अनदेखा करना सिखाइए उसे,
और लिखिए उसके हृदय पर
जो सत्य जान पड़े, न्यायोचित लगे
उसकी खातिर धरती में गड़ाकर पाँव लड़ता रहे
अंत तक।

उसे ममता दीजिए मगर
लाड़ करके मत बिगाड़िए।
आग में जल-तपकर निकले बिना
लोहा मजबूत फौलाद नहीं बनता।
उसे आदत डालिए कि
अधीर होने का धीरज सँजोए,
और धीरज से काम ले वह
अगर दिखानी है बहादुरी...
हमें विश्वास चाहिए स्वयं का मजबूत
तभी जमेगी उदात्त श्रद्धा मनुष्य जाति के प्रति।

क्षमा कीजिए गुरुजी,
मैं बहुत बोल रहा हूँ,
बहुत-कुछ माँग रहा हूँ...
फिर भी देखिए... जितना बने, कीजिए जरूर।

-एब्राहम लिंकन

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity408/2014-16 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● सितम्बर, 2014 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2014 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

गौतमेश्वर महादेव

प्रतापगढ़ जिले की अरनोद उपखण्ड मुख्यालय से 3 किमी. दूर कांठल के हरिद्वार की संज्ञा प्राप्त गौतमेश्वर नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ स्थल है। यह स्थान अध्यात्म, प्रकृति और संस्कृति का त्रिवेणी संगम है। इस स्थान के प्रति श्रद्धालुओं की अनन्य आस्था है। यहां निर्मित मंदिर का अपना गौरवशाली अतीत और शिल्पगत सौन्दर्य देखते ही बनता है। गिरिगुहा में स्थित मंदिर की दिव्य आभा दृष्टि को अपलक बांध लेती है तो भीतर की अलौकिक अनुभूति से चित्तानन्द की अविरल सरिता प्रवाहित करने लगता है। यहाँ का नैसर्गिक सौन्दर्य प्रकृति और मानव के बीच अटूट रिश्ते का पाठ पढ़ाता जान पड़ता है। इस स्थान के प्रति मेवाड़, मालवा एवं वागड़ के असंख्य श्रद्धालुओं की सदियों से चली आ रही आस्था आज भी कायम है। श्रावण मास तथा प्रति वर्ष वैशाखी पूर्णिमा पर भरने वाले विशाल वार्षिक मेले में जनमेदिनी उमड़ती है। इसके अलावा वर्षपर्यन्त भी यहां तीर्थ यात्रियों की रेलमपेल बनी रहती है।

पावस काल में इस स्थान की खूबसूरती अपने चरम पर होती है। जलप्रपात से झरने वाली जलराशि से इन्द्र देवता यहां विराजमान भगवान आशुतोश का स्वयं अभिषेक करते अनुभव किये जा सकते हैं। आध्यात्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी गौतमेश्वर तीर्थ अप्रतिम है।

सौजन्य : प्रकाश पंड्या, बांसवाड़ा-327 001 मो. 9414101857